नहुष

(चार नाटक)



सुतीक्ष्ण कुमार शर्मा 'आनंदम'

नाम : सुतीक्ष्ण कुमार शर्मा 'आनंदम'

माता-पिता : श्रीमती दुर्गा देवी तथा पं० भोलानाथ शास्त्री कविराज

जन्म तिथि/स्थान : 17 अप्रैल 1939, जम्मू (जम्मू-कश्मीर)

शिक्षा : एम. ए. (अंग्रेज़ी), प्रभाकर, बी. एड।

व्यवसाय : राजकीय शिक्षा विभाग में अध्यापन-कार्य से 30 अप्रैल 1997 को सेवा-निवृत्त।



सुतीक्ष्ण कुमार शर्मा 'आनंदम'

संप्रति : स्वतंत्र लेखन तथा सलाहकार संपादक हिंदी मासिक 'चंद्रभागा संवाद'।

लेखन : 1958 में 'कल्याण' गोरखपुर में पहली कहानी 'ऋण मुक्ति' प्रकाशित। अब तक लगभग एक सौ से अधिक नाटकों, नाटिकाओं, संगीत रूपकों और अन्य फीचरों का रेडियो से समय-समय पर प्रसारण तथा अनेक रंग नाटकों यथा 'सांझे मंच पर (पगला)' 'हाँ पिता जी' 'मगर यह सच है' इत्यादि का मंचन।

गतिविधियां : 1964 से 1966 तक हिंदी साहित्य संगम, जम्मू की स्थापना एवम् इसके मंत्री के रूप में सक्रियता।

1966 से 1972-73 तक हिंदी साहित्य मण्डल जम्मू की स्थापना एवम् इस के मंत्री के रूप में सक्रियता।

1978-79 जम्मू व कश्मीर भाषा संस्थान जम्मू की स्थापना एवम् इसके संचालक के रूप में सक्रियता।

1987-88: जे एंड के अकैडमी ऑफ आर्ट कल्चर एंड लैंग्वेजिज़ की हिंदी के लिए परामर्शदात्री समिति का सदस्य

पुरस्कार : 1975-76 रेडियो कश्मीर जम्मू द्वारा 'गीत' पुरस्कृत

1976: **'नौका का इतिहास'** जे एंड के (अकैडमी ऑफ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजिज़ द्वारा पुरस्कृत कविता संग्रह)

1983-84 : केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार द्वारा नाटक संग्रह **'आखरी पन्ने'** पुरस्कृत।

1984-85 जे एंड के अकैडमी ऑफ आर्ट कल्चर एंड लैंग्वेजिज़ द्वारा नाटक संग्रह **आखरी पन्ने** पुरस्कृत।

1987 : महानिदेशालय, आकाशवाणी दिल्ली द्वारा आयोजित अखिल भारतीय नाटक लेखन प्रतियोगिता में डोगरी नाटक **'सच्चा दे सरिस्ते'** पुरस्कृत।

1988 अकैडमी ऑफ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजिज़ द्वारा हिंदी नाटक पांडुलिपि **'हां पिता जी'** पुरस्कृत

1995 : डोगरी अनुसंधान **गजल नमें छन्द** के लिए जे एंड के अकैडमी ऑफ आर्ट कल्चर एंड लैंग्वेजिज़ द्वारा 'बैस्ट बुक अवार्ड'।

सम्मान : 14 सितम्बर 1989 - 'हिंदी दिवस समारोह आयोजन समिति' जम्मू द्वारा सम्मानित।

14 सितम्बर 1994 : जम्मू व कश्मीर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा सम्मानित।

संपर्क : 402-अंबफला, जम्मू (तवी) – 180 005

नहूष

(चार नाटक)

ख्यातनाम कवि तथा लेखक
भाई डॉ० रतनलाल शांत
[redacted] को
सादर अवलोकनार्थ

सुतीक्षण कुमार शर्मा 'आनंदम'

साक्षर प्रकाशन

402–अम्बफला, जम्मू, (जम्मू–कश्मीर) 180 005

NAHOOSH

Four Plays by

Suteekshan Kumar Sharma 'Anandam'

सर्वाधिकार	:	लेखक
प्रथम संस्करण	:	दिसंबर 2002
मूल्य	:	एक सौ पचास रुपए
आवरण	:	सु० कुमार शर्मा 'आनंदम'
मुद्रक	:	क्लासिक प्रिंटर्स, बाड़ी ब्राह्मणां, जम्मू (तवी) फोन : (951923) – 220243, 222871

समर्पण

जम्मू-कश्मीर के वयोवृद्ध
वेदाचार्य, साहित्यकला विद्यालंकार शताब्दिरत्न
हिंदी साहित्यकार
डॉ० गंगादत्त शास्त्री 'विनोद'
जी को

सूची

कृपया इन नाटकों के मंचन की लिखित सूचना लेखक को अवश्य दें। अन्य संदर्भों के लिए अनुमति प्राप्त करना एक शिष्टता है।

नहूष

लेखन : 1985

पात्र

महेंद्र
नहूष
नारद
बृहस्पति
त्रिदेव (संयुक्त एक भी हो सकता है, तीन भी)
सप्तर्षी
अगस्तय
दूत
एक
दो
शची
तारा
देवांगना
रंगबाला
: आवश्यकतानुसार

(अलौकिक संगीत के साथ यवनिका के सामने मंच के अग्रभाग पर दिव्य प्रकाश फैल कर देव लोक-पथ का वातावरण प्रस्तुत करता है।)

नारद : **(एक ओर से प्रवेश)** नारायण, नारायण ! नारायण, नारायण!!

बृहस्पति : **(दूसरी ओर से प्रवेश। नारद को देखकर सौम्य हंसी के साथ)** नारायण, नारायण! **(पास रुक कर)** देवर्षी आप?

नारद : ब्रह्मनिष्ठ गुरुदेव बृहस्पति करें स्वीकार, नारद का नमस्कार!

बृहस्पति : नमस्कार!

नारद : सम्भवतया हैं जा रहे गुरुदेव, देवराज महेंद्र के हां?

बृहस्पति : निः संदेह, देवर्षी!

नारद : किंतु...

बृहस्पति : किंतु ...? किंतु क्या देवर्षी?

नारद : नारायण, नारायण!

बृहस्पति : कहें देवर्षी! किंतु...?

नारद : हैं देवराज इस समय रंगशाला में लीन, डूबे हुए रंग-लिप्सा में!

बृहस्पति : आश्चर्य नहीं कोई इसमें!

नारद : नारायण, नारायण!

बृहस्पति : अच्छा! तो मैं चलूं!

नारद : नारायण, नारायण! **(प्रस्थान करते हुए हुए कुछ दूरी से बृहस्पति को मुड़ कर देखते हुए)** नारायण, नारायण! **(प्रस्थान)**

बृहस्पति : **(हंस कर)** माया है विचित्र, देवर्षी नारद की। गुप्तदूत की नाईं विचर जाते हैं तीन लोक में। रखते है सुधि दसों दिशाओं की। पलछिन का समाचार पहुंचाते हैं, पलछिन में यहां वहां। **(प्रस्थान)**

(अलौकिक संगीत इत्यादि के विलीन होने के साथ-साथ यवनिका उत्थान। शची के साथ अपनी रंगशाला में बैठे महेंद्र अप्सराओं द्वारा नृत्य का आनंद लेने में मग्न हैं। नृत्य के चलते बीच बीच में शची तथा महेंद्र का कभी मुग्ध अभिनय कभी संवाद)

शची : (**मुग्ध**) अद्‌भुत! अद्‌भुत!!

महेंद्र : (**पर्यवेक्षित**) है प्रभावित भार्या, विशेष रूप से आज! क्यों शची?

शची : (**सहमति**) निश्चय ही, नाथ! देवांगना के नृत्य में हूं देख रही आज एक अलौकिक प्रभाव!

महेंद्र : (**सौम्य हंसी**)

शची : (**मुग्ध**) अद्‌भुत! हां, अ़दभुत!

महेंद्र : (**गर्व के साथ**) प्रमुखतम संगीतकार, दिव्य वाद्ययंत्र हों पास जिसके; उच्चतम श्रेणी की दैवी शक्तियां हों अधीन जिसके, साधनों पर ऐश्वर्य के हो जिसका पूर्ण अधिकार....परम सक्षम उस देवराज महेंद्र की भार्या शची को न होंगे दर्शन अलौकिकता के तो होंगे फिर किसको?

शची : (**मुग्ध हंसी**)

महेंद्र : समस्त देवादिदेवों के नरेश, देवराज महेंद्र की इंद्रपुरी यह, अनुपम है अपने इन्हीं गुणों के लिए।

(नृत्य हो रहा है)

शची : (**सहसा**) देखें! देखें नाथ! नृत्य की यह मुद्राएं हैं कितनीं कमनीय! कितनी भावपूर्ण! उत्तेजक उत्तेजना पा रही है संचार इनसे।

महेंद्र : निःसंदेह! अतिः सूक्ष्म! अतिः आकर्षक! अतिः मादक!

(नृत्य हो रहा है)

शची : (**मुग्ध**) अहा...हा...!

महेंद्र : (**मुग्ध**) उत्तम...अति उत्तम!

(नृत्य अपनी पूरी गति में। बीच बीच में महेंद्र की मुग्ध हंसी।)

शची : (**मुग्ध**) अहा...हा...!

(सहसा नृत्य रुकता है। मौन छा जाता है।)

क्यों?...क्या हुआ?...रुक क्यों गई देवांगना? क्यों थम गए वाघ्य?

(मौन में नपे तुले कदमों से बृहस्पति का प्रवेश)

महेंद्र : (**हतप्रभ**) रुक गई तुम, सुख छूने को था जब चरमसीमा?

नाचो देवांगना! नाचो हमारे लिए! हमारी शची के लिए! नाचो! नाचो देवांगना!

(बृहस्पति यथोचित पास आ रहे हैं)

शची : **(साश्चर्य)** गुरुदेव?

महेंद्र : **(मदांध)** बृहस्पति? इस समय? हमारी रंगशाला में?

बृहस्पति : **(रुष्ट)** हां! मैं ही हूं, महेंद्र! डूबे हुए तुम रंग में, जान रहे हो, उपेक्षणीय, मेरे आगमन को? **(लघु विराम)** इस समय आना मेरा, भला नहीं लगा तुम्हें? (लघु विराम) भूल गए तुम राजगर्व में नियम मान मर्यादा के? जा रहा हूं मैं! **(तुरंत प्रस्थान की मुद्रा)**

शची : **(विनीत पुकारती है)** गुरु दे..व! गुरदेव! **(बृहस्पति का प्रस्थान)**

महेंद्र : **(मदांध)** नृत्य हो आरम्भ फिर से! नाचो, देवांगना!

शची : **(करुण)** नाथ! रुष्ट प्रतीत होते हैं गुरूदेव! की है आपने उपेक्षा उनकी जिसे जाना उन्होंने अपमान-स्वरूप! घोर अपमान-स्वरूप! **(द्रवित)** भूल की बहुत! बहुत भूल की है।

महेंद्र : भूल? सो भी हम ने की है? असम...भव!

शची : हां, नाथ! देखी नहीं क्या आपने, तीक्ष्णता वाणी की उनकी? अवलोकी नहीं छाया क्रोध की उनकी आंखों में?

महेंद्र : कुछ भी कहो! भूलती हो क्यों कि भार्या हो तुम किसकी? **(आदेश)** देवांगना! नृत्य हो आरम्भ फिर से! नाचो, नाचो देवांगना!

(नृत्य शुरु हो कर गति में आता है। शचि अशांत मुद्राओं को तथा मेहंद्र मदांध अवस्थाओं को प्राप्त है।)

लघु विराम

नारद : **(प्रवेश)** नारायण, नारायण! नारायण, नारायण!

(सहसा नृत्य थम जाता है। मौन छा जाता है)

नारायण, नारायण!

महेंद्र : देवर्षी नारद? आप?

नारद : हां, देवराज! आया हूं करने सचेत आपको! घोर पाप किया है आपने!

शची : (धक सी) घोर पाप?

नारद : हां, देवी शची! कुछ ही समय पूर्व, आए थे यहां ब्रह्मनिष्ठ गुरुदेव बृहस्पति!

शची : आए थे, अवश्य!

नारद : किया नहीं स्वागत उनका, देवराज ने! हुए नहीं खड़े आगमन पर उनके। हटाया नहीं ध्यान देवांगना के नृत्य से। हां, देवी शची!

महेंद्र : **(स्वाभिमान से)** रंगशाला, रंगक्रिया, नृत्य लीला। सब हैं देवराज महेंद्र की शोभा, देवर्षी। अधीन रहे नहीं हम कभी किसी के। झुका नहीं मस्तक हमारा कभी समक्ष किसी के। हुए न खड़े हम आगमन पर ब्रह्मनिष्ठ गुरुदेव के तो क्या हुआ? हम स्वर्ग-नरेश हैं आखिर!

नारद : होती है परिलक्षित यहीं तो आपकी भूल, देवराज महेंद्र!

महेंद्र : भूल, और हमारी? असम्भव!

नारद : नारायण! नारायण! गुरुपद तो है अतिः महान! धर्म, तप, सत्य इत्यादि किसी भी पुण्य से महान!

महेंद्र : अतिः महान...धर्म, तप, सत्य इत्यादि किसी भी पुण्य से महान?

नारद : निः संदेह, देवराज!

शची : देवर्षी!

महेंद्र : हैं किंतु भूल रहे आप। इन्द्रलोक है यह।

नारद : नरेश हैं आप, शासक हैं इसके। किंतु न भूलें यह कंदापि...शासक है शासक तब तक, जब पालन करने में प्रजा का, देने में अन्नधन और सुविधाएं अन्य हो सामर्थ्य। ज्ञानी हो, करने का पूज्य-जनों का सम्मान।

महेंद्र : आपके कथन का आशय?

नारद : गुरू... **(हल्की हंसी के साथ)** नारायण, नारायण! गुरू होते है प्रत्येक दशा में सहायक अपने शिष्यों के। मार्ग-दर्शक होते हैं। गुरू तो होते हैं शिष्यों के शासक जन्म-जन्मों से। जन्म-जन्मों से शिष्यों के शासक होते हैं गुरू। गुरू से बढ़कर नहीं कोई तीन लोक में।

महेंद्र : (आत्मग्लानि मिश्रित) बस करो, बस करो। बस, बस देवर्षी, बस!

नारद : नारायण, नारायण!

महेंद्र : किंतु दिया नहीं है शाप भी तो गुरुदेव ने?

नारद : है यह प्रमाण आपके प्रति उनके स्नेह का, देवराज! क्रोध के रहते भी रहे वह मौन। किंतु...

शची : किंतु क्या, देवर्षी?

नारद : ब्रह्मनिष्ठ गुरुदेव बृहस्पति रहे मौन, निस्संदेह। तथापि हुआ है देवराज से, अपमान जो गुरुदेव का, उससे वे...

शची : (अधीरता से) शीघ्र कहें, देवर्षी। उससे वे...

नारद : अवश्य हुए हैं ब्रह्महत्या के भागी!

महेन्द्र : ब्रह्महत्या के?

शची : (धक-सी) ब्रह्महत्या के भागी?

नारद : हां, देवी शची!

शची : अकारण!

नारद : कारण और अकारण का नहीं प्रसंग। जाने अनजाने भी, निर्बोध अवस्था में भी गुरु की उपेक्षा, गुरू का अपमान कहाती है।

महेन्द्र : देवर्षी?

नारद : आप बालक तो नहीं हैं, देवराज महेन्द्र! (प्रस्थान करता है) ना-रा-यण, ना-रा-यण। नारा-यण, ना-रायण!

(नारद के प्रस्थान के साथ ही शचि और महेंद्र संगीत प्रभावों के साथ अपनी चिंतित भाव भंगिमाएं प्रदर्शित करते हैं)

महेन्द्र : (कुछ पल स्थिर मौन के उपरांत) शची?

शची : सुनाना यहां की बातें वहां, वहां की बातें यहां। फैलाना भरम जाल, उत्पन करना भरम। बहकाना, भड़काना, भटकाना, स्वभाव पुराना है देवर्षी का। हे नाथ...

महेन्द्र : नहीं, भार्या शची! बोल रहे थे देवर्षी, भाषा वेदों की।

देवांगना : (धीमे-धीमे पायल के स्वर के साथ पास आकर) महाराज!

महेन्द्र : कहो देवांगना!

देवांगना : कितने ही कार्य आपके किए हैं सिद्ध इस सेविका ने। कितनों के किए हैं तप भंग। आपके विरुद्ध रचे गए कितने ही षड़यन्त्र, किए हैं बिफल। मेरे लिए आज्ञा कहें महाराज! सेविका कर सकती हो यदि उपाय कोई। धन्य हो जाऊंगी मैं। स्वयम् को जानूंगी भाग्यशाली!

महेन्द्र : देवांगना! इस भांति गुरूदेव का, होगा यह और अपमान। नहीं जानती तुम गुरू हमारे ब्रह्मनिष्ठ बृहस्पति को।

देवांगना : क्षमा, महाराज!

महेन्द्र : जाओ तुम!

देवांगना : जो आज्ञा महाराज! **(जाने लगती है।)**

महेंद्र : रुको देवांगना। **(रुकती है)** प्रस्तुत करो नृत्य कुछ ऐसा, कल्पना की ऐसी सीमा में ले जाए मुझे जो, जहां मैं...मैं न रहूं। विस्मृति का सागर हो उमंड रहा।

देवांगना : परं...तु महा...राज?

महेन्द्र : परन्तु कुछ नहीं, देवांगना। नृत्य आरम्भ करो।

देवांगना : जैसी आज्ञा, महाराज।

(नृत्य शुरू होता है)

महेन्द्र : **(कुछ समय बाद)** शची! पल पल बढ़ती जाती है अशांति मेरे मन की। **(लघुविराम)** शची!

शची : **(कुछ परे खड़ी से हाथ के इशारे के साथ संबोधन** रंग बालाओ। सोमरस।

(रंगबाला पास आकर सुराही से चषक भरती है) लाओ, मुझे दो। **(चषक लेकर महेन्द्र से)** यह सोमरस लें, नाथ।

महेन्द्र : **(अशांत)** सोमरस! **(दीर्घश्वास)** इसका भी न होगा कोई लाभ।

शची : दो घूंट भर।

महेन्द्र : जैसी इच्छा तुम्हारी।

शची : **(महेंद्र के मुंह के पास चषक ले जाती हुई)** नाथ!

महेन्द्र : बोलो!

शची : देखी नहीं जा रही यह अशांत दशा आपकी।

महेन्द्र : **(अशांत)** शची...।

शची : देवांगना कह रही थी ठीक ही। करना ही चाहिए उपाय कोई। (**लघु विराम**) हां, नाथ। हां! उपा...य...

महेन्द्र : उपाय? उपाय ब्रह्महत्या से मुक्ति का?

शची : हां, नाथ।

महेन्द्र : भार्या शची! विदित नहीं हो पा रहा कुछ भी मुझे। नष्ट हो गई लगती है मनन शक्ति मेरी। (**श्वास**) क्या हुआ था तब मुझे?

शची : नाथ!

महेन्द्र : हूं।

(**ध्वनि-विहीन नृत्य**)

शची : नाथ?

महेन्द्र : भार्या शची!

शची : ब्रह्मा, विष्णु, महेश...। सदा सुनी है त्रिदेव ने आपकी। विनीत होते क्यों नहीं उनसे आप? अवश्य करेंगे वे उपाय कोई।

महेन्द्र : भार्या!

शची : रचयिता समस्त सृष्टी के, पालक एवम् संहारक कृपानिधान। वे त्रिदेव करेंगे अवश्य ही उपाय कोई। विनीत हों आप उनसे।

महेन्द्र : (**एक ओर**) मैं तब डूब चुका था क्यों, रंगकर्म में इतना? क्यों हो गया मुझ से अपमान गुरुदेव का? धनी सर्वविधाओं के, स्वामी सर्वसुखों के, भण्डार सर्वसम्पदाओं के ब्रह्मनिष्ठ गुरुदेव बृहस्पति का क्यों हो गया अपमान मुझ से?

यों तो बात है बहुत छोटी-सी। किन्तु महत्व इसका? मद राज सत्ता का इतना भी क्या भला? (**दीर्घ श्वास**) ब्रह्महत्या। आह! ब्रह्महत्या।

शची : नाथ! मनन कर रहे हैं कुछ? सोच रहे हैं?

महेन्द्र : कह रही हो तुम ठीक ही। ब्रह्मा, विष्णु, महेश करेंगे अवश्य ही उपाय कोई। चलें उन्हीं की शरण!

शची : चलें। अविलम्ब चलें।

महेन्द्र : त्रिदेव शरणम् गच्छामी!

शची महेन्द्र : (**एक साथ**) त्रिदेव शरणम् गच्छामी। त्रिदेव शरणम् गच्छामी!

(**दोनों का प्रस्थान**)

अलौकिक प्रकाश से झिलमिलाता वातावरण उभरता हैं जिसमें डमरू और शेषनाग की फुंकारों के स्वर मुख्य हैं। एक ओर ब्रह्मा विष्णु महेश एक साथ खड़े हैं अथवा इनकी प्रतीक प्रकाश की रश्मियां मंच को अलौकिक बना रही हैं।

महेन्द्र तथा शची : (एक साथ प्रवेश एवम् स्तुति गायन)

त्वं ब्रह्मा सृष्टिकर्ता च
त्वं विष्णु परिपालकः।
त्वं शिवः शिवदऽनन्तः
सर्व संहार कारकः॥
त्वमीश्वरो गुणातीतो
ज्योतिरूपः सनानतनः।
प्रकृति प्रकृतीशश्च
प्राकृतः प्रकृतेः परः॥
ओं त्रिदेवाय नमः, ओं त्रिदेवाय नमः
ओं त्रिदेवाय नमः।

(डमरू और शेषनाग की फुंकारों के स्वर उभर कर फैलते हैं। फिर पृष्ठभूमि में जारी रहते हैं।)

त्रिदेव : (सौम्य हंसी के साथ) देवराज महेन्द्र तथा शची? यहां?

महेन्द्र शची : दया! दया! दया करें त्रिदेव!

त्रिदेव : ब्रह्मनिष्ठ गुरुदेव बृहस्पति के अपमान फलस्वरूप, ब्रह्महत्या का पाप ही है कारण, आगमन का आपके, देवराज महेन्द्र!

महेन्द्र : अवश्य ही करें उपाय कोई, हे त्रिदेव!

शची : मुक्त करें मेरे स्वामी को, ब्रह्महत्या के पाप से, हे त्रिदेव।

महेन्द्र : आप करुणानिधान।

शची : दयानिधान।

महेन्द्र : पतित-पावन!

शची : दीनबन्धु!

महेन्द्र : अपने प्रियजनों के रक्षक!

शची : हैं दीनानाथ। हमारी रक्षा करें हे त्रिदेव!

त्रिदेव : देवराज महेन्द्र! खेद हैं हमें भारी। असमर्थ हैं हम। कर नहीं सकते सहायता आपकी।

महेन्द्र शची : दया त्रिदेव! हे त्रिदेव।

त्रिदेव : उत्तम है गुरुपद, हम सब के पद से। अतः भोगना ही है आपको फल गुरु के अपमान का।

शची : भोगना ही है?

त्रिदेव : अवश्य! चेतन अवस्था की क्या कहें, अचेतन अवस्था में भी यदि करता हैं कोई उपेक्षा गुरु की, लेशमात्र भी करता हैं अपमान गुरु का, निश्चित है उसके लिए पाप ब्रह्महत्या का।

शची : हे त्रिदेव! कृपा से आपकी मुक्त हो जाता है व्यक्ति प्रत्येक पाप तथा प्रत्येक भय से। राज्यभ्रष्ट को मिल जाता है राज्य। कारागार में, श्मशान में, रिपुओं के घेरे में। सब स्थान में, सब काल में आप करते हैं कल्याण अपने प्रियजनों का। बचाएं मुझे पहुंचने से दीन दशा में, मोचन करें मेरे स्वामी के पाप। हां, कृपा निधान! कृपा करें।

महेन्द्र : नहीं चाहिए निराशा मुझे आपके द्वार से, हे त्रिदेव!

त्रिदेव : अपनी असमर्थता पर हो रहा है खेद हमें। क्षीण हो जाती हैं हमारी शक्तियां समस्त, गुरुपद के समक्ष। है एक ही मार्ग आपके हित अब।

महेन्द्र : (उत्सुक) शीघ्र कहिए, हे त्रिदेव!

शची : (उत्सुक) कौन है वह मार्ग करुणा निधान!

त्रिदेव : ब्रह्महत्या का पाप भोग।

(डमरु और शेषनाग की फुंकारों के स्वर उभर कर फैलते और विलीन होने लगते हैं। इनके विलीन होने के साथ साथ त्रिदेव प्रस्थान करते हैं और अलौकिक वातावरण आलोकिक हो जाता है।

अवाक खड़ी शची धीरे-धीरे शिलावत हो जाती है। महेंद्र मानसिक छटपटाहट झेल रहे हैं।

महेन्द्र : उत्तरदायी है मेरी इस गति की, रंगकर्म के प्रति मेरी आसक्ति ही। बह गया क्यों मैं इतना कि बचा न सका स्वतव को डूबने से? मुक्तामणियों से, नवरत्नों से सजा धजा यह राज सिंहासन, लालसा गंधर्वों और देवांगनाओं के कलामय प्रदर्शन की, साधन एवम् सुविधाएं समस्त ऐश्वर्य की...हा! हुई यह

सब मेरे घोर पाप का कारण! (**रुआंसा हो जाता है।**) ब्रह्मनिष्ठ गुरुदेव बृहस्पति! रोम रोम जिनका मुझ मूढ़ पर करता है स्नेह की वर्षा। बनाता है मुझे राजकाज के योग्य। और करता है काम कवच का हर विपत्ति में मेरी रक्षा करने का। आज (**रो उठता है**) आज हो गया मुझ से अपमान उन्हीं का? जब न कर सकते उपाय कोई ब्रह्मा, विष्णु महेश तो कौन गति है मेरी? ब्रह्महत्या का पाप भोगना ही है मुझे? बिन भोगे मुक्ति कहां मेरी? है कौन-सा ठौर सकल विश्व में जहां ग्रस नहीं सकती ब्रह्महत्या मुझे? कोई नहीं...कोई नहीं...।

नारद : (**प्रवेश**) ना-रा-यण, ना-रा-यण। नारा-यण, नारायण।

महेन्द्र : देवर्षी आप :

नारद : नारायण, नारायण! देवराज महेन्द्र का तनबदन है इस शीतकाल में भी स्वेदकणों से भीगा-भीगा? अचरज!

महेंद्र : (**करुण**) उपहास न करें देवर्षी! ब्रह्महत्या से रक्षा का कहें उपाय कोई।

नारद : स्वामी सर्व सम्पदाओं के, धनी सर्व साधनों के, बातों ही बातों में पुरुषार्थी कर्ण के कवच कुंडल एंठने वाले देवादि देवराज महेन्द्र चाहते हैं इक तार वाले इस ब्रह्मचारी से रक्षा का उपाय? नारायण, नारायण।

महेन्द्र : (**विनीत**) देवर्षी!

नारद : त्रिलोकी पर महाराज, करें दृष्टिपात!

महेन्द्र : (**रुआंसा**) क्षीण हो चुकी हैं समस्त शक्तियां मेरी, दुर्बल हो चुके हैं समस्त साधन मेरे, अंधी हो चुकी हैं आंखें मेरी। यदि सामर्थ होती मुझ में त्रिलोकी पर दृष्टिपात की, तो क्यों जाता चूक राजसभा में ब्रह्मनिष्ठ गुरुदेव बृहस्पति का करने से सत्कार? हां! क्यों जाता मैं चूक?

नारद : नारायण, नारायण।

महेन्द्र : ब्रह्महत्या से बढ़ कर भी है कोई पाप?

नारद : देवराज़ महेन्द्र की आंखों में अश्रु? स्वर में रोदन?

महेन्द्र : तुरत कहें देवर्षी! कौन गति है मेरी?

नारद : मानसरोवर के कमल-नाल में बास! भारत वर्ष में है मानसरोवर, भगवान् विष्णु का सरोवर! पुण्यमय तीर्थ। तपस्वियों के तप का है स्थान श्रेष्ठ।

महेन्द्र : मा-न सर-रो-वर! भारत वर्ष में!

नारद : मान सरोवर के कमल-नाल में ब्रह्महत्या कर नहीं सकती प्रवेश! जा कर करें उसी में बास।

महेन्द्र : कमल-नाल में ब्रह्महत्या कर नहीं सकती प्रवेश?

नारद : नि:संदेह, महेंद्र!

महेन्द्र : (शांत) आभार! आभार हे देवर्षी! आपका आभार! अपार आभार...!

नारद : (जाते जाते) ना-रा-यण! ना-रा-यण। नारायण! नारायण!

(दूसरी ओर से महेंद्र का प्रस्थान कुछ समय बाद शची शिलावत स्थिति से लौटती है। महेंद्र को वहां न पाकर चिंतित-सी पुकारती हुई प्रस्थान करती है। हवा की सांय सांय तथा राजहंसों इत्यादि के स्वरों से गुंथा हुआ मान मानसरोवर का वातावरण प्रस्तुत होता है। महेंद्र तुरंत यहां आकर आशातीत-से नतमस्तक हो जाते हैं।)

महेन्द्र : (नतमस्तक) पुण्यमयी भारत भू पर, हिमगिरी की गोद में, हिमशिलाओं से घिरे हे मानसरोवर! आपके दर्शन मात्र से छट गया मेरी आंखों का धुंधलापन। दिव्य दृष्टि मिल गई मुझको जैसे। नील कण्ठ, भूतनाथ, व्याधेश्वर, त्रिपुरारी शंकर भगवान की छाया निर्मल, झिलमिला रही जो भीतर आपके, देख रहा हूं मैं स्पष्ट उसे अंग प्रत्यंग।

विराजमान शेष छैया पर सर्वशक्ति सम्पन्न, सर्व सम्पदा-भण्डार लक्ष्मी नारायण एवम् विराजमान उनकी नाभी के कमलासन पर ब्रह्मा जी के कर रहा हूं साक्षात दर्शन! मैं धन्य हुआ।

(शंख ध्वनियां इत्यादि उभर कर पृष्ठभूमि में चली जाती हैं)

नाचते थिरकते आपके तट पर हैं कर रहे केली राज हंस और हंसियां, चुग रहे मोती। दूर दूर तक भर रहे उड़ानें, मना रहे मोद। बन रहे आपके मस्तक की शोभा।

धन्य है भारत भूमि! गोदी में इसकी प्रभामय हैं आप माला के मुख्य मनके की नांईं। बारम्बार प्रणाम आपको! हे मानसरोवर, बारम्बार प्रणाम!

(हवा की सांय सांय, राजहंसों की उड़ानों और जल की लहरों के मीठे मीठे झोंके)

हे मान सरोवर! देवराज कहलाने वाले, ब्रह्महत्या के भागी, इस महेन्द्र को अपने कमलनाल में आश्रय प्रदान की करें कृपा। चिर-ऋणी रहूंगा आपका।

(शंख इत्यादि ध्वनियों के साथ जल की लहरों के उभरने और राजहंसों वगैरा के स्वर। महेन्द्र जल में उतरता हुआ।)

आभार! आ-भा-र! आपने दिया मुझे कमलनाल में आश्रयदान। हे मानसरोवर आपका आभार!

(राजमहल का वातावरण)

दूत : **(प्रवेश)** महाराज की जय हो!

नहूष : क्या समाचार लाए हो दूत?

दूत : ठीक ही सुना है महाराज ने। देवराज महेन्द्र का सिंहासन खाली है।

नहूष : **(कहकहा लगा कर)** आ गया है समय। पूरी होगी बरसों की साध हमारी। इन्द्रलोक के सिंहासन पर आरूढ़ होंगे हम। हां दूत! **(कहकहा)**

दूत : समस्त भारतवर्ष में है प्रतिष्ठित कीर्ति आपकी। जाने जाते हैं आप महाराज धर्मात्मा हरिभक्त नरेश के रूप में। हैं विद्यमान आपमें सभी गुण और योग्यताएं कि कर सकें इन्द्रासन अपने अधीन। हां, महाराज!

नहूष : **(कहकहा)**

दूत : हां, महाराज!

नहूष : तो जाओ मनाओ मंगल। **(लघुविराम)** रुको! है तुम्हें विश्वास कि योग्य हैं हम इन्द्रासन के?

दूत : अटल विश्वास, महाराज!

नहूष : **(एक ओर)** नीति! हां, नीति। हमें लेना होगा निस्संदेह काम नीति से। करेंगे हम अपने तपोबल का प्रयोग। खिंचा चला

आएगा सिंहासन स्वयमेव हमारी ओर। **(हंसता हुआ)** स्वयम्-एव खिंचा चला आएगा, इंद्रासन हमारी ओर!

दूत : आप हैं महान, महाराज!

नहूष : जाओ दूत! विचारेंगे हम एकान्त में। हां। हो यदि कोई विचित्र बात, सूचना देना तुरन्त। समझे?

दूत : जो आज्ञा महाराज। **(प्रस्थान)**

नहूष : तपोबल ही से लेना होगा काम। **(ध्यान लगाता है)** हे मेरे आराध्यदेव! कृपा से आपकी हो पूरी, कामना मेरी, बरसों की। हरि ओम ! हरि ओम!

(हरि ओम का स्वर ईको में चलता रहता है। कुछ समय बाद इन स्वरों के साथ दैवी संगीत उभरता है।)

दूत : **(प्रवेश)** महाराज की जय हो!

नहूष : **(दो तीन बार 'हरि ओम' के बाद)** कहो, दूत! लाए हो कोई समाचार?

दूत : स्वर्ग के प्रमुख देवगण बढ़े आ रहे हैं हमारी ओर।

नहूष : **(खुश)** क्या? फिर कहो?

दूत : हां, महाराज! स्वर्ग के प्रमुख देवगण बढ़े आ रहे हैं हमारी ओर।

नहूष : **(प्रसन्नता सूचक भावभंगिमाओं के साथ हंसता है।)**

दूत : पुष्पहार एवम् मणी-मानक से भरे थाल हैं उनके हाथों में।

नहूष : हम देख रहे हैं **(हंसने के बाद गम्भीर)**
जाओ दूत! खोल दो सभी द्वार। जो आए भीतर उसे आने दो और बने रहो कि कुछ जानते ही नहीं। **(लघु विराम)** जाओ।

दूत : जो आज्ञा महाराज! **(प्रस्थान)**

नहूष : **(सहर्ष एकालाप)** पूरा उतरा आज तपोबल मेरा। पूरी हुई आज बरसों की कामना मेरी। जन्म जन्म की अराधना मेरी। **(हंसी)** देवराज महेन्द्र का सिंहासन! अहा...अहा...!
(पृष्ठभूमि से देवगणों की मुनमुनाहटें) पहुंच ही रहे हैं सब। **(मुनमुनाहटों के दौरान जाप)** हरि ओम! हरि ओम!
(जारी)

एक : (प्रवेश) धर्मात्मा हरिभक्त नरेश नहूष ध्यान मग्न हैं, इस समय।

दो : प्रतीक्षा करनी होगी जाप की पूर्ति तक।

एक : अवश्य।

(मुनमुनाहटें)

नहूष : (**कुछ समय तक 'हरि ओम, हरि ओम' जारी रखने के पश्चात**) देवगण? यहां? मृत्यूलोक में? भारत वर्ष की भूमि पर?

एक : धर्मात्मा हरिभक्त नरेश नहूष को हों देवताओं की ओर से मंगल कामनाएं स्वीकार।

नहूष : मंगल हो मंगल। देवता करें स्वीकार प्रणाम हमारा।

सभी : प्रणाम! प्रणाम!

नहूष : अहोभाग्य मेरे कि कृतार्थ हुआ मैं कर आपके दर्शन। किन्तु यहां तक आए आप, कहिए प्रयोजन!

दो : गत कुछ दिनों से अज्ञातवास में हैं देवराज महेन्द्र! सिंहासन उनका पड़ा है रिक्त।

नहूष : हूं...।

एक : अतः है अनुरोध हमारा....

दो : कृपा कर करें स्वीकार आसीन होना उस पर।

नहूष : इस योग्य कहां हम? पराक्रमी, पुण्य प्रतापी प्रभु रूप महाराज महेन्द्र का सिंहासन कर सकें स्वीकार!

एक : समस्त देवताओं का है निर्णय यही।

नहूष : हरि ओम। हरि ओम!

दो : विलम्ब न करें महाराज! पूर्व इसके कि राक्षस-वृत्ति कोई हो जाए तत्पर, षड़यंत्र रचे कोई इंद्रासन के लिए...'हां' कहदें आप।

नहूष : समस्या! बिकट समस्या!

सभी : है कामना सब की, यही। 'हां' कहदें आप।

नहूष : (**मनन**) हरि ओम! हरि ओम! (**कुछ पल बाद**) यदि है आराध्यदेव की इच्छा यही। स्वीकार है मुझे सर्वसम्मत निर्णय आपका।

एक	:	धर्मात्मा, हरिभक्त नरेश, देवराज, स्वर्गपती नहूष महाराज की?
सभी	:	जय!
एक	:	आइए महाराज! सर्व देवादि देव, देवांगनाएं, गंधर्वगण एवम् अप्सराएं कर रही हैं प्रतीक्षा स्वर्ग में आपके स्वागत के लिए!
सभी	:	चल कर बढ़ाएं शोभा सिंहासन की। आइए। आइए महाराज।
नहूष	:	हरि ओम! हरि ओम! जैसी आराध्य देव की इच्छा। चलिए।
दो	:	**(पुष्पवर्षा के साथ)** मंगलमय हो नवराज काज।
सभी	:	मंगलमय हो नव राज काज!
		(धीरे धीरे सभी का प्रस्थान। इसी बीच पृष्ठभूमि से नृत्य संगीत इत्यादि के स्वर। तदोपरांत यवनिका। यथासंभव सितारों से झिलमिलाता आकाशगंगा का दृश्य।)
नहूष	:	**(अकेला दृश्यावलोकन करता हुआ)** कितना मधुर! कितना सुखद है वातावरण, आकाश गंगा का। अति सुंदर। मनोहर! मात्र सुना ही था अब तक। देख भी लिया। प्रकट रूप में। वाह! वाह री आकाश गंगा! समस्त संगीत एवम् समस्त कलाओं पर है आधिपत्य देवराज महेन्द्र का, समझता था मैं यही। पर...**(सहसा)** पर अहा...! समस्त सौंदर्य की रूपसी...कमनीय कामिनी...इस एकांत में है यह कौन? बिखरी बिखरी केश राशि, तन बदन निढाल, आंचल ढला न ढला, अवाक मुद्रा, स्थिर नयन। विरह वियोग की मारी हो जैसे। आकाश गंगा के सुरम्य वातावरण में बिखेरती अपनी प्रभा...है कौन यह? मृगलोचिनी, गौरवर्णा, रक्त कपोलिनी, गुम्फित, सुगठित कमनीय तन्वङ्गी तनु तनिमा, सुकेशिनी यह कौन है? कौन है यह काम प्रवाहिणी?
शची	:	**(दुख द्रवित एकालाप)** हे नाथ! क्यों लेते नहीं सुध मेरी आप? दुष्कर हुआ जाता है पल पल मेरा, अभाव में आपके। हिम में जम रही हूं जैसे। अग्नि-आतप में जल भुन रहा है तन बदन मेरा जैसे। आप को रहा नहीं मेरा स्मरण? नहीं रहा? कहां हैं आप?

नहूष : (ध्यान से देखता है) अवश्य ही यह भार्या है महेन्द्र की!

शची : (एकालाप) आओ हे कृपानिधान! बांध लो नेह पाश में अपने, अभागी इस शची को अपनी!

नहूष : (सम्बोधन) शची...? (लघुविराम) शची...? (लघु वराम) शचो...?

शची : (चौंक कर) कौन? नहूष?

नहूष : (आसक्त) स्वर्ग का अधिपति, नरेश नहूष।

शची : हो रहा है आकाश गंगा विहार?

नहूष : हां, मोहिनी शची! करते करते विहार, हो उठा है कामातुर यह नहूष आपके रूप सौंदर्य एवम् तरुणा वस्था से घायल।

शची : महाराज नहूष?

नहूष : जिस नेह पाश की, अज्ञातवासी महाराज महेन्द्र से कर रही हैं आप असफल कामना, बांधने की उसी नेह पाश में आपको, हो रही है मेरी इच्छा।

शची : आपका संवाद ऐसा मुझ से है अशोभनीय। न भूलें कि स्वर्ग में राजा के पद पर हैं प्रतिष्ठित, आप।

नहूष : राजा हूं। तो ही कर रहा हूं आग्रह विनय से।

शची : राजा किया करता है प्रजा के भय का भंजन। प्रजाजनों का पालक पिता रूप होता है वह।

नहूष : (खीझ से) शची...?

शची : गुरु पत्नी, देव पत्नी, पुत्र वधु, राज पत्नी, मौसी, बूआ, शिष्य पत्नी, भृत्य पत्नी, मामी, पिता की पत्नी, भाई की पत्नी, सास, बहिन, बेटी, गर्भधारिणी तथा इष्ट देवी। पुरुष की हैं ये सोलह माताएं वेदों के अनुसार। हो तुम मनुष्य। और मैं देवता की पत्नी। वेदों की सम्मति से कहलाती हूं माता तुम्हारी।

नहूष : विभूषित रत्नमय अलंकारों से, बात करती हो जब अरी कोमलांगी शची, मानिकों की भांति बिखेरते प्रभा, तुम्हारे रजतमय दंत देते हैं मात आकाश गंगा के इन तारागनों को, व्याप्त हैं जो उत्तर से दक्षिण की ओर।

शची : (बिलाप) जाने कौन घड़ी थी? बंधी थी कौन सी पट्टी, आंखों पर देवताओं की। मुर्चा लग गया था बुद्धि को उनकी सौंप दिया तुमको स्वर्ग का सिंहासन। कैसे हो धर्मात्मा तुम? है कैसी हरिभक्ति तुम्हारी?

नहूष : सिंहासनारूड़ हुआ हूं तपोबल से अपने। निस्संदेह आए थे देवता स्वयम् आग्रह लेकर पदभार सौंपने का। तो भी मान लेना चाहिए आपको अनुरोध मेरा।

शची : प्रकट करो अपनी इच्छा ऐसी, मां अदिती के समक्ष। कर सकती है वही उपाय कोई। किन्तु रहे स्मरण : पृथ्वी, आकाश, पाताल में नहीं उद्धार मातृगामियों का। कुम्भीपाक ही कुम्भीपाक है उनके लिए।

नहूष : हे सुर सुंदरी शची! करें आप निराश मुझ को।' है अशोभनीय। प्रकट करना आसक्ति किसी के प्रति शुद्ध मन से। पालन करना उसका सहज रूप में, नहीं अपराध कोई।

शची : (एक ओर) न जाने सुनने पड़ेंगे मुझ को अपशब्द कितने, दुष्ट कामातुर, विवेकशून्य मूढ़ पुरुष के? (संबोधन) प्रबल प्रतीत होता है हठ तुम्हारा। यदि करना ही है ग्रहण मुझे, रुक जाओ चार दिवस। कट जाने दो मेरी अपवित्रता के दिन। यों बनोगे ब्रह्महत्या और गौ हत्या के भागी।

नहूष : बनाती क्यों हैं इस नरह मुझे। देवरमणी तो होती है पवित्र सदा।

शची : पूजा, पाठ, हवन यज्ञ एवम् समस्त पुण्य कर्मों के योग्य नहीं रहोगे जीवन भर।

नहूष : (एक ओर) जाएगी भी कहां, अपने कक्ष के अतिरि्क्त? पहुंच जाऊंगा वहीं मैं अवसर मिलते।

शची : सोच रहे हैं, क्या नहूष?

नहूष : (आश्वस्त-सा) आपकी जैसी इच्छा! छोड़ दिया लें, मार्ग आपका मैंने। जाएं कक्ष में अपने, करें विश्राम!

शची : (जाती हुई) घोर पाप से बच गए हो, बेटा! (प्रस्थान)

नहूष : घोर पाप से बच गए हो, बेटा! घोर पाप से! (गर्व से कहकहे लगाता हुआ) पहुंचे तो कक्ष में अपने!

(**शची का भवन**)

नहूष : (**शची को तलाश करता हुआ बीच बीच में खीझ उठता है**) हूं, यहां भी नहीं।...यहां भी नहीं...। शायद वहां होगी। यहां भी नहीं तो कहां होगी?...हूं! (**एक जगह रुक कर व्याकुल सा**) शची नहीं कक्ष में अपने कहीं भी! गई कहां? कहा था, 'करें विश्राम। जा सकती है कहां? (**अभिमान से**) हूं! (**दीर्घ श्वास**) वशीभूत न कर लूंगा जब तक शची को, मिल नहीं सकता चैन मुझे। परन्तु है कहां? अहां...हां...! (**पुकारता है**) शची! शची..! श..ची...! शची...!

नारद : (**प्रवेश**) ना-रा-यण, ना-रा-यण। ना-रा-यण नारायण!

नहूष : (**शची के ध्यान से लौटता हुआ**) देवर्षी नारद! आंप?

नारद : बुद्धि से काम लें, महाराज।

नहूष : बुद्धि से?

नारद : देखें दूर दृष्टि से।

नहूष : अभिप्राय?

नारद : अभिप्राय? अभिप्राय स्पष्ट है महाराज!

नहूष : कहें तो!

नारद : शची हैं पहुंचीं इस समय ब्रह्मनिष्ठ गुरुदेव बृहस्पती के आश्रम में।

नहूष : देवर्षी?

नारद : ना-रायण, नारायण, नारायण, नारायण (**प्रस्थान**)

(**अपने आश्रम में बृहस्पति जाप में लीन हैं। वहीं तारा किसी काम में व्यस्त है**)

बृहस्पति : (**जाप में लीन**) ओम नमो भगवते वासुदेवाय! (**जप जारी**)

तारा : (**अचम्भे में**) शची, तुम? इस समय यहां?

शचि : गु...गु...रु देव...। गुरुदेव।

तारा : आ पड़ी है विपत्ति कोई अवश्य!

शचि : गुरु देव...!

तारा : इस समय हैं देव आराधना में. प्रयोजन है क्या? बोलो।

बृहस्पति : (**ओं ओं उच्चारण करते हुए बृहस्पति जाप से उठ कर**) कौन? आई है बेटी, शची!

शचि : **(भयभीत)** त्राहिमाम, गुरुदेव! त्राहिमाम!

बृहस्पति : धीर धरो, बेटी।

शचि : अज्ञातवास में है मेरे पति!

बृहस्पति : सो जानते हैं, हम।

शचि : करें अपने क्रोध से मुक्त उन्हें। मैं...मैं...हो गई हूं अपाहज। हूं अरक्षित, गुरुदेव।

बृहस्पति : अवश्य हैं संकेत कुछ अनिष्ट के। निस्संकोच कहो, बेटी।

तारा : हां, हां। कहो। निस्संकोच कहो।

शचि : कुदृष्टि है मुझ पर महाराज नहूष की। संचार है पाप का उनकी बुद्धि में।

तारा : नीच है इतना वह? करें उपाय कुछ, हे नाथ।

शचि : गुरुदेव करें रक्षा मेरी।

बृहस्पति : रहो इस आश्रम में सुरक्षा से। कच की पत्नी जैसी पुत्रवधु मेरी, वैसी तुम भी हो।

शचि : करें अपने क्रोध से मुक्त। ब्रह्महत्या के पाप से करें मुक्त मेरे स्वामी को, गुरुदेव।

तारा : और अधिक दुःख सह न पाएगी, शची। प्रार्थना इसकी, हे नाथ, करें स्वीकार।

बृहस्पति : मैं हूं परिचित, शची की धर्म परायणता, मर्यादा और सत्य प्राक्रम से। प्रसन्न हूं इसकी आस्था और विश्वास से।

तारा : क्यों नहीं तब...

बृहस्पति : पाप मुक्त करने का देवराज महेन्द्र को देता हूं वचन मैं।

शची : **(खुशी मिला रुआंसापन)** गुरुदेव को मेरा प्रणाम!

बृहस्पति : अखंड सौभाग्यवती भव!

तारा : सौभाग्य का सुख, नाथ?

बृहस्पति : दिया है वचन, महेन्द्र को करने का पाप मुक्त! **(शची से)** जाओ बेटी! निर्भय करो विश्राम! तब तक करेंगे हम उपाय कोई। जाओ।

तारा : आओ बेटी! **(तारा और शची का प्रस्थान)**

बृहस्पति : **(टहलते हुए इधर उधर देखकर)** ओम नमो भगवते वासुदेवाय **(बार बार)**

दूत : प्रणाम गुरुदेव!

बृहस्पति : आशीर्वाद! यहां कैसे आज?

दूत : है महाराज नहूष का संदेश, गुरुदेव!

बृहस्पति : कहो।

दूत : उत्कट इच्छा है उनकी। भेज दें शचि को राज्य प्रासाद में।

बृहस्पति : न भेजें, तब?

दूत : महाराज नहूष का है संदेश यही।

बृहस्पति : **(चिंतन)** ओम। ओम। ओम...

दूत : कहें, गुरुदेव!

बृहस्पति : कहो महाराज से प्रतिबंध हमारा। रत्नमय आभूषणों से हो सजी धजी शिविका। गुथे हुए हो मनि मानक उसमें। उठाई हुई हो सप्तऋषियों ने कांधों पर अपने। बैठ कर उसी में, आएं नहूष। भेज देंगे शचि को हम।

दूत : जो आज्ञा महाराज! **(प्रस्थान)**

'ओम नमो भगवते वासुदेवाय' जपते हुए बृहस्पति का प्रस्थान)

(चिंतित नहूष अपने भवन के आंगन में टहलता हुआ मौन सोच रहा है।)

नहूष : समस्या रखी है वृहस्पति ने घोर कठिन तो भी पूर्ति के लिए करेंगे भरसक यत्न। नमन करो स्वीकार, हे सप्तऋषि। स्वीकार करो नमन। **(ध्यान मग्न हो कर जाप)** ओम सप्त ऋषये नमः। **(इसी बीच तेज़ हवाएं, बादलों की गर्जन, बिजली की चमक इत्यादि दर्शाई जा सकती है। सप्तऋषियों के प्रकट होने का अलौकिक प्रभाव। वातावरण शांत हो जाता है।**

सप्तऋषि : उठो नहूष। देखो! **(लघु विराम)** देखो नहूष! खींच लाई है हमें भक्ति तुम्हारी।

नहूष : **(आंखें खोल उठकर नमन करता हुआ)** आ...प....! कृतार्थ हुआ मैं पा कर दर्शन आपके। धन्य हुआ मैं।

सप्तऋषि : मांगो वर। जो चाहो मांग ल़ो मनवांछित।

नहूष : मनवांछित।

दुर्बासा : वचन हुआ हमारा।

नहूष : जाएंगे ब्रह्मनिष्ठ गुरुदेव बृहस्पति के आश्रम में। उठाएंगे कांधों पर अपने, शिविका मेरी। लाना है शचि को।

सप्तऋषि : **(एक दम बिकल)** नहूष ?

नहूष : है नहीं यह आदेश मेरा। निवेदन है, महाराज!

सप्तऋषि : **(विकल)** निवदेन ? मान-मर्यादा से हीन, यह निवेदन कैसा ?

नहूष : **(विनीत)** है यह इच्छा, ब्रह्मनिष्ठ गुरूदेव बृहस्पति की, महाराज। मेरी नहीं। मैं तो मात्र हूं इच्छा का एक पूरक।

सप्तऋषि : ओम..ओम...ओम...।

नहूष : शिविका उठाएंगे महाराज!

सप्तऋषि : **(स्वगत)** यह कैसी परीक्षा हमारी। घोर दुविधा!

अगस्तय : **(खीझ कर)** दुर्मति हुए हो तुम, नहूष!

नहूष : मनवांछित फल देने का वचन भी तो है, आपका।

सप्तऋषि : नि:संदेह।

नहूष : तो उठानी ही है शिविका, आपको।

सप्तऋषि : **(विकल)** मांग लो सात लोकों का राज्य। धन मांग लो कुबेर का। ऐश्वर्य मांग लो सृष्टि का। किन्तु...कहो न हमसे शचि को लाने के लिए। चाहो न हमसे निकृष्ट कर्म। **('चाहो न हम से निकृष्ट कर्म' यह वाक्य कुछ बार अनु गुंजित होता है अथवा दोहराया जाता है)**

नहूष : यह शर्त नहीं मेरी। है ब्रह्मनिष्ठ गुरूदेव की और फिर वचन आप का।

('और फिर वचन आपका'-यह वाक्य कुछ बार अनुगुंजित होता है अथवा दोहराया जाता है)

सप्तऋषि : **(विवश)** शिविका प्रस्तुत की जाए।

नहूष : मैं स्वयम् करता हूं शिविका तैयार। सजाता हूँ रत्नमय आभूषणों से। गूंथता हूं मणि-मांनक से। और करता हूं प्रस्तुत आपके समक्ष, महाराज। **(प्रस्थान)**

नारद : **(प्रवेश)** नारायण, नारायण, नारायण! जिन सप्तऋषियों को करती है सृष्टि प्रणाम। वे उठाएंगे कांधों पर अपने शिविका नहूष की?

सप्तऋषि	:	हम वचन दे चुके हैं, देवर्षी।
नारद	:	और जाएंगे शचि को लाने के लिए? सम्पन्नता के लिए, अनिष्ट कार्य की? **(हंस कर)** धन्य है, धन्य है लीला, मेरे नारायण की। **(ऊपर देखकर)** धन्य हो प्रभु।
सप्तऋषि	:	**(लज्जा भाव से)** न करें अपमानित हमें, देवर्षी! वचन दे चुके हैं हम!
नारद	:	नारायण, नारायण!
सप्तऋषि	:	**(जिज्ञासा)** देवर्षी! अनेक सिद्धियों के धनी! आकाश के निवासी, यशस्वी, पराक्रमी त्रैलोकी में....हो गए हैं हम विवश इतने, बाध्य हो गए हैं उठाने के लिए शिविका निकृष्ट कार्य हेतु। तो क्या गति होती है उन धरती पुत्रों की, घिरे रहते हैं जो पल पल छिन छिन अनेक आधि व्याधियों से।
नारद	:	नारायण, नारायण! नारायण, नारायण! **(प्रस्थान)** **(नहूष के पीछे पीछे कुछ सेवक सजी धजी शिविका उठाए हुए आते हैं। शिविका रख कर सेवकों का प्रस्थान)**
नहूष	:	**(शिविका में बैठकर)** शिविका उठाएं, सप्तऋषि! और चलें, ब्रह्मनिष्ठ गुरुदेव बृहस्पति के आश्रम की ओर।
सप्तऋषि	:	**(शिविका उठाते हुए)** नारायण, नारायण **(उठा कर 'नारायण नारायण' उच्चारते हुए चल देते हैं। मार्ग पर चलने की भांति मंच पर ही चक्कर काटते हैं)**
नहूष	:	**(एकालाप)** कर दी पूरी, नहूष ने पूरी कर दी, शर्त आपकी, गुरुदेव बृहस्पति! सप्तऋषियों को बना कर वाहन, आ रहा हूँ मैं। होना नहीं चाहिए विलम्ब अब, शची को भेजने में। **(शिविका उठाए हुए हिचकोलों के साथ 'नारायण, नारायण' शब्द। कुछ समय बाद)** आज शची मिल जाए तो धुल जाए शोक जन्म-मरण का। **(चलने के हिचकोले वगैरा)** यह उत्तम समय! नवरत्नों से सजी धजी शिविका और उत्तम वेशभूषा मेरी। **(आसक्त हंसी)** निश्चय ही होगा आज भोग शची का। अहा-हा...श...ची। श..ची...। **(चलने के हिचकोले वगैरा)** होगी शची आज मेरी बाहों में। अहोभाग्य! **(अचानक)** परन्तु...ये

वाहक शिविका के क्यों चल रहें हैं, धीरे धीरे। **(सप्तऋषियों से)** सप्तऋषियो! चल रहे हो क्यों धीरे धीरे, देते हो क्यों हिचकोले कुबड़ों की भांति। नहीं मालूम क्या ? तुरत पहुंचना है हमें। चलो। सर्प गति से चलो।

अगस्तय : **(क्रोध से)** मूढ़मति, हे महाराज नहूष! है भ्रष्ट हो गई बुद्धि तुम्हारी। देता हूं में शाप तुम्हें। बन जाओ सर्प तुम्हीं। गिर पड़ो शिविका से। रहो भटकते। **(शाप)** सर्पम् भव!

नहूष : **(हतप्रभ)** क्षमा! क्षमा! क्षमा महर्षि! कर दें क्षमा मुझे। लौटा लें अपना शाप!

अगस्तय : अटल है शाप मेरा।

नहूष : **(कुछ मौन के बाद)** नि:संदेह भ्रष्ट हो गई थी बुद्धि मेरी। ग्रस लिया था पाप ने। हो गया था अंधा काम वासना से। पतित हो गया था आचरण मेरा। शापग्रस्त कर सकते हैं आप तो शाप-मुक्त भी कर सकते हैं। कृपा करें महाराज! कृपा करें।

अगस्तय : **(तनिक मौन के बाद दया-भाव)** शाप तो रहेगा शाप ही। भोगना उसका, टल नहीं सकता।

नहूष : **(गिड़गिड़ाता है)** महाराज!

अगस्तय : कर सकता हूं उपाय, अवश्य।

नहूष : **(विकल)** उपाय? मात्र उपाय?

अगस्तय : जब तक न होंगे दर्शन तुम्हें, धर्मराज युधिष्ठर के, रहना होगा तुम्हें, सर्प ही के रूप में।

नहूष : नहीं, महर्षि नहीं। क्षमा कर दें मुझे। क्षमा। क्षमा।

('क्षमा क्षमा' बार बार शब्द के साथ नहूष गर्दन नीचे कर के सर्पाकार टोप कंधों तक पहन लेते हैं। सर्प की फफकारों के साथ गर्दन उठाते हैं। बीन की धुन के साथ सबका प्रस्थान।)

(बृहस्पति के आश्रम का एक भाग

पक्षियों की कलरव ध्वनियों से चहचहाते अपने आश्रम के एक भाग में बृहस्पति दिखाई दे रहे हैं।)

नरद : **(प्रवेश)** नारायण, नारायण! नारायण, नारायण!

बृहस्पति : **(सरल सौम्य)** लगता है, लाए हैं कोई शुभ समाचार।

नारद : **(हंसता हुआ)** भली प्रकार जानते हैं, ब्रह्मनिष्ठ गुरूदेव बृहस्पति। नारद के हैं क्या क्या काम। समाचार देना, समाचार लेना। पहूंचाना यहां की सूचना वहां और वहां की यहां। करना समय समय पर सब चेत।

बृहस्पति : और लाए हैं आज कौन-सा समाचार, देवर्षी ?

नारद : है कार्य कर गई आपकी युक्ति। महेंद्र को मिलने वाली है शाप-मुक्ति।

बृहस्पति : अर्थात् ?

नारद : गिर गए नहूष अपने ही खोदे गर्त में, यो फंस जाता है मकड़ा स्वनिर्मित जाल में। सप्तर्षियों के शाप से भोगनी है उन्हें सर्प-योनि।

बृहस्पति : जब तक न होंगे दर्शन उन्हें धर्मराज युधिष्ठर के, रहेंगे तब तक यों ही इसी रूप में।

नारद : **(तनिक झेंप के साथ)** पहूंच गया है यह समाचार आप तक ?

बृहस्पति : **(तनिक हंस कर)** पवनगति के संग। सुन लिया है सबने।

नारद : माता शचि ने भी ?

बृहस्पति : परख लेते हैं अभी।

नारद : नारायण, नारायण !

बृहस्पति : **(पुकारता है)** शची...! बेटी शची!

शची : **(प्रवेश, खुश)** गुरूदेव। **(तनिक हंसी)**

बृहस्पति : प्रसन्न दिखाई दे रही हो, बेटी ?

शची : **(खुशी से गद गद)** हैं आप धन्य, गुरुदेव। कृपा से आपकी हो गया मुक्त सिंहासन स्वामी का, नहूष के अधिकार से। आपको है शत शत प्रणाम, मेरा। शत शत प्रणाम।

तारा : समाचार, नहूष के सर्प हो जाने का है सुन लिया मैंने भी, नाथ।

बृहस्पति : **(संतुष्ट)** हो सका है सम्भव यह, स्वयम शची के सतित्व बल से। दुर्गा रूप है यह।

शची	:	अब कामना है मेरी एक ही, गुरुदेव।
बृहस्पति	:	(हंसता हुआ) है मुझे मालूम, बेटी। जाऊंगा अभी मानसरोवर। कमलनाल में वहीं करते हैं, महेन्द्र निवास। करूंगा तुरत पाप मुक्ति का उपाय।
शची	:	नहीं शब्द मेरे पास। करूं प्रकट आपका आभार।
बृहस्पति	:	जा सकती हो निर्भय अब तुम, राजधानी अमरावती।
शची	:	जो आज्ञा गुरुदेव!
तारा	:	आओ बेटी शची! करें चलने की तैयारी। (बृहस्पति की कुछ देर सौम्य हंसी)

धुंध के घेरे

लेखन	:	1983
प्रथम मंचन	:	23 अप्रैल, 1984 : **श्री रत्न कलसी** के निर्देशन में 'चोपरा वेलफेयर एसोसिएशन' द्वारा अभिनव थिएटर, जम्मू में।
द्वितीय मंचन	:	16 अप्रैल, 1985 : **श्री मुशताक काक** के निर्देशन में 'एमेचुअर थिएटर ग्रुप' द्वारा अभिनव थिएटर में।

पात्र

पुरुषोत्तम

देवदास

खैराती

मां

सरोद

दीपा

(मध्यवर्गीय घर का एक कमरा। सोफा सेट, मेज़, रेडियो, बिजली का पंखा, ड्रेसिंग टेबल इत्यादि अपने-अपने उपयुक्त स्थान पर रखे हुए हैं। रेडियो पर गीत बज रहा है। समय : शाम को कार्यालयों में छुट्टी हो चुकने का।)

सरोद : (सहसा कलाई घड़ी देख कर) अरे! उन्हें पहुंचने में तो दस ही मिनट रह गए! आते ही होंगे! (तुरंत ड्रेसिंग टेबल के शीशे में झांकती हुई कंघा उठाती है। रेडियो गीत के साथ सुर मिलाती हुई बाल संवारती, बिंदी ठीक करती और उलटे घूम कर मुस्कुराती है। रेडियो बंद करती और लास्य-मुद्रा में आत्मविभोर-सी प्रस्थान करती है। कंघा जो अब तक हाथ में है, जल्दी-जल्दी प्रस्थान करते हुए ड्रेसिंग टेबल की ओर फैंकती है जो नीचे गिर जाता है।

मां : (प्रवेश कंघा उठाती है) अच्छा...ऽ...! तो महारानी कंघा-पट्टी करके हटी है। मैं भी कहूँ...(कंघे को घुमा-फिरा कर देखती और उसमें उलझा हुआ एक बाल निकाल कर जांचती है) अरे रे, कितने लम्बे बाल हैं? चुटिया न हुई, कुएं से पानी निकालने वाली रस्सी हुई। (कंघा पटक कर) मालूम नहीं कहां बैठ कर खिंचवाती रही जो इतने लम्बे हो गए। राम, राम, राम! अरे देखो तो...धान की खेती उग आई है। ना लाज, ना शरम। इस पढ़ी लिखी से कोई अनपढ़ ही मिल जाती तो भली थी। करती भी क्या है? अब बोलूं...तो लोग कहेंगे...सास बुरी होती है। ना बोलूं तो, सच क्यों न बोलूं? यह पंखा, यह ड्रेसिंग टेबल, यह साफा-सोफा सैट, ये कुर्सियां, यह रेडियो...क्या करूंगी इनका? क्या करना था इन्हें? खैर! दिया है तो अपनी ही बेटी को दिया है। बोले बिना रहूंगी भी क्यों? सच ही तो है। कौन-सा एहसान किया है जो दिया है। छः तोला सोना दिया...सो भी पीतल ही होगा। कौन जाने असली है या नकली? हुं! (आवाज़ें देती है) बहू...! ओ बहू...!

सरोद : (पृष्ठभूमि से) आती हूं, मां जी!

मां : (खीझ कर ऊंचे स्वर में) आती हूं, आती हूं क्या कह रही है, री? आ क्यों नहीं...

सरोद : (प्रवेश) क्या है, मां जी?

मां : **(तुरंत प्रवेश देखकर झेंप से)** तू...तू...तू वहां थी? **(एक दम रौब से)** कितनी बार पुकारा तुम्हें? क्या कर रही थी?

सरोद : वो-वो आटा मल रही थी। वह आते ही होंगे।

मां : **(तीक्ष्ण)** आटा मल रही थी? वह खाना खा कर नहीं गया है क्या?

सरोद : जाते समय कह रहे थे कि आलू के परांठे खाए बहुत दिन हो गए हैं।

मां : **(व्यंग्य)** हां, हां! **(कंघा हाथ में लिए)** रानी साहिबा जो ठहरीं! दिन भर कंघा-पट्टी करती रहेंगी। समय मिलेगा तो खाएंगी। और वह भी आलू के परांठे।

सरोद : आप कहें तो न बनाऊं।

मां : **(अबाध)** हां! जैसे हर काम मुझी से पूछ कर होता है। पकाओ...पकाओ आलू के परांठे। अरी, घर से कुछ नहीं लाई तो यहां ही कुछ ध्यान किया कर। सभी कहते थे...बहू आ रही है। बहू...ऊ रानी आ रही है। अरी लाई क्या है तू? **(चीज़ों की ओर संकेत करती हुई)** यह साफा-सोफा सेट, यह रेडियो, यह पंखा, ये कुर्सियां...यह सब चूल्हे में झोंकनी थीं क्या? अब आलू के परांठे ही खिलाने थे तो कहना था अपने बाप से...देसी घी का टीन ही भेज देता।

सरोद : (धक्क-सी) मां... जी...?

मां : अरी क्या करेगी मां जी को? सिर चढ़ेगी क्या? अपने आप में रहा कर। समझी? **(प्रस्थान करती हुई)** जवाब देना भी सीख लिया अब। **(नकल)** मां...जी...? **(प्रस्थान)** कहां जा कर नाक लगी है? राम, राम!

(खड़ी-खड़ी सरोद रुआंसी हो उठती है और फिर फफक फफक कर रोने लगती है। कुछ देर के पश्चात् बैठ जाती है। घुटनों पर दोनों बाजू बांध कर उन पर ठोड़ी टिकाए रोना रोकती हुई गुमसुम। कुछ ही पल में 'पिता जी...पिता जी कहती हुई फिर रोने लगती है।)

मां : **(पृष्ठभूमि से)** अरी, अब चुप भी करेगी कि नहीं? आसमान क्यों सिर पर उठा रही है। राम...राम!

(रोना बंद कर के सरोद कुछ ही देर में वैसी ही सो-सी जाती है।)

पुरुषोत्तम : (चिंता में प्रवेश। सरोद की ओर देख कर कुछ पल मुस्काता है। प्यार से पुकारता है) सरोद...। सरोद...। सरोद...। (धीरे-धीरे आगे बढ़ कर उसके सिर पर हाथ फेरना चाहता है। सहसा कुछ सोच कर उसकी आंखों पर हाथ रख देता है जिससे सरोद हड़बड़ा उठती है। इस पर हंसता हुआ वह सामनी मेज़ पर बैठ जाता है) यों बैठी हुई तुम जानती हो कितनी सुंदर दिखाई दे रही थी? (सरोद को सकुचाती देख कर) बिलकुल एक प्रतिमा-सी। अर्चना के फूल चढ़ाने की बजाए...(सरोद की आंखों में देख कर एक दम) अरी, क्या हुआ? तुम आज फिर रोई हुई हो? (सरोद आंखें मलने लगती है) अरी, बोलती क्यों नहीं? क्या हुआ?

सरोद : (शील) कुछ नहीं! कुछ भी तो नहीं!

पुरुषोत्तम : फिर ये भीगी आंखें, भीगे-से गाल और यह...यह...यह...

सरोद : आप जानते तो हैं...कभी-कभी सिरदर्द इतना होता है कि सिर फटने लगता है। उसी से यह सब हुआ। (बात बदलती हुई) आप के लिए चाय ले कर आती हूं। (जाने लगती है)

पुरुषोत्तम : (आंचल थाम लेता है) नहीं, सरोद! अब चाय पीने को मन नहीं रहा। तुम मेरे पास बैठो।

सरोद : (आंचल छुड़ाने के प्यार भरे यत्न करती है बीच-बीच में पुरुषोतम हंसता है) छोड़िए। छोड़िए न! अब जाने भी दीजिए। अब छोड़ दीजिए न, प्लीज़! मां जी देख लेंगी। देखिए, देखिए आंचल फट जाएगा।

पुरुषोत्तम : (हंसता हुआ) तो क्या हुआ? नया ले आएंगे!

देवदास : (बाहिर से द्वार खटखटा कर पुकारता है) पुरुषोत्तम! पुरुषोत्तम!

सरोद : (अवसर जान कर) शायद आपके कोई मित्र आए हैं! अब तो जाने दें, मुझे! (आंचल छुड़ा कर जाती हुई) मैं चाय ले कर आती हूं।

देवदास : (द्वार खटखटा कर) पुरुषोत्तम! अरे, घर पर हो कि नहीं? (प्रवेश) इतना भी क्या हुआ कि कोई बाहिर से द्वार खटखटाए, आवाज़ें भी दे और अंदर से तुम पता भी न दो!

पुरुषोत्तम : **(सोफे की ओर संकेत करता हुआ)** आओ भाई, आओ। बैठो।

देवदास : बैठना क्या है दोस्त। एक तो यों ही मन अशांत हो उठा था और ऊपर से तुम थे कि दस्तक ही न सुन रहे थे।

पुरुषोत्तम : यों ही भाई। थका हुआ था। खैर ! मन की अशांति की न ही पूछो तो अच्छा है। ठीक है! तुम्हें पूछ लेता हूं। क्या हुआ? **(तनिक पास जा कर, कमर झुकाए उत्सुकता से गर्दन आगे बढ़ा कर)** आज फिर भाभी के साथ कुछ कहा सुनी हो गई है क्या?

देवदास : **(निराश किंतु शिष्टाचार से)** जाने दे इन बातों को। बहुत लम्बा जीवन है, इन बातों के लिए। तुम बोलो, कैसी कट रही है?

पुरुषोत्तम : मज़े में हूं भाई! जहां, मां की ममता हो। पत्नी का प्यार हो, मित्रों की सहानुभूति हो...वहां क्या नहीं होगा? हर घड़ी, हर पल मंगल ही मंगल। शुभ ही शुभ।

देवदास : **(उभरती झेंप को छिपा कर मुस्काते हुए)** बहुत अच्छी किस्मत वाले हो तुम। अं...हां! तुम जो कुछ दिन पहले कह रहे थे, 'प्रोमोशन' का क्या हुआ।

पुरुषोत्तम : यत्न किया था। 'डिपार्टमेंटल एग्ज़ेमिनेशन' पास किए बिना नहीं हो सकती।

देवदास : आखिर हुई न वही बात जो मैं कह रहा था। यहां 'सीनिआरिटी' 'कौंट' नहीं करती। अगर करती है तो 'डिपार्टमेंटल एग्ज़ेमिनेशन' पास करने के बाद करती है।

पुरुषोत्तम : **(कुछ पल मौन के बाद ड्रेसिंग टेबल के डिब्बे से सिगरेट निकाल कर लाता और पेश करता है)** हां! अब सोच रहा हूं कि परीक्षा की तैयारी पूरी कर ही लूं।

देवदास : **(सिगरेट सुल्गाता हुआ)** यह सोचने की नहीं। शुरू करने की बात है। देर न करो।

पुरुषोत्तम : अगर तुम भी शुरू कर दो तो दोनों एक साथ पढ़ा करेंगे। एक दूसरे के लिए आसानी हो जाएगी।

देवदास : **(निराश)** अब हो चुकी मेरी तैयारी। **(दीर्घश्वास)**

पुरुषोत्तम : क्यों? इसमें क्या है?

देवदास : परीक्षा की तैयारी वह कर सकता है जिसका मन शांत हो। यहां तो हर समय कोई न कोई बहाना ले कर युद्ध हो जाता है।

पुरुषोत्तम : लगता है, आज फिर कुछ हुआ है? क्या हुआ?

देवदास : (निराश) यह पूछो पुरुषोत्तम कि क्या नहीं हुआ? आज तुम्हारी भाभी इस लिए नाराज़ हो गई कि **(चाय लेकर सरोद का प्रवेश)** नमस्ते, भाभी!

सरोद : नमस्ते! किसकी बातें हो रही हैं, भाई साहब? दीपा बहन की? **(पुरुषोत्तम और देवदास एक दूसरे की ओर चुपचाप देखने लगते हैं। इसी बीच सरोद टेबल पर चाय रखती है। दोनों पीने लगते हैं।)**

पुरुषोत्तम : **(मौन के बाद)** हां, सरोद! अपना यह देवदास है न...कह रहा था...दीपा जैसी पत्नी सौभाग्य से मिलती है। मैं अपने भाग्य को सराह रहा था, यह अपने भाग्य को। **(हंसता है किंतु देवदास खिसिया जाता है।)** कह रहा था...जैसा उसका नाम है 'दीपा'...वैसे ही जगमगाते गुण हैं उसमें। **(देवदास से)** क्यों दोस्त?

देवदास : **(खिसियाता हुआ)** अं-हां! हां, हां, हां! **(चाय का कप हाथ से गिरने लगता है।)**

सरोद : दीपा जी बहुत अच्छी हैं। जब भी मिलती हैं हंस के मिलती हैं। बड़ी हंसमुख हैं।

देवदास : **(कृत्रिम हंसी)**

सरोद : लगता है - स्नेह उनके रोम रोम में बसा हुआ है।

पुरुषोत्तम : क्यों नहीं, क्यों नहीं!

मां : **(पृष्ठभूमि से)** बहू...। अरी ओ बहू!

सरोद : आई मां जी! **(प्रस्थान)**

देवदास : **(भारी मन से)** अब इन्हें कौन बताए कि हंसी वाला चेहरा हमने सिर्फ एक ही दिन देखा था। और सो भी विवाह के पहले या दूसरे दिन। मुझे तो अच्छी तरह से याद भी नहीं।

पुरुषोत्तम : गृहस्थी में यह सब न हो तो उसे गृहस्थी कौन कहेगा, भाई। गृहस्थी का अर्थ है नीम के रस का घूंट। हंस-हंस कर पी जाओ तो जीवन सफल हो जाए। बस, पचाने की शक्ति होनी चाहिए।

देवदास : अरे, जहां इस बात को ले कर झगड़ा हो जाए कि मैंने 'साले' को 'साला' कह कर क्यों पुकारा...इससे कड़ुवा घूंट क्या हो सकता है। तुम्ही बोलो, 'साले' को साला नहीं कहूंगा तो क्या 'जीजा' कहूंगा?

पुरुषोत्तम : **(जी खोल कर हंसता है तो चाए का कप मेज़ पर रखना पड़ता है।)** तब तो यह झगड़ा बेहद रसीला रहा होगा!

देवदास : तुम्हें हंसी सूझ रही है? कैसे आदमी हो तुम?

पुरुषोत्तम : **(हंसी रोक कर)** मुझे तुम पर नहीं। तुम्हारी पत्नी दीपा पर हंसी आ रही है। कितनी ना-समझ है वह?

देवदास : इसे तुम ना समझी कहते हो। ना-समझ तो उसे कहते हैं जिसे समझाया जाए तो समझ जाए। वह साली तो बेपैंदे का लौटा है, लौटा।

पुरुषोत्तम : **(दया दिखाता हुआ)** च-च-च-च-...। तुम्हारी यह दशा देख कर मुझे सच मुच दया आ रही है।

देवदास : क्या मतलब? मैं झूठ बोल रहा हूं क्या?

पुरुषोत्तम : मैंने कब कहा? मैं...तो कह रहा था कि...

मां : **(प्रवेश)** कौन? देवदास बेटा!

देवदास : **(खड़ा हो कर)** प्रणाम, मां जी!

मां : जीते रहो, बेटा। सुखी रहो। **(लघु विराम)** बहू को साथ नहीं लाया, बेटा?

देवदास : मैं 'आफिस' से सीधा आ रहा हूं, मां जी।

मां : अच्छा, अच्छा। वैसे ठीक तो है न बहू?

देवदास : बिलकुल ठीक है, मां जी!

मां : **(बिठाती हुई)** तू खड़ा क्यों है, बेटा? बैठ जा, बैठ जा। अरे बैठ भी जा ना अब। जैसा पुरुषोत्तम, वैसा तू। **(बैठता है)** हां, क्या नाम है बहू का?

देवदास : दीपा।

मां : दी...पा! बहुत प्यारा नाम है। तुम्हारे ब्याह के बाद एक ही बार देखा था, उसे। सो भी चलते चलते। **(जाने लगती है किंतु रुक जाती है)** कभी उसे भी ले आना।

देवदास : जी, मां जी।

मां : बहुत अच्छी है बेचारी। (देवदास झेंपता है) जब भी मिलती है नज़रें झुका लेती है। बोलती है तो लगता है फूल बिखेर रही है। ले-आना उसे। **(प्रस्थान)**

देवदास : ज़रूर ले आऊंगा मां जी। **(झेंपा हुआ)** अरे, सवा छे बज गए। अच्छा, मैं चलता हूं।

पुरुषोत्तम : बैठोगे नहीं?

देवदास : नहीं दोस्त! एक ज़रूरी काम से जाना है।

पुरुषोत्तम : अरे बैठो तो सही।

देवदास : **(जाता हुआ)** 'लेट' हो जाऊंगा। कहीं जाना है।

पुरुषोत्तम : **(पुकार कर)** अरे! यह साले जीजे वाला झगड़ा हर रोज़ किया करो। सेहत बनती है। **(देवदास ओझल। पुरुषोत्तम हंसता है। फिर फुर्ती से उठ कर)** साले को साला न कहूंगा तो क्या जीजा कहूंगा। **(हंसता है)** बहुत खूब...। हर घर में कोई न कोई दंगा देखने को मिल ही जाता है। बड़ा-बड़ा भी और छोटा-छोटा भी। नमक से ले कर सास बहू तक में, भाभी और ननद में, देवरानी और जेठानी में... सब में पटाखे चलते ही रहते हैं। बहुत देखे। **(दीर्घश्वास)** किन्तु एक अपना घर है। वाह! कहीं नज़र न लग जाए किसी की। सरोद सचमुच सरोद है। अपने नाम के अनुरूप। सरोद का सौभाग्य है कि मेरी मां जैसी सास मिली है और मेरी मां का अहोभाग्य जो उसे सरोद जैसी बहू मिली है। **(सहसा चिंतित सा इधर उधर देखता है। रेडियो ऑन करता है। कुछ सुनकर तुरन्त बन्द कर देता है और लौट कर टांग लटकाए पलंग पर बैठ जाता है या टहलता है। एकालाप।)** समझ नहीं पा रहा...क्या करूं? कहां जाऊं? किसे कहूं? क्या कहूं और कैसे कहूं? अब समय ही कितना रहा है? यदि चार दिन में दस हजार रुपयों का प्रबंध न हो सका तो नौकरी जाएगी। हो सकता है जेल भी जाना पड़े। **(घबरा कर)** तब...तब सरोद का क्या होगा? मां का क्या होगा? **(लघु विराम)** कहां से आएंगे ये दस हज़ार रुपए। रकम भी कोई छोटी नहीं और जुटा पाने का साधन भी कोई नहीं। ऐसा लगता है जैसे, सारा घर दलदल में फंसने वाला है। **लघु विराम** हां, यह मुमकिन है। **(दीर्घश्वास)** हां! यदि सरोद मान जाए तो साधन जुट सकता है। वह अपने पिता से मांग सकती है। शायद वह दे सकते हैं।

नहीं, नहीं। वह यह न समझने लगे कि मैं दहेज की कोई कसर पूरी करना चाहता हूं। नहीं, नहीं! मैं नहीं कहूंगा। मैं ऐसी बात सरोद से कभी नहीं कहूंगा।

आखिर कहे बिना चारा भी क्या है? मेरे परिवार के सुख का प्रश्न हैं और फिर उसकी बेटी भी तो शामिल है। और तो और मैंने कर्ज़ मांगना है। उधार लेना है। यह कर्ज़ तो उन्हें देना ही पड़ेगा। अपनी बेटी के कारण ही सही। हां, देना पड़ेगा...नहीं तो...(**बैठता है। सरोद का प्रवेश। बत्ती जलाती है। पुरुषोत्तम अवाक-सा उसकी ओर देखने लगता है।**)

सरोद : इस तरह अंधेरे में क्यों बैठे हैं?

पुरुषोत्तम : (**खोया हुआ सा**) यों ही, बस।

सरोद : (**ध्यान से देखती हुई**) यों ही, बस! क्या मतलब?

पुरुषोत्तम : मतलब-बतलब कुछ नहीं। बस, ध्यान ही न रहा।

सरोद : अभी तो अच्छे भले थे। पुरुषोत्तम के साथ गप्पें मार रहे थे। हंस रहे थे। अब क्या हुआ?

पुरुषोत्तम : क्या होना था। कुछ भी तो नहीं हुआ।

सरोद : (**पास आकर पुरुषोत्तम के सिर पर प्यार से हाथ फेरती हुई**) चलो, अच्छा है अगर कुछ नहीं हुआ। होना भी नहीं चाहिए। खाना ले आऊं?

पुरुषोत्तम : नहीं। अभी नहीं।

सरोद : लगता है आप किसी चिंता में हैं।

पुरुषोत्तम : न-न- नहीं तो।

सरोद : कुछ तो है। कब से देख रही हूं। आप...

पुरुषोत्तम : होगी भी तो क्या किया जा सकता है?

सरोद : कौन सी चिंता है?

पुरुषोत्तम : तुम्हारे होते हुए कौन-सी चिंता हो सकती है।

सरोद : (**सोफे के पास जा कर देखती हुई**) होनी तो नहीं चाहिए। फिर भी...।

पुरुषोत्तम : सरोद! तुम हो तो सब कुछ है। लेकिन...

सरोद : लेकिन क्या?

पुरुषोत्तम : (**उखड़ता है**) समझ नहीं पा रहा कि तुमसे क्यों कर कहूं? कैसे कहूं?

सरोद : आप तो मुझ से कहा करते हैं कि पत्नी को पति के सामने संकोच से काम नहीं लेना चाहिए।

पुरुषोत्तम : हां! कहा करता हूं।

सरोद : तो आज आप खुद ही...

पुरुषोत्तम : कभी-कभी पुरुष के लिए भी ऐसे अवसर आ जाते हैं, जब वह अपनी ही पत्नी के सामने संकोच करने लगता है। आज मेरी भी यही दशा है। **(कुछ पल दोनों एक दूसरे की ओर खोए खोए-से देखते रहते हैं।)**

सरोद : अब कह भी दीजिए न, क्या चिंता है?

पुरुषोत्तम : **(बात बदलना चाहता है)** स-रो-द?

सरोद : हूं?

पुरुषोत्तम : ऐसा करो...

सरोद : बोलो।

पुरुषोत्तम : कि तुम...

सरोद : हां, मैं!

पुरुषोत्तम : कि तुम कोई...

सरोद : कुछ कहिए भी न अब...

पुरुषोत्तम : ऐसा करो...तुम कोई...गीत सुनाओ।

सरोद : गीत?

पुरुषोत्तम : हां, गीत। कोई बढ़िया-सा गीत। प्यारा-सा गीत।

सरोद : मगर आप तो किसी चिंता की बात कर रहे थे?

पुरुषोत्तम : अं, हां। हां! छोड़ो उस बात को। तुम कोई गीत सुनाओ।

सरोद : नहीं। पहले आप अपनी बात कहें। मैं आप को चिंता में नहीं देख सकती।

पुरुषोत्तम : (अवाक)

सरोद : कहें न।

पुरुषोत्तम : हर बात में हठ करने लग जाती हो, तुम।

सरोद : हो सकता है...आपको चिंता में से निकाल सकूं। न भी निकाल सकूं तो क्या? आपकी चिन्ता में शामिल तो हो सकती हूं। बांट सकती हूं, उसे। **(खोया-खोया भाव विभोर-सा पुरुषोत्तम सरोद को निहारता है।)** कहिए। आपको मेरी सौगंध। बोलिए, क्या बात है?

पुरुषोत्तम : **(निहारने के बाद)** स...रो...द?

सरोद : जी!

पुरुषोत्तम : तुम जैसी पत्नी ऊंचे भाग्य से मिलती है।

सरोद : कविता छोड़िए। बात पर आइए।

पुरुषोत्तम : **(साहस बटोर कर)** दरअसल मेरे आफिस के कैश में दस हज़ार रुपए कम हो गए हैं।

सरोद : दस हज़ार रुपए? कैसे कम हो गए?

पुरुषोत्तम : यही तो मालूम नहीं।

सरोद : फिर भी?

पुरुषोत्तम : अगर मालूम होता तो, कम ही क्यों होने देता, इतनी बड़ी रकम।

सरोद : दस हज़ार रुपए?

पुरुषोत्तम : हां! दस हज़ार। अगर नहीं मिले तो हो सकता है... नौकरी चली जाए और सज़ा भी मिले!

सरोद : **(विचार पूर्ण मुद्राओं के बाद)** सिरफ दस हज़ार रुपयों के लिए। **(हंसने लगती है।)**

पुरुषोत्तम : अरी तुम हंस रही हो?

सरोद : हंसूं नहीं तो क्या करूं? इतनी छोटी-सी रकम के लिए इतनी बड़ी चिन्ता। अजी, कोई और सुन लेगा तो वह भी हंसे बिना न रहेगा।

पुरुषोत्तम : सरोद! मुझे तो कहते हुए भी शरम आ रही थी। लेकिन...

सरोद : लेकिन क्या? फिर कभी किसी से न कहिएगा। जग हंसाई का ख्याल तो किया करें।

पुरुषोत्तम : मैंने जान बूझ कर, तो कम नहीं किए। शायद किसी ने हाथ मार लिया है।

सरोद : हूं। फिर वही बात। अजी इन्तजाम हो जाएगा। **(मुस्काती है)** चिंता छोड़ दीजिए अब।

पुरुषोत्तम : लेकिन कैसे होगा? कहां से होगा?

सरोद : सब हो जाएगा। आप चिंता न करें। चलें और खाना खाएं। **(एक बांह पकड़ कर उठाती है।)** जल्दी चलें। मुझे भी भूख लगी है। **(उठा कर ले जाती है।)**

(धीरे-धीरे अंधेरे के पश्चात फिर प्रकाश होता है। मां, देवदास और दीपा का प्रवेश)

मां : आओ, आओ! **(एक कुर्सी के पास रुक कर)** आओ, बैठो! **(देवदास और दीपा सोफे में बैठते हैं)** आज तो बहुत अच्छा दिन

है। तुम दोनों को एक साथ देख रही हूं।

देवदास : कुछ खरीद के लिए निकले थे तो आपका कहा भी याद रहा कि दीपा को ले आना।

मां : **(खुश)** अरे बहुत अच्छा किया, देवदास बेटा। **(दीपा की ओर देखती हुई)** देख तो कितनी सुंदर है, मेरी बहू! जी चाहता है, देखती रहूं। देखती ही रहूं।

देवदास : पुरुषोत्तम कहां है? दिखाई नहीं दे रहा।

मां : बस, आता ही होगा। अपनी सास को देखने गया है। **(उपेक्षापूर्ण)** बुढ़िया रोज़ ही बीमार पड़ी रहती है।

देवदास : सास बीमार हो तो जाना ही चाहिए, मां जी! सास भी तो मां ही होती है।

मां : **(उपेक्षापूर्ण मुद्रा में बैठती हुई)** होती है। सास भी माँ ही होती है। इसका अर्थ यह तो नहीं होता कि-छींक आई तो आसमान सिर पर उठा लिया। **(देवदास और दीपा ध्यान से मां को देखने लगते हैं)** ज़रा-सी खांसी हुई तो मोहल्ला इकट्ठा कर लिया। पुरुषोत्तम उसका दामाद है या डाक्टर? या फिर नौकर है? हुं। **(देवदास खड़ा हो जाता है।)** तू कहां चल दिया, बेटा?

देवदास : एक ज़रूरी काम भी है, मां जी। लौटता हुआ दीपा को ले जाऊंगा। तब तक यह आपके पास रहेगी।

मां : क्यों नहीं! क्यों नहीं! यह भी तो मेरी बहू है। जैसी सरोद वैसी दीपा!

देवदास : **(जाने लगता है)** अच्छा, मां जी! **(प्रस्थान)**

मां : **(बनती हुई)** मैं भी कितनी भुलक्कड़ हूं। इतनी देर बैठा रहा। चाय क्या, पानी तक पूछना भी न कर सकी। मेरी तो अक़ल ही मारी गई है। राम, राम! **(दीपा से)** तू चुप-चुप क्यों बैठी है, बहू? कुछ बात तो कर। **(लघु विराम)** और कितनी बहनें हैं तुम्हारी?

दीपा : दो!

मां : बड़ी होंगी?

दीपा : नहीं! छोटी हैं।

मां : क्या करती हैं? ब्याह हो गया उनका?

दीपा : नहीं। एक पढ़ रही है और दूसरी का विवाह होने वाला है।

मां : अच्छा! बहुत भाग्यशाली होगा वह घर जहां तुम्हारी बहन जाएगी। तुम बोलती हो तो लगता है फूल झर रहे हैं। तुम्हारी बहन भी ज़रूर मोती बिखेरती होगी।

दीपा : सरोद जी भी तो बहुत अच्छी हैं।

मां : कहां बेटी! मुझे अगर पहले मालूम होता तो तुम्हें ही इस घर की बहू बना लेती। लेकिन भाग्य जहां ले जाए...वहीं जाना पड़ता है।

दीपा : मुझे तो बहुत अच्छी लगती हैं। बहुत मीठा बोलती हैं।

मां : ये सब दिखावे होते हैं बेटी। कोई वही होता है जो मन से हो। न काम की, न काज की, दुश्मन अनाज की। बस नखरे हैं। लम्बे-लम्बे बालों को ही बनाती संवारती रहती है। दस बार पुकारने पर एक बार भी सुन ले तो शुक्र है। मेरा पुरुषोत्तम सीधा साधा है। उसे अपनी अंगुलियों पर नचाना खूब जानती है। क्या कहूं बेटी! तुम जैसी बहू बड़े भाग्य से मिलती है।

दीपा : सच पूछें, मां जी! मुझे तो कुछ भी नहीं आता।

मां : राम-राम! तू कहां कहेगी? मुझे सब मालूम है। देवदास तेरी बहुत तारीफ करता है। अपने भाग्य को सराहता है।

दीपा : लज्जित क्यों करती हैं, मां जी?

मां : अहा! कितना सुख है इस वाक्य में? (नकल) 'लज्जित क्यों करती हैं, मां जी?' यही होते हैं भले घर की बहुओं के लक्षण। अपनी है कि आगे से जवाब पर जवाब देती है। कलेजे पर छुरियां चलती हैं। अभी उस दिन की बात है। रात को वह चीखी, वह चीखी...

दीपा : किस बात पर?

मां : यह उसकी आदत है। इधर की बात उधर और उधर की बात इधर। अन्दर ही अन्दर से नीरी आग है। मेरे खिलाफ बहका रही थी, पुरुषोत्तम को। राम, राम। भगवान बचाए ऐसी बहुओं से।

दीपा : यह तो बहुत खराब आदत है।

मां : तू इसे खराब कहती है। जहर है, मीठा ज़हर। मुंह में राम-राम और बगल में छुरी। राम, राम। मैं तो हरिद्वार चली जाना चाहुं घर छोड़ कर। सोचती हूं मेरे बाद बेचारे पुरुषोत्तम की न जाने क्या गत बनाएगी? चाह कर भी नहीं जा सकती।

पुरुषोत्तम : (प्रवेश) कहां नहीं जा सकती, मां?

मां : हरिद्वार की बात कर रही थी बेटा। बेटा तू आ गया ?

पुरुषोत्तम : हां, मां। नमस्ते, भाभी।

दीपा : नमस्ते भैया।

मां : सरोद नहीं आई, बेटा?

पुरुषोत्तम : आ जाएगी मां। कह रही थी, सुशीला से मिलना है। सो चली गई। **(दूसरे द्वार से प्रस्थान)**

मां : देख लिया बेटी? मैं जो कह रही थी। अब बेटा चूल्हा चौंका झोंकेगा। रानी साहिबा बाद में आएंगी।

पुरुषोत्तम : **(प्रवेश)** भाभी जी! देवदास मुझे रास्ते में ही मिल गया था। कह रहा था, मैं ज़रा जल्दी में हूं। अपनी भाभी को 'थ्रीव्हीलर' में भेज देना।

दीपा : जी!

मां : बेटा, अगर सरोद भी आ जाती तो दीपा से मिल लेती। जान पहचान बढ़ती है। मेल मिलाप बढ़ता है। दुख-सुख की सौ बातें बंटती हैं।

पुरुषोत्तम : वह आती ही होगी, मां।

दीपा : अच्छा मां जी, मैं चलूं।

मां : इतनी जल्दी क्या है, बेटी? सरोद से नहीं मिलोगी?

दीपा : वो घर पहुंचेंगे तो नाश्ता ढूंढेंगे। मुझे जाना ही चाहिए। **(खड़ी हो जाती है)**

मां : कितनी चिन्ता रहती है तुम्हें देवदास की। मैं कहती हूं यही लक्ष्ण होते हैं, भली बहुओं के। अच्छा बेटी! फिर भी आती रहना।

दीपा : क्यों नहीं, मां जी? यह अपना ही तो घर है। **(पुरुषोत्तम के साथ प्रस्थान)**

मां : **(पीछे से पुकारते हुए)** 'थ्री व्हीलर' का नम्बर नोट कर लेना बेटा।

पुरुषोत्तम : **(पृष्ठभूमि से)** तू चिंता न कर, मां। कर लूंगा।

(अंधेरा छा जाता है। और फिर प्रकाश होता है।)

(दोपहर का समय।)

(खैराती लाल तथा उसकी बहन 'माँ' आमने-सामने बैठे हैं।)

खैराती : तो तुम मेरी मजबूरी समझ गई न, बहन? तुम्हारी तरह अभी नया-नया ही 'पैनशियन' हुआ हूं। कागज़ पूरे हो जाएंगे तो तुम्हारी तरह

पेंशियन भी मिलना शुरू हो जाएगी।

मां : ठीक है भैय्या। आड़े दिनों में अपने ही काम आते हैं। फिर हम तो बहन भाई हैं।

खैराती : क्या करूं बहन? मुझे तो तुम्हारी तरह कहते हुए भी शरम आती है। भाई को चाहिए कि बहन को कुछ दे... लेकिन मैं हूं कि तुम्हारी तरह उलटा मांग रहा हूं। मजबूरी ने यह दिन दिखाए हैं, तुम्हारी तरह।

मां : बार-बार क्यों शरमिन्दा करते हैं, आप।

खैराती : एक बार की बात हो तो भी माना। तुम्हारी तरह नित का धंधा हो गया है। राधा बहन, इतने दे दो। राधा बहन, उतने दे दो।

मां : राम, राम, राम। अब बस भी करें, भैया। **(सहसा)** ठहरें भैया! मैं आपके लिए चाय ले आऊं। बहू बना रही थी। **(माँ का प्रस्थान। इसी बीच खैराती कमरे की चीज़ों को देखने परखने लगता है। तभी माँ का चाय लेकर प्रवेश।)** लें, भैय्या! चाय पी लें। **(दोनों चाए पीने लगते हैं)**

खैराती : एक बात तुझे बहुत बार समझाई है, बहना। तुम्हारा बड़ा भाई हूँ। और पुरुषोत्तम का मामा हूं। इसलिए तुम्हारी तरह...

मां : आप कौन-सी बात कर रहे हैं, भैय्या?

खैराती : सोचता हूं तुम्हारा सुख, मेरा सुख है। तुम कहीं भूल न जाओ। बहू के साथ तनिक ठीक ढंग से पेश आया करो। ज़रा-सी प्रशंसा, तुम्हारी तरह, बहुओं को आसमान पर चढ़ा सकती है। और आजकल की बहुएं? इनका बस चले तो तुम्हारी तरह दहलीज़ में बिठा देती हैं हम बूढ़ों को।

मां : आप चिन्ता क्यों करते हैं, भैय्या? मैं सब समझती हूं। मेरी खुली आंखें सब देखतीं हैं। कहां यह कल की छोकरी और कहां मैं? फिर मैं कहां चाहूं कि यह मुझे दहलीज़ पर बिठा दे। **(दोनों चाए के कप नीचे रखते हैं। मां उठ कर जाने लगती है)** मैं अभी आई।

खैराती : कहां चली?

मां : बातों ही बातों में भूल ही गई थी। आपका काम भी तो करना है। **(मां के प्रस्थान पर खैराती जो दीन हीन-सा बैठा था। अकड़**

कर मूछों को ताव देने लगता है।)

खैराती : मेरा नाम भी खैराती है और खाना भी खैरात में ही सीखा है, तुम्हारी तरह। जैसा नाम वैसा काम। (**हंसता है**) तुम क्या जानो, बहन? तुम कुछ नहीं जानती। कुछ भी नहीं। (**मां के आने की आहट से पूर्ववत हो जाता है।**)

मां : (**प्रवेश**) मैं तो परेशान हो गई, इससे। कमबख्त को हैज़ा खाए, कोढ़ी हो जाए या फिर भगवान मुझे ही उठा ले। रोज़-रोज़ के झंझटों से छुटकारा तो मिल जाएगा।

खैराती : क्या कह रही हो बहन? क्या मैं...

मां : अरे भैय्या, मैं सरोद की बात कर रही हूं। मां को देखने गई है।

खैराती : अच्छा...अच्छा...क्या हुआ मां को?

मां : मेरे 'हीरो' जैसे बेटे को उसके हरामखोर घरवालों ने मुफ्त में फंसा लिया। अपने जिस लाडले को मैंने इतनी मेहनत से पढ़ाया लिखाया। जिसके लिए रिश्वत दे कर नौकरी हासिल की...उसकी शादी में दो 'दस्सियां' भी न आईं।

खैराती : मैंने तो पहले ही कहा था, बहन। अपने दोस्त की बेटी के लिए पुरुषोत्तम को ही चुना था मैंने। तुम से बात भी की थी...दहेज में दो लाख भी दे रहा था वह...पर तुम ही न मानी।

मां : पुरुषोत्तम के पिता जी ने बात पक्की कर रखी थी। सो उनका वचन निभाना पड़ा। मेरी तो मति ही मारी गई थी। अकल पर पत्थर पड़ गए थे जो मैं उसी बात को पल्ले बांधे बैठी थी।

खैराती : अब पछताए क्या होत है जब चिड़ियां चुग गईं खेत। सबर के सिवा अब कोई चारा ही नहीं, बहन। कोई चारा नहीं, तुम्हारी तरह।

मां : कभी-कभी सोचती हूं...पुरुषोत्तम की दूसरी शादी कर दूं पर इसे कैसे रास्ते से हटाया जाए?

खैराती : अगर तुम्हारी जगह मैं होता तो कभी का पीछा छुड़ा लिया होता।

मां : कैसे?

खैराती : खाना बनाती हुईं आजकल बहुत सी बहुएं जल जाती हैं। सुना नहीं फलां की बहू...दुग्गलों की बेटी...के कपड़ों में आग लगने से मृत्यु हो गई। और भी ऐसे कई किस्से चर्चित हैं। (**यति**) क्या सोचने लगी बहन?

मां : क...क... कुछ नहीं...कुछ भी...तो...नहीं... (**थैली**) यह लें, भैय्या। पूरे चार सौ रुपए हैं।

खैराती : (**कांपते हाथों लेता हुआ**) क्या करूं, राधा बहन! ले भी न सकूं और लिए बिना रह भी न सकूं। मर क्यों न गया मैं?

मां : राम, राम, राम। आपको मेरी सौगंध। ऐसा कभी न सोचना, भैय्या।

खैराती : (**कांपते हाथों से जेब में डालते हुए**) अच्छा, तो मैं चलूं? हिम्मत नहीं रही कि सामने बैठ सकूं। (**जाने लगता है**)

मां : अभी बैठें, भैय्या।

खैराती : नहीं, राधा बहन। लेकिन मेरी शिक्षा भूल न जाना। (**प्रस्थान**)

मां : राधा को आप इतनी कच्ची समझते हैं, भैय्या। आप न भी समझाएं तो भी राधा सभी दांव पेच जानती है। मुझे कौन समझे?

(**अंधेरा और रोशनी**

(**पुरुषोत्तम सोफे में बैठा है। मां का प्रवेश**)

मां : कैसी है तुम्हारी सास?

पुरुषोत्तम : बहुत बीमार है। जाता रहूंगा देखने के लिए।

मां : (**तीखा स्वर**) क्या बीमारी है। खाती पीती तो है।

पुरुषोत्तम : सब खाना बन्द है। सिर्फ मौसम्मियों का रस और दूध चलता है।

मां : (**प्रस्थान करती हुई**) अरे बेटा! जिसे मौसम्मियों का रस और दूध मिल जाए उसे और क्या चाहिए। (**प्रस्थान के बाद पृष्ठभूमि से**) मैं कौशल्या के जहां जा रही हूं, बेटा!

पुरुषोत्तम : अच्छा मां। (**'ड्रैसिंग टेबल' से सिगरेट निकालता है और सोफे में टांगे पसार कर आराम से पीने लगता है।**)

देवदास : (**प्रवेश**) बड़े मस्त पड़े हो यार?

पुरुषोत्तम : (**सीधा बैठ कर**) देवदास तुम?

देवदास : हैरान क्यों हो गए? मैं आ नहीं सकता क्या?

पुरुषोत्तम : हां, हां! क्यों नहीं? लेकिन तुम तो कह रहे थे कि जल्दी में हूं। भाभी को 'थ्री व्हीलर' में भेज देना।

देवदास : और जब तुम उसे 'थ्री व्हीलर' में बिठा रहे थे तब मैं सामने टी स्टाल में से छिप कर देख रहा था।

पुरुषोत्तम : क्या मतलब?

देवदास : मतलब साफ है कि तुम्हारे पास बैठकर मैं दुख हलका कर लेता हूं। और दुख की जड़ साथ हो तो...

पुरुषोत्तम : अब क्या हुआ?

देवदास : होना क्या है? यही कि अभी तक तुमने बैठने के लिए भी नहीं कहा।

पुरषोत्तम : यह तुम्हारा अपना घर नहीं है?

देवदास : है तो।

पुरुषोत्तम : फिर कहना क्या है। मरज़ी हो, खड़े रहो, मरज़ी हो, बैठ जाओ।

देवदास : **(बैठता है)** तुमने यह भी नहीं पूछा कि आज स्कूटर की बजाए पैदल क्यों दौड़ रहे हो?

पुरुषोत्तम : मैं अन्दर बैठा हूं। मुझे कहां मालूम कि तुम कैसे दौड़ रहे हो? हां, बताओ।

देवदास : बन्द। सब बन्द। आज तीन दिन से स्कूटर बन्द। चार दिन से रेडियो बन्द। पांच दिन से वो बन्द यानि कि...सब बन्द ही बन्द। चक्का जाम।

पुरुषोत्तम : बड़ी खुशी की बात है। लेकिन किस लिए?

देवदास : क्योंकि तुम लड़ाई की जड़ को नहीं जानते।

पुरुषोत्तम : कौन सी जड़?

देवदास : वही, जिसे तुम 'थ्री व्हीलर' में बिठा कर छोड़ आए थे। दीपा।

पुरुषोत्तम : जानता हूं उसे। लेकिन वह लड़ाई की जड़ नहीं, मेरी भाभी है।

देवदास : भाभी होगी तुम्हारी। पर मेरे लिए तो ज़हर की पुड़ियां है।

पुरुषोत्तम : अब बात भी बताओगे कि नहीं?

देवदास : किसी भी चीज़ को हाथ तक लगा दूं तो काटने को दौड़ती है। पल छिन का चैन छीन लेती है। दहेज क्या लाई है कि बात-बात पर ताना देती है। कलेजे पर तीर चलाती है।

पुरुषोत्तम : अच्छा...! **(हलकी हंसी)**

देवदास : मेरा कलेजा छलनी हो रहा है और तुम्हें मज़ाक सूझ रहा है? हंसी आ रही है?

पुरुषोत्तम : **(तरसखाने का मुंह बना कर)** च...च...च...च

देवदास : जब भी किसी चीज़ को हाथ लगाओ तो कहती है...यह मेरे बाप ने दिया था। यह मेरे मामा ने दिया, यह मेरे चाचा लाए थे। यह

मेरे ताए के मामे के चाचे के भतीजे के लड़के ने दिया है। यह मेरे फलां-फलां ने दिया है।

पुरुषोत्तम : अरे, अगर किसी ने दिया है, तभी तो कहती है। न दिया होता तो न कहती। सच ही तो कहती है।

देवदास : इतना कहे तो सह भी लूं।

पुरुषोत्तम : **(मज़ाक)** अरे शुक्र कर इतना ही कहती है। यह तो नहीं कहती कि देवदास...तुम्हें भी मेरे बाप ने दिया है। इतना परहेज़ तो करती है न।

देवदास : अरे मज़ाक न कर पुरुषोत्तम। यों समझ कि मैं 'थ्री व्हीलर' के नीचे आया हुआ हूं। और धीरे-धीरे पहिया मेरे ऊपर चढ़ रहा है।

पुरुषोत्तम : शुक्र करो थ्री व्हीलर है, ट्रक नहीं। वरना कचूमर निकल चुका होता।

देवदास : तुम भी दीपा की तरफदारी करने लगे?

पुरुषोत्तम : भला मैं क्यों उसकी तरफदारी करने लगा?

देवदास : और क्या मतलब हुआ?

पुरुषोत्तम : याद करो जब तुम मेरे साथ बहस किया करते थे। कहा करते थे, 'जीवन में एक ही अवसर आता है, पुरुषोत्तम। जब इनसान मन चाही लाट्री निकाल सकता है। दहेज में मनचाही आइटम मांगने में कोई बुराई नहीं।' आया याद?

देवदास : याद तो है!

पुरुषोत्तम : अब मस्त रहो। तुमने तो मनचाही लाट्री निकाली है। जीवन के अवसर का लाभ उठाया है। अब रोना किस बात का?

देवदास : सचमुच मैं बे-अक्ल था, पुरुषोत्तम। तुम ठीक ही कहा करते थे। मुझे मांग नहीं करनी चाहिए थी।

पुरुषोत्तम : **(सिग्रेट पेश करता है)** अब तुम्हें हालात से समझौता करना ही पड़ेगा। 'काम्प्रोमाइज़' ही तुम्हारा हल है। समय सब ठीक कर देगा। 'टाइम इज़ द ग्रेटैस्ट हीलर'।

देवदास : कभी-कभी सोचता हूं कि मुझ से अच्छा कालीदास ही है। शादी में जो दहेज़ उसे अपने आप मिला, उसी में खुश है।

पुरुषोत्तम : तुम अपनी बात करो। तुम्हारी दशा एक भिखारी की थी। मांग-

मांग कर दहेज लिया था तुमने तो।

देवदास : भिखारी की क्यों! मेरी अपनी हैसीयत थी। 'स्टैंडर्ड' था। 'स्टेटस' था। मैंने भी समाज के साथ जीना है।

पुरुषोत्तम : सब कुछ होते हुए भी भिखारी ही थे तुम। सुन नहीं रखा क्या?
'आप दिया सो दूध बराबर, मांग लिया सो पानी।
झगड़ लिया सो मल समाना, कह गए ज्ञानी ध्यानी॥
उस समय तो अपनी मांग मनवाने के लिए तुमने पुरज़ोर बहस भी की थी। की थी न?

सरोद : **(प्रवेश करते हुए)** किस बात की बहस हो रही है?

पुरुषोत्तम : कुछ नहीं! इसकी आदत है बहसने की और बहस का फल भोगने की।

देवदास : नमस्ते भाभी!

सरोद : नमस्ते!

पुरुषोत्तम : अगर तुम थकी हुई न हो तो...दो कप चाए दे दो।

देवदास : नहीं मैं चलता हूं।

पुरुषोत्तम : अरे बैठ।

देवदास : जाने दे भाई। जल्दी में हूं।

पुरुषोत्तम : अरे जल्दी-वल्दी छोड़। यह सरोद है। दीपा नहीं।

देवदास : बाकी बातें फिर करूंगा। अब जाने दे। **(प्रस्थान करता हुआ)** कबाब में हड्डी भी तो नहीं बनना चाहिए मुझे।

सरोद : चले गए? मुझे देख कर। कोई खास बात थी क्या?

पुरुषोत्तम : नहीं। कोई ऐसी बात नहीं। वह पहले ही जा रहा था।

सरोद : मां जी कहां है?

परुषोत्तम : ज़रा कौशल्या जी के जहां गई हैं। तुम क्या देख रही हो?

सरोद : कुछ नहीं।

पुरुषोत्तम : तो आओ मेरे पास बैठो। आओ न। **(खींच कर सोफे में बिठाता है।)**

(अंधेरा और फिर रोशनी)

(सरोद बीमार लेटी है। मां का प्रवेश)

मां : क्यों? क्या हुआ बहू?

सरोद : यों ही बुखार-सा हो गया है।

मां : राम, राम! **(सरोद के पास जाती है)** दिखा तो नाड़ी। **(नाड़ी देखती हुई)** हूं! मुझे तो दिखाई नहीं देता?

सरोद : एक सौ दो है, मां जी। अभी-अभी थर्मामीटर लगाया था।

मां : एक सौ दो। राम, राम। तुझे बुखार नहीं। यों ही सुस्ती होगी।

सरोद : हो सकता है। **(दीर्घ श्वास)**

मां : हो क्या सकता है। उठ और उठ कर चल फिर। चलने फिरने से चुस्ती आएगी।

सरोद : मुझ से उठा नहीं जाता, मां जी। शरीर टूट रहा है। पीड़ाएं हो रही हैं।

मां : **(अलमारी में से एक दवाई की टिकिया लाती है)** ले, इसे खा ले। सब पीड़ाएं दूर हो जाएंगी। **(पानी देती है जिसके साथ सरोद टिकिया खाती है)** अब हिम्मत करके उठ जा। अरी...उठेगी तो सब ठीक हो जाएगा। यह शरीर है शरीर। चलता फिरता रहे तो ठीक रहता है। चल दो कप चाए बना। खुद भी पी और मुझे भी पिला। **(सरोद चारपाई से उतरती है लेकिन जमीन पर बैठ जाती है।)** अरी यहां क्या नीचे ही पड़ी रहेगी? पुरुषोत्तम आएगा तो न जाने क्या-क्या सोचेगा? मुझे बदनाम करने की ठानी है क्या? राम, राम। **(सरोद उठने का यत्न करती है)** पड़ी रहो। पड़ी रहो रानी साहिबा। इतनी ही नवाबी करनी थी तो बाप से कहना था एक नौकर भी साथ भेज देता। सोचा था...बहू आएगी तो राज भोगूंगी। उलटे बांस बरेली को। राम...राम...। यह खुद ही चारपाई पर लेटी रानी साहिबा बनी है। अरी उठती है कि नहीं। चल उठ और मेरे लिए चाय बना कर ले आ। पुरुषोत्तम भी आने वाला है।

सरोद : **(दर्द भरी मुस्कान)** आने तो वाले हैं वह भी।

मां : उसके लिए भी बना लेना। मुझ से नहीं बनेगी। हां!

सरोद : मां, जी! बुखार हो गया है मुझे। पूरा बदन टूट रहा है। पीड़ाएं जागी हैं।

मां : तो मरी क्यों जा रही है। बुखार ही तो है। चल उठ...

सरोद : उठा नहीं जाता, मां जी। **(रोने लगती है)**

मां : हुं। शैतान कहीं की। मैं तुझे मार पीट रही हूं जो रोने लगी। चाए बनाने के लिए ही तो कहा है। अब रो कर क्या दिखाती है? लोगों को सुनाना चाहती है कि सास बड़ी ज़ालिम है।

सरोद : **(उठने का यत्न करती है।)**

मां : अरी शुक्र करो भगवान का कि मुझ जैसी सास मिली है। कोई और होती तो कभी का मिट्टी का तेल डाल कर जला चुकी होती। समझी?

सरोद : **(हक्की-बक्की)** जी, समझ गई।

पुरुषोत्तम : **(बाहिर से आते हुए)** क्या हुआ मां?

मां : **(छल-छदमी ममता)** देख तो बेटा। बहू को क्या हुआ? सारा बदन तप रहा है। शुक्र है तू आ गया। **(पुरुषोत्तम सरोद के माथे पर हाथ लगाता है और बांह पकड़ कर नाड़ी देखता है।)**

पुरुषोत्तम : इसे तो बुखार है, मां! **(सरोद को उठा कर चारपाई पर लिटाता है।)** लेटो, सरोद! इतने तेज़ बुखार में हवा लग सकती है।

मां : बेचारी चार घंटों से तड़प रही है। मैंने एक टिकिया भी दी है, इसे।

पुरुषोत्तम : अच्छा?... मैं इसे डाक्टर के पास ले जाता हूं।

मां : कहां बेटा! यह तो उठ भी नहीं सकती।

पुरुषोत्तम : तो डाक्टर को ही यहां बुला लेता हूं। मैं चला, मां। तु इसका ध्यान रखना। **(प्रस्थान)**

मां : मैं ध्यान नहीं रखुंगी तो कौन रखेगा बेटा? **(सरोद से)** देखो, बहू! मैं ठहरी बुढ़िया तुम्हारी मां जैसी। न जाने मेरी अक़्ल क्यों मारी जाती है। कुछ समझ में नहीं आता। तुझे इतना बुखार था और मैं तुझे...। खैर! इतना कुछ मेरे पुरुषोत्तम को न बताना। मन ही मन तू जितना चाहे कोस लेना। समझी।

(अंधेरा और फिर रोशनी। सरोद बैठी है। पुरुषोतम खड़ा है)

पुरुषोतम : **(सोच में डूबी गुम-सुम बैठी सरोद को कुछ पल अवाक देखने के बाद)** सरोद?

सरोद : ज...ज...जी?

पुरुषोत्तम : तुम कुछ सोच रही हो? क्या सोचती हो?

सरोद : कुछ नहीं।

पुरुषोत्तम : तो फिर यह उदासी किस लिए?

सरोद : यों ही!

पुरुषोत्तम : योंही भी कोई उदास हुआ करता है, भला?

सरोद : कहा न! कुछ भी नहीं है। **(घुटी-घुटी सी रो उठती है।)**

पुरुषोत्तम : तो फिर यह रोना कैसे आ गया।

सरोद : **(दबी-दबी फफकियां)**

पुरुषोत्तम : सरोद? सरोद? बताओ सरोद, क्या बात है? तुम कुछ कहती क्यों नहीं? बोलो!

देवदास : **(प्रवेश द्वार से)** क्या मैं अन्दर आ सकता हूं? **(सरोद आंसू पोंछने का एक दम यत्न करती है)** भाभी रो क्यों रही है?

पुरुषोत्तम : यही तो मैं पूछ रहा हूं। कुछ कहती ही नहीं।

देवदास : हूं...। समझा। **(सरोद उठने लगती है)** आप बैठिए भाभी जी। बैठिए न!

सरोद : कहिए। **(पुरुषोत्तम बारी-बारी दोनों पर दृष्टी डालता है।)**

देवदास : **(सरोद से)** यह लीजिए अपनी इमानत। **(रुपए आगे बढ़ाता है। सरोद भी हाथ आगे बढ़ाती है। पुरुषोत्तम से)** माफ करना भाई। भाभी ने मजबूर किया था। कसम दे दी थी।

पुरुषोत्तम : लेकिन यह रुपए हैं कैसे?

देवदास : तुम्हें दस हज़ार रुपयों की ज़रूरत थी। सो भाभी ने मुझे सब बता दिया था। और अपने लगभग सभी गहने बेच दिए।

पुरुषोत्तम : गहने बेच दिए? स...रो...द...। **(पुरुषोतम और सरोद कुछ पल के लिए एक दूसरे को देखते पढ़ते रहते हैं। देवदास इन दोनों को देखता रहता है।)**

सरोद : मुझे गहनों की नहीं, आपकी जरूरत है।

देवदास : मैंने बहुत मनह किया। रोका। लेकिन भाभी ने ऐसी कसम डाल दी...उसी से मजबूर हो गया था।

पुरुषोत्तम : **(सरोद से)** पर तुम पहनोगी क्या?

सरोद : आप ठीक रहे तो और भी बन सकते हैं। न भी बनें तो क्या? मेरा असली गहना तो आप हैं।

मां : **(पृष्टभूमि से)** बहू...। अरी ओ बहू...।

सरोद : **(उठकर जाने लगती है)**

देवदास : कहां जा रही हो, भाभी?

सरोद : मां जी बुला रही हैं।

मां : **(पृष्टभूमि से)** बहू...। बहू...।

देवदास : नहीं भाभी। तुम नहीं जाओगी। **(सरोद जाना चाहती है)** बैठ जाओ, भाभी। **(पुरुषोत्तम से)** शायद तुम्हारा कहा मानेगी। कहो इसे।

पुरुषोत्तम : बैठ जाओ सरोद। **(सरोद अनमनी-सी बैठ जाती है)**

मां : **(पृष्ठभूमि से)** क्या हो गया है इसे? इतनी आवाज़ें देती हूं। सुनती ही नहीं। प्राण सूली पर चढ़ा दिए हैं इसने। **(सहसा पश्चाताप)** राम, राम। क्या कह गई मैं भी? **(प्रवेश)** बहू! ज़रा सुन तो।

सरोद : आती हूं, मां जी!

देवदास : ज़रा इन्तज़ार करें, मां जी। एक ज़रूरी काम से रोक लिया है भाभी को।

मां : अच्छा-अच्छा! मैं समझी कि... **(प्रस्थान)**

देवदास : **(खोजी मुद्रा)** जब मैं आया था, भाभी फूट-फूट कर रो रही थी। क्या बात थी? बोलो भाभी।

सरोद : कोई ऐसी बात नहीं।

देवदास : कुछ तो थी। रुपयों और गहनों की बात थी क्या?

सरोद : आप कैसी बात करते हैं, भैय्या। ऐसी कोई बात नहीं।

देवदास : तो फिर क्या बात थी? पुरुषोतम ने कुछ कहा?

सरोद : भैय्या?

देवदास : अगर ऐसा कुछ भी नहीं था तो...। **(सीधे ढंग से)** पुरुषोत्तम यह प्रश्न तो मैं यों ही पूछ रहा था सरोद से। शायद भाभी खुद ही कुछ कहे, इसलिए।

पुरुषोत्तम : यह बेचारी क्या कहेगी?

देवदास : यही तो सितम है, पुरुषोत्तम। कि यह कुछ भी नहीं कह रही।

पुरुषोत्तम : क्या मतलब?

देवदास : पुरुषोत्तम! मैं समझता था...शांत और सुखी परिवार किसी ने देखना हो तो वह तुम्हारा घर देखे। लेकिन मालूम नहीं था कि यहां अन्दर ही अन्दर दीमक लगी हुई है।

पुरुषोत्तम : साफ-साफ कहो क्या बात है?

देवदास : एक नाटक जो मैं अपनी आंखों से देख चुका हूं, अपने कानों से सुन चुका हूं...क्या यह रोना धोना उसी का अंश नहीं?

सरोद : कौन-सा नाटक, भैया?

देवदास : उसी दिन का जिस दिन तुम बीमार थीं और मां जी तुम्हें उलटा-पुलटा न जाने क्या कुछ कह रही थीं। दहेज के ताने भी दे रही थीं। उठ कर चाए बनाने को मजबूर कर रही थीं। और...

सरोद : भैय्या...?

देवदास : मुझे बोलने दीजिए भाभी। मां जी आपको गालियां दे रहीं थीं। खोटी-खोटी सुना रही थीं।

पुरुषोत्तम : देवदास?

देवदास : सच कह रहा हूं, मां जी के राज दुलारे। उस वक्त मैं आया था लेकिन अन्दर न दाखिल हो सका। **(दीर्घ श्वास)** एक बार तुम्हारे प्यारे-प्यारे आदरणीय मामा जी भी मां जी को पट्टी पढ़ा रहे थे कि बहू से छुटकारा पाने के लिए मिट्टी का तेल डाल कर...।

मां : **(प्रवेश)** लुच्चे। लफंगे। तू हमारे घर में आग लगाने आया है।

देवदास : क्षमा करें मां जी! मैं इनमें से एक भी नहीं। देवदास हूं। और सच-सच ही होता है।

मां : क्या सच है? तुम जैसे लोग बहू बेटियों को भड़काने के सिवा, बेटों को बहकाने के सिवा कोई काम भी कर सकते हैं? **(सरोद से)** क्यों बहू...बोल। तू क्यों नहीं बोलती? तेरी ज़बान जली है क्या? बिच्छु क्यों डस गया तुम्हें जन्म जली?

देवदास : अभी-अभी जो बोल रही हैं, मां जी...यह सब मेरे कहे का प्रमाण है। खैर, बहू से ही पूछ रही हैं तो पूछ लें।

पुरुषोत्तम : मेरी कुछ भी समझ नहीं आ रहा। क्या हो रहा है यह?

देवदास : आ जाएगा सब समझ आ जाएगा। **(सरोद से)** क्यों भाभी। बोलिए।

सरोद : **(असमंजसता में बारी-बारी सब की ओर देखती है)**

पुरुषोत्तम : तुम्हें कहना चाहिए सरोद बोलो।

देवदास : आपको पुरुषोत्तम की कसम, भाभी। बोलें। सच-सच बोलें।

सरोद : देवदास भैया?

मां : नमकहराम। तुझे मेरा ही बेटा मिला सौगंध डालने के लिए। निकल जा। निकल जा मेरे घर से। अभी। इसी समय। निकलता है कि नहीं?

पुरुषोत्तम : ठहरो मां। बात पूरी होने दो।

मां : बहक गया। तू भी बहक गया इस बेइमान की बातों से? तू कैसा बेटा है मेरा? मैं कहती हूं इसकी बातों पर न जा। यह... यह...

देवदास : तुम इतना ही कहो भाभी... जो मैंने, इस देवदास ने कहा है वह सच है कि झूठ! जल्दी बोलो, भाभी। यह दुष्ट एक बार फिर पुरुषोत्तम की कसम डालता है, बोलो। सच है कि झूठ?

सरोद : **(सहमी-सी)** सच है। सब...सच है।

पुरुषोत्तम : **(हक्का बक्का परेशान)** मां?

देवदास : बोलो मां जी! अब भी कोई कसर है?

मां : चाण्डाल! बेशरम! बेहया! तू सामने-सामने अपनी मां जैसी सास पर इल्ज़ाम लगा रही है?

पुरुषोत्तम : जब सब सच है तो इल्ज़ाम कैसा, मां? बोल तू ने यह सब **(खैराती आ कर द्वार से लौटने लगता है तो मां की नज़र पड़ जाती है।)** क्यों किया? क्यों इसे सताती रही? मेरे सामने तो तू कभी ऐसी न हुई?

मां : **(खैराती की ओर लपकती हुई)** कहां जाते हो, भैय्या? कहां भाग रहे हो यहां से? आओ। **(बांह पकड़ कर खींच लाती है)**

खैराती : जाने दे मुझे। मेरा तुम्हारी तरह इन पचड़ों से क्या काम? अपना घर जैसा भी हो, तू ही सम्भाल।

मां : हां, हां। आ तो सही। आया कैसे था? चला कैसे?

खैराती : हां, हां तुम्हारी तरह आया था किसी काम से पर...

देवदास : लो पुरुषोत्तम! सामने घोड़ा और सामने मैदान। तुम खुद ही पूछ लो अपने मामा जी से।

खैराती : मैंने कहा जाने दे मुझे। तुम्हारी तरह तू ही अपना घर सम्भाल।

मां : सम्भालती हूं और तुम्हें भी सम्भालती हूं, मुए। **(दर्शकों के सामने लाती है)** बोल-बोल भैया। कैसा भाई है तू? तू ही मुझे शिक्षा देता रहा और मैं उस पर चलती रही। इस उम्र में मिट्टी खराब करने लगा था मेरी?

खैराती : मैं कौन होता हूं मिट्टी खराब करने वाला तुम्हारी तरह...

मां : तू नहीं तो और कौन है?

खैराती : तू खुद ही तो कहा करती थी...बहू दहेज कम लाई है। तुम्हारी तरह...। उसमें मेरा क्या कसूर है, तुम्हारी तरह?

मां : ज्यादा न बोल दगाबाज़।

खैराती : अब मैं दगाबाज़ हो गया। तब तो तू ही कहा करती थी कि दहेज ऐसा है। बहू ऐसी है। बहू वैसी है तुम्हारी तरह। तो मैं क्यों पीछे रहता तुम्हारी तरह? तू ने कहलवाया और मैंने कहा, तुम्हारी तरह।

मां : बहुत अच्छा सिला दे रहे हो? मैं समय समय पर तुम्हारी सहायता करती रही। जब-जब जितने-जितने रुपयों की ज़रूरत पड़ी तुम्हें, देती रही। चोरी से। सब से छिपा कर और तुम...

खैराती : तुम रुपए देती रही। मैं रुपए लेता रहा तुम्हारी तरह। कोई ज़बरदस्ती तो नहीं की मैंने तुम्हारी तरह।

मां : ज़बरदस्ती? तूने तो ज़बरदस्ती से भी ज़्यादा ज़बरदस्त चाल से काम लिया। जब रुपए नहीं चुका सका तो और-और लेने के लिए बातों से फुसलाता रहा। बहकाता रहा। मुझे समझाने की बजाए भटकाता रहा। **(रुआंसी)** एक मैं थी .... मैं थी जो बिना सोचे समझे तेरी चिकनी-चुपड़ी बातों में आ गई।

खैराती : आखिर तुम्हारी तरह मैं भी तो ....

पुरुषोतम : **(मां से)** घर में रुपए थे और मैं दर बदर होता रहा, मां? यही बहू है मां जिसने अपने गहने बेच कर मेरी और मेरी नौकरी की रक्षा की है। इसी बहू को तूने इतना तंग किया, मां? इसी बहू को? खैरात पर पलने वाले, खैराती मामा के बहकावे में आ कर। इस कंस के .... **(खैराती खिसकने लगता है।)**

मां : मेरी अक्ल पर पत्थर पड़ गए थे बेटा जो मैं इस खैराती की बातों में आ गई। **(खैराती को खिसकता देख कर)** आग लगा कर कहां चला बेशरम?

खैराती : **(जाते हुए)** अब क्या हो सकता है। आग बुझा सके तो बुझा ले। मैं तो चला तुम्हारी तरह।

देवदास : बुझेगी। यह आग ज़रूर बुझेगी। जो हो गया सो हो गया। मां जी! वादा करें कि अब आप दहेज के लिए या किसी और बात के लिए भाभी को कुछ न कहेंगी।

मां : मैं बिलकुल नहीं कहुंगी। बिलकुल नहीं। राम, राम। **(पुरुषोत्तम से)** नाराज है मुझसे, बेटा? **(सरोद की पीठ पर हाथ रख कर)** बहू! तू मेरी बहू ही नहीं, घर की लक्ष्मी भी है। मुझे अपने किए पर बहुत पश्चाताप है। मुझे माफ कर दो बहू।

सरोद : यह आप क्या कह रही हैं, मां जी।

मां : सुखी रहो! खुश रहो, बेटी। लानत है मुझ जैसी सासों पर जो अपनी नासमझी के कारण अपनी बहुओं को समझ नहीं पातीं और दहेज के लिए उन्हें कोसती रहती हैं। मैंने बहुत भूल की है बेटी। इस घर में मेरे लिए तुम्ही दहेज हो।

आस-पास

लेखन : 1995

पात्र

क्रमांक एक से बारह

बच्चा क्र० एक से पांच

मज़दूर एक

मज़दूर दो

पुरुष अध्यापक

महिला अध्यापक

माता एक से तीन

पिता एक से तीन

वृद्ध

किशोर-एक

[मंच पर कम से कम बारह अथवा आवश्यकतानुसार अधिक पात्र एक घुटने के बल पर बैठे हैं। एक तिहाई दाएं विंग के साथ, शेष के आधे बाएं विंग के साथ और शेष सामने के विंग के साथ। संध्या से कुछ पहले का समय है। पृष्ठभूमि से लोगों की भगदड़, मार-धाड़, चीख पुकार इत्यादि के मिले जुले स्वर सुनाई देते हैं–मारो, पकड़ो, हाय, आह, चल साले, उल्लू के पट्ठे और इन सब पर हावी होते अकेले स्वर-नास्तिक है, गद्दार है, हरामी है इत्यादि।

कुछ समय बाद यह भगदड़ धीरे-धीरे विलीन हो जाती है।

दाएं और बाएं विंग वाले आपस में अभिनय युक्त रहस्यमयी खोजी दृष्टियां मिलाते हैं। सामने के विंग वाले भी हक्के-बक्के दिखाई देते हैं।]

क्रमांक 4 : (घूमकर क्र० 3 से) कुछ कहा तुमने?

क्रमांक 3 : (घूमकर क्र० 2 से) तुमने कुछ कहा?

क्रमांक 2 : (घूमकर क्र० 1 से) तुमने कहा कुछ?

क्रमांक 1 : (बारी बारी 4, 3 और 2 के पास जाता है) तुमने? तुमने? तुमने कहा कुछ?

(कोई उत्तर न पाकर अपनी जगह पर आ कर खड़ा हो जाता है।)

क्रमांक 8 : (घूमकर क्र० 7 से) कुछ सुना तुमने?

क्रमांक 7 : (घूमकर क्र० 6 से) तुमने कुछ सुना?

क्रमांक 6 : (घूमकर क्र० 5 से) तुमने सुना कुछ?

क्रमांक 5 : (बारी-बारी 6, 7 और 8 के पास जाता है।) तुमने सुना? तुमने सुना? तुमने सुना कुछ?

(कोई उत्तर न पाकर अपनी जगह पर आकर खड़ा हो जाता है।)

क्रमांक 12 : (घूमकर क्र० 11 से) कुछ देखा तुमने?

क्रमांक 11 : (घूमकर क्र० 10 से) तुमने कुछ देखा?

क्रमांक 10 : (घूमकर क्र० 9 से) तुमने देखा कुछ?

क्रमांक 9 : (बारी-बारी 10, 11 और 12 के पास जाता है) तुमने देखा, तुमने देखा, तुमने देखा कुछ?

(कोई उत्तर न पा कर अपनी जगह पर आ कर खड़ा हो जाता है।

तीनों पंक्तियों के पात्र खोजी मुद्राओं में अपनी जगहों पर घूमने के बाद पहले की तरह खड़े हो जाते हैं। आपस में एक दूसरी पंक्ति का प्रश्नात्मक मौन मूल्यांकन करते हैं।)

दायीं पंक्ति : (सामनी पंक्ति से सामूहिक) तुमने कुछ कहा?

सामनी पंक्ति : (सामूहिक) तुमने कुछ सुना? (घूमकर बायीं पंक्ति से) तुमने कुछ सुना?

बायीं पंक्ति : (सामूहिक) तुमने कुछ देखा? (घूमकर दायीं पंक्ति से) तुमने कुछ देखा?

(तीनों पंक्तियों के पात्र क्रमांक 1-5-9, 2-6-10, 3-7-11, 4-8-12 के क्रम में एक साथ अपना अपना संवाद बोलते हुए मंच पर आगे आ कर एक कतार में खड़े हो जाते हैं। कुछ पल एक दूसरे का मुंह देखने अथवा एक दूसरे की मुद्राएं आंकने के पश्चात दर्शकों की ओर ताकने लगते हैं।)

दायीं पंक्ति : (दायां बाज़ु और कनिष्ठिका उठा कर एक साथ) आपने कुछ कहा?

(स्थिर बैठ जाते हैं। प्रकाश कुछ मद्धम होता है।)

सामनी पंक्ति : (दायां बाज़ु और कनिष्ठिका उठा कर एक साथ) आपने कुछ सुना?

(स्थिर बैठ जाते हैं। प्रकाश कुछ और मद्धम होता है।)

बायीं पंक्ति : (दायां बाज़ु और कनिष्ठिका उठा कर एक साथ) आपने कुछ देखा?

(स्थिर बैठ जाते हैं। प्रकाश और अधिक मद्धम होता है। दृश्यानुरूप संगीत का प्रयोग वांछनीय है। धीरे-धीरे प्रकाश इतना मद्धम हो जाता है कि बैठे हुए सभी पात्र अपने अपने खोल में से बारी बारी गर्दनें निकालते कछवों जैसे दिखाई देते हैं। पहले दायीं पंक्ति धीरे-धीरे खड़ी होती है। अपनी अपनी टार्चें जो इन पात्रों ने अपने अपने अंगोछों इत्यादि से बांध कर अथवा किसी और ढंग से सुरक्षित रखी थीं, निकाल कर चारों ओर कुछ तलाशता प्रकाश फैंकती है। इसके बाद बायीं और फिर सामनी पंक्ति। टार्चों का यह

प्रकाश हर पंक्ति के पास अलग अलग रंग का हो तो अच्छा है। तलाशता प्रकाश फैंकने के साथ साथ तीनों पंक्तियों की मुनमुनाहटें शुरू होती हैं जो धीरे-धीरे स्पष्ट शब्दों का रूप धारण कर लेती हैं।

दायीं पंक्ति : न किसी ने कुछ कहा।

सामनी पंक्ति : न किसी ने कुछ सुना।

बायीं पंक्ति : न किसी ने कुछ देखा।

दायीं पंक्ति : सब गूंगे हैं।

सामनी पंक्ति : सब बहरे हैं।

बायीं पंक्ति : सब अंधे हैं।

(टार्चों के तलाशते प्रकाश और अपने अपने संवाद के साथ तीनों पंक्तियां मंच पर एक गोलाकार चक्कर लगाने के बाद अर्धचक्र में रुककर प्रासाद में दर्शकों पर दूर तक प्रकाश फैंकतीं हुईं सामूहिक व्यंग्य में हंसती हैं।)

हां, हां। सब गूंगे ही हैं। बहरे हैं। अंधे भी।

(इसी सामूहिक संवाद के साथ तीनों पंक्तियां पूर्ववत गोलाकार में एक अथवा दो चक्कर लगाकर कतार में प्रस्थान करती हैं। इसके होते पृष्ठभूमि से सामूहिक गायन सुनाई देता है।)

आओ करें हम तलाश, दोष दूसरों के
और करें आरोपों की वर्षा मूसलधार
देख सके न ताकि कोई
हम क्या कहते हैं
हम क्या करते हैं
और देखते हैं क्या अंधे होकर।
आओ करें हम तलाश,
दोष दूसरों के
और करें आरोपों की वर्षा मूसलधार॥

(मंच दो भागों में बंटा है। प्रकाश बाएं भाग को उजागर करता है। अलग अलग तरीकों से अपने भारी भरकम बस्ते उठाए हुए थके हारे कुछ बच्चे प्रवेश करते हैं और अलग अलग जगहों पर अलग अलग मुद्राओं में खड़े हो जाते हैं।)

बच्चा-1 : **(प्रवेश)** अजीब मुसीबत है यह बसता भी। उफ...!

बच्चा-2 : **(प्रवेश)** बसता न हुआ कि भारी भरकम बोरी हो गया। आह् .....।

बच्चा-3 : **(प्रवेश)** अभी प्राइमरी क्लास में यह दशा है तो आगे न जाने क्या होगी? ओह्......!

बच्चा-4 : **(प्रवेश)** इस बस्ते ने तो हम बच्चों को, बच्चे ही नहीं रहने दिया। क्या तमाशा है?

बच्चा-1-2-3 : **(व्यंग्य से)** अंतर्राष्ट्रीय बाल दिवस क्या, बाल-वर्ष....! पूरे बाल वर्ष तो बहुत बातें हुईं थीं।

बच्चा-4 : हां, हुईं थीं।

बच्चा-1 : बहुत योजनाएं बनी थीं, हम बच्चों के लिए।

बच्चा-2 : बजट तैयार किए गए थे।

बच्चा-3 : तैयार ही नहीं। खर्च भी किए गए थे।

बच्चा-1-2-4 : **(हक्के-बक्के)** खर्च भी किए गए थे?

(सभी बच्चे बच्चा-3 की बातों पर अलग अलग हक्के-बक्के चेहरे और मुद्राएं धारण करते हैं)

बच्चा-3 : योजनाएं बनाने वालों की नौकरी पक्की रही। वेतन बना रहा। **(बच्चों की बदलती मुद्राएं)** योजनाओं पर अनुसंधान होते रहे। अनुसंधान करने वाले पारिश्रमिक पाते रहे।

(बच्चों की बदलती मुद्राएं)

रिसर्च पेपर छपे। प्रचारित हुए। लेखकों और कवियों ने गीत लिखे। नाटक लिखे। निबंध लिखे। पारिश्रमिक पाया। नाम कमाया। **(बच्चों की बदलती मुद्राएं)**

और ..... और .....

बच्चा-1 : हम बच्चों पर फिल्में बनीं।

बच्चा-2 : नए नए स्वास्थ केंद्र खुले।

बच्चा-4 : लेकिन हमें क्या मिला? वही ढाक के तीन पात?

बच्चा-1 : हमारे बस्तों का वज़न और बढ़ गया।

बच्चा-2 : **(खीझता है)** धत तेरे की। कहां याद दिला दी बस्ते की?

बच्चा-4 : बहुत मुश्किल से भूल पाए थे।

(सभी बच्चे दबे दबे से अपने बसतों को नीचे सरका देते हैं जैसे बोझ के कारण उठाया नहीं जा रहा। बीच बीच में तुनक कर उन्हें ऊपर उठाते हैं लेकिन कुछ ही पल में वह फिर नीचे सरक जाते हैं और ज़मीन तक पहुंच जाते हैं। बच्चे कुछ कुछ हलका अनुभव करने लगते हैं। एक और बच्चा-5 अपने कद से भी बड़ा बस्ता घसीटता हुआ-सा प्रवेश करके जा रहा है। सभी बच्चे उसे हैरानी से देखने लगते हैं।)

बच्चा-1 : कहां जा रहा है, राजकुमार?

बच्चा-2 : आओ हमारे साथ।

बच्चा-5 : (चलता चलता उपेक्षा से) नहीं आऊंगा।

बच्चा-3 : अरे, आओ भी।

बच्चा-5 : कहा न। नहीं आऊंगा।

बच्चा-4 : जैसी तुम्हारी मरज़ी, भाई।

बच्चा-5 : (रुककर देखता हुआ) इस में मरज़ी का क्या सवाल। मुझे घर जा कर पढ़ना है। अनजीनीर (इंजीनियर) बनना है। बड़ा होकर बड़ा आदमी बनना है। हां....!

बच्चा-1 से 4 : (एक साथ हंसते हैं)

(बच्चा-5 अपना बस्ता घसीटता हुआ दूसरे विंग से प्रस्थान करता है। बच्चे 1 से 4 प्रेरित मन से एक दूसरे की ओर देखते हुए अपने अपने बस्ते उठा लेते हैं। तभी दो मज़दूर-एक पीठ पर भरी बोरी उठाए हुए, दब रहा है तो दूसरा सिर पर उठाए हुए, एक विंग से प्रवेश करते हैं।)

मज़दूर-1 : (रुककर पसीना पोंछता हुआ) या खुदा। हिम्मत दे। (चलने लगता है) या अल्लाह!

मज़दूर-2 : (रुककर पसीना पोंछता हुआ) क्या जीना है मेरा। हे भगवान! (चलने लगता है) वाह रे, मेरे राम! क्या लीला है तुम्हारी।

मज़दूर-1 : (प्रस्थान करने से पहले सभी बच्चों को ध्यान से देखता और दांत निकाल कर हंसता है।) ऐ मेरे खुदा! तुमने इन

मासूम बच्चों को अभी से हम जैसा बना दिया? कैसा इनसाफ है तेरा? (**पल भर देखकर प्रस्थान**)

मज़दूर-2 : (**मज़दूर-1 की तरह करके**) कल न जाने क्या बनेंगे ये, बच्चे? (**खीझकर**) हूँ! बनेंगे। यों निठल्लेपन से भी कोई कुछ बना है, कभी? बनने वाला तो गया आगे। कह रहा था-अंजीनीर बनूंगा। बड़ा होकर बड़ा आदमी बनूंगा। हां-ऽ...? (**प्रस्थान**)

सभी बच्चे कुछ देर इन मज़दूरों के प्रस्थान की ओर देखते रहते हैं। इसी बीच मज़दूर-1 और मज़दूर-2 के अभी-अभी के टेप किए हुए संवाद अथवा बच्चों के स्वर में ये संवाद बार-बार 'ईको' करते हैं। इनका ऐसा प्रभाव दिख़ाई देता है कि सभी बच्चे अपने-अपने बस्तों को कंधों या पीठ से 'स्ट्रेप' खोल कर मुक्त करते हैं और आज़ादी का जैसा सांस लेते हैं। बाल-नृत्य की मुद्राओं में थिरकते और नाचते हैं। कुछ और बच्चों का एक दल प्रवेश करता है और इन्हें देख कर अपने बस्ते फैंकता हुआ। नाच गाने में शामिल हो जाता है।

– सामूहिक भंगडा इत्यादि –

(पूरा होते-होते नाच जब अपने अंतिम चरणों में होता है : बच्चा-1 समूह में से खिसक कर अपना बस्ता टटोलने लगता है। एक दो कापियां खोलकर देखता है। नाच रहे बच्चे उसकी ओर देखते हुए थम कर स्थिर हो जाते हैं। बड़े घंटे की समान अंतराल से बजने की ध्वनियों के साथ-साथ पृष्ठभूमि से क्लास-टीचरों के स्वर ईको करते हैं। हर संवाद से बच्चे सिहर-सिहर कर मुद्राएं बदलते हैं।)

पुरुष अध्यापक : क्यों नहीं किया घर का काम? बोलो!

महिला अध्यापक : बोलते क्यों नहीं? क्यों नहीं किया 'होम टास्क'?

पुरुष अध्यापक : चल वहां! चल! चल उस 'कार्नर' में। बन जा मुर्गा।

महिला अध्यापक : बनता है कि नहीं? मैं कहती हूं, फौरन मुर्गा बन जा।

पुरुष अध्यापक : तुझे 'फाइन' करना पड़ेगा। दस रुपए से कम नहीं।

महिला अध्यापक : जब तक 'फाइन' नहीं लाएगा। क्लास में नहीं बैठने दूंगी। समझा? समझा कि नहीं?

पुरुष अध्यापक : गधा कहीं का। रोज़ पूछो, रोज़ एक ही जवाब।

महिला अध्यापक : (नकल) बिजली चली गई थी। पैन का रिफल खत्म हो गया था।

पुरुष अध्यापक : बहुत होश्यार बनता है। (नकल) मम्मी बीमार थी। खाना पकाना पड़ा।

महिला अध्यापक : (नकल) बर्तन धोने पड़े। सफाई करनी पड़ी। (खीझ) हुं!

पुरुष अध्यापक : (खीझ) हुं!

(धीमे-धीमे शुरू हो कर आंधी तूफान सा मचाने लगती है। सभी बच्चे अपने-अपने आप को सम्भालने के यत्न करते हैं। कोई आंखें मलने लगता है। कोई माथे और आंखों के आगे अपना एक या दोनों बाज़ू रख लेता है। कोई रूमाल से सिर और मुंह ढांप लेता है। बादलों की हलकी-हलकी गर्जना शुरू होती है। बिजली की चमक में कुछ बच्चे दुबक कर अलग-अलग मुद्राओं में। बैठ जाते हैं।

धीरे-धीरे बादल छंटते हैं। आंधी थम जाती है। सहमे हुए बच्चे एक दूसरे के गलबाहें डाले हुए, हाथों में हाथ थामे हुए गिरे पड़े लेटे दिखाई देते हैं। बैठते हुए सभी की नज़रें एक दूसरे जोड़ों के साथ मिलती हैं। जैसे जीवन की किरण दिखाई दे रही हो। तभी इनकी आंखें स्थिर मुद्रा में आकाश की ओर लग जाती हैं।

माताएं और पिता : (पृष्ठभूमि से सामूहिक चिंतित स्वर) कहां गए हमारे बच्चे? कहां गए? इतनी आंधी? इतना तूफान? या अल्लाह! हे भगवान सब को सलामत रखना। सब की रक्षा करना। आप नूं परशाद चढ़ावां गे, वाहे गुरु जी। असी सारे ही तुसां दी दया दे पात्तर हैगे।

(आकाश की ओर देखते हुए सभी बच्चे एक-एक कर सुनाई देते स्वरों की ओर कान लगाते हैं। माताएं

और पिता अलग-अलग दिशाओं से प्रवेश करते हैं। इन्हें देख कर सभी बच्चे एकदम कुतूहलवश खड़े हो जाते हैं। कुछ अपनी-अपनी माता को 'मम्मी...ऽ...' और कुछ अपने-अपने पिता को 'पापा...ऽ...' पुकारते हुए अधीरता से आगे बढ़ते और उनसे लिपट जाते हैं। माताएं और पिता अथाह ममता के साथ उन्हें अवाक थपकते, चूमते, गले से लगाते खुशी के आंसू बहाते हैं।

वे बच्चे जिनके माता या पिता नहीं आए हैं, घोर निराशा अनुभव करते हैं और इनकी ओर देखते हुए एक-एक कर प्रस्थान करने लगते हैं। विंग से बाहिर जाने से पूर्व वे एक साथ पीछे देखते हुए स्थिर हो जाते हैं।)

माता-1 : कितने प्यारे बच्चे हैं!

पिता-1 : बिलकुल मेरे दीपक की तरह!

माता-2 : अल्लाह का नूर अगर देखना हो तो कोई बच्चों में देखे।

पिता-2 : इन्हें देख कर मुझे सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता याद आ रही है-'सखी री, मेरा बचपन लौट आया।'

माता-3 : अपने रवीन्द्रनाथ टेगोर ने कहा है- 'जब कोई बच्चा इस संसार में आता है तो यही संदेश ले कर आता है कि भगवान अभी इनसान से रूठा नहीं है।'

पिता-3 : अव्वल अल्लाह नूर ओ पाया, कुदरत दे सब बंदे!

सभी माता पिता : 'अव्वल अल्लाह नूर ओ पाया, कुदरत दे सब बंदे।'

(कहते हुए एक दूसरे के पास आ खड़े होते खुश-खुश दिखाई देते हैं।)

पिता-3 : (बच्चों से) आओ मेरे होनहारो। कल दे इन्जीनियरो, डाक्टरो, देश दे निर्माताओ! मेरे सीने नाल लग जावो।

[माता-पिताओं वाले बच्चे विंग के पास स्थिर खड़े बच्चों की ओर अपनी बाहें पसार देते हैं। उन बच्चों के चेहरों पर शनैः-शनैः मुस्कानें झलक उठती हैं।]

सभी माता-पिता : आओ, हमारे साथ आओ। हम तुम्हें तुम्हारे घरों तक पहुंचा देंगे। आओ! आओ हमारे बच्चो! (दोनों ओर के दल कदम-कदम एक साथ आगे बढ़ते हैं और आपस में हाथ थाम लेते हैं। हंसते हैं और प्रस्थान करते हैं।)

(3)

(बच्चा-5 अपने कद से भी बड़ा बस्ता लिए उसे घसीटता-सा उसी विंग से प्रवेश करता है, जिससे उसने प्रस्थान किया था। रुक कर उस जगह की ओर देखता है जहां उसने बच्चे देखे थे। उसे टेप किए हुए उन बच्चों के संवादों की अनुगूंज सुनाई देती हैं।)

बच्चा-1 : कहां जा रहा है, राजकुमार?

बच्चा-2 : आओ हमारे साथ।

बच्चा-3 : अरे आओ भी।

बच्चा-4 : जैसी तुम्हारी मरज़ी, भाई।

बच्चा-5 : (याद आने पर) इश में मरजी का क्या शवाल। मुझे घर जा कर पढ़ना है। अनजीनीर (इंजीनियर) बनना है। बड़ा हो कर बड़ा आदमी बनना है। हां...ऽ...। (हंसता है)

बच्चे 1 से 4 : (एक साथ हंसी की गूंज)

(बच्चा-5 हंसी की गूंज के साथ-साथ अपना बस्ता घसीटता हुआ प्रस्थान करता है। प्रकाश काफी मद्धम हो जाता है।)

बारह पात्र : (मद्धम प्रकाश में नाटक के शुरु वाले पात्र अपनी-अपनी टार्चें जगाए हुए कतार में प्रवेश करते हैं और मंच पर चक्कर लगाते हुए बार-बार बोलते हैं।)

न किसी ने कुछ कहा। न किसी ने कुछ सुना। न किसी ने कुछ देखा।

(इन बारह पात्रों के चक्कर लगाते और बोलते हुए सफेद दाढ़ी वाला, कुबड़ा-सा वृद्ध पात्र इनसे टकराता, उठता, गिरता परेशान-सा मंच के मध्य में पहुंचने में सफल हो जाता है। और वहीं गिर पड़ता है।)

वृद्ध : (खीझ कर ऊंचे स्वर में) झूठ! झूठ! सब झूठ! (किसी भी पात्र को कुछ नहीं सुनाई देता। वृद्ध और ऊंचे स्वर में बोलता है।) झूठ। झूठ मत बोलो। सुना नहीं? मैं कहता हूं झूठ मत बोलो।

(चक्कर काटते हुए बारह पात्र अर्ध चंद्राकार गोलक में दर्शकों की ओर मुंह किए रुक जाते हैं। अपनी-अपनी टार्चों का प्रकाश वृद्ध पर फैंकते हैं। प्रकाश से चुंध्याता हुआ वह उठने का यत्न कर रहा है।)

पात्र 1 से 6 : तुम कौन हो?

(वृद्ध हाथों का 'शेड' बना कर देखने का यत्न करता है।)

पात्र 7 से 12 : कौन हो तुम?

(वृद्ध चारों ओर सभी पात्रों को चुंध्याई दृष्टि से देखता है। इसके पश्चात गर्दन ऊपर नीचे हिलाता हुआ हाथ से संकेत करता है जैसे कि धीरज धरने को कह रहा हो।)

पात्र 1 से 12 : कुछ तो बताओ। कौन हो तुम?

वृद्ध : मुझे नहीं पहचाना?
नहीं पहचाना मुझे?
मैं...मैं वही हूं
जिसे तुम बहुच पीछे छोड़ कर आए हो।
(पात्र 1 से 12 बड़े ध्यान से देखने सुनने लगते हैं)
यों क्या देख रहे हो?
मैं संस्कार हूं! संस्कार!
कौए को ग्रास देने वाला संस्कार।
गाए को आटे का पेड़ा देने वाला संस्कार।
कुत्ते को...
(स्वाभिमान जागने लगता है)
कुत्ते को नवाला देने वाला संस्कार!
तुलसी को पानी देने वाला,
पीपल को पानी देने वाला,

हमसाए को जीवन समझने वाला संस्कार।
अतिथि को देवता समझने वाला संस्कार।
(स्वाभिमान पूरे ओज में जागता है)
महाराजा अकबर की आंख,
टीपू सुलतान की मुराद,
गौतम का गीत
महाराज अशोक का संदेश
(हाम्पने लगता है)
गौ-तम का गी-त....
महा-राज अशो-क का सं-दे-श .....
(स्थिर हो जाता है)

पात्र 1 से 4 : **(वृद्ध के प्रभाव से लैम्पपोस्ट की तरह अपने टार्चों वाले हाथ ऊपर उठाते हुए। प्रकाश ऊपर की ओर जाने लगता है।)**
कुछ कह रहा है।

पात्र 5 से 8 : **(पात्र 1 से 4 की तरह)** हां! कुछ कह रहा है।

पात्र 9 से 12 : **(पात्र 1 से 8 की तरह)** लेकिन क्या कह रहा है? **(लघु विराम)** क्या कह रहा है?
(सभी बारह पात्रों की टार्चों का प्रकाश ऊपरी भाग में कुछ तलाश करता हुआ गोलाकार घूमने लगता है। निचले भाग में पावों से कंधों या सिरों तक बिलकुल मद्धम प्रकाश है। स्थिर मुद्रा में वृद्ध को जैसे कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा।)

वृद्ध : **(कुछ पल बाद छछोपंज में)** कहां चले गए सब? अभी-अभी मुझ से बातें कर रहे थे! कहां चली गईं वे रोशनियां? अभी-अभी यहां फैल रहीं थीं। कहां चली गईं? कहां चली गईं मुझे अंधकार में झोंक कर?
(कुछ टटोलने की मुद्रा में हाथ पैर मारता हुआ)
यहां तो अंधेरा ही अंधेरा है। मुझे कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा। कुछ भी तो नहीं। अगर कुछ दिखाई दे रहा है तो अंधेरा। अंधेरा ही अंधेरा।

(परेशान सा ऊंची आवाज़ों में पुकारता है) अरे कोई है? कोई है? अरे मुझे सम्भालो। मैं... मैं तुम्हें जीवनदान दे सकता हूं। अरे, सुन रहे हो? सुनो...। मैं तुम्हें जीवनदान दे सकता हूं। सुना तुमने? जीवन दान!

(हताश हो रहा है। बच्चा-5 अपना बस्ता घसीटता-सा प्रवेश करता है। कुछ पल रुक कर वृद्ध की ओर बड़े ध्यान से देखता सुनता है और धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ने लगता है।)

जी...व...न...दा...न...। **(क्षणिक विराम के बाद स्वगत)** मालूम नहीं क्यों कोई...? मालूम नहीं...। हां, मालूम नहीं...। **(क्षणिक विराम)** लेकिन क्या मालूम नहीं? लेकिन, लेकिन क्या मालूम नहीं? सब...सब भूल गया।

(बच्चा-5 पास पहुंच कर रुकता और साश्चर्य वृद्ध को देखता है।) भूल गया सब! भूल गया? क्या भूल गया? क्या भूल गया? ...वही...वही जो अभी-अभी याद था। वही, जो याद नहीं रहा। **(वृद्ध डगमगाने लगता है लेकिन बच्चा-5 उसे बड़ी कठिनाई से थाम लेता है। वृद्ध कुछ सहारा महसूस करता है।)**

वृद्ध : **(संभलता हुआ)** शाबाश! शा-बा-श! खुश रहो। खुश रहो मेरे बच्चे!

बच्चा-5 : चलो, बाबा! मैं पहुंचा देता हूं। कहां जाना है?

वृद्ध : जाना कहां है, बच्चे! यहीं रहना चाहता हूं पर कोई रहने दे तब न!

बच्चा-5 : तुम्हारा घर कहां है, बाबा?

वृद्ध : वहां जहां सब मुझे 'बाबा' न कह कर ... 'बाबा जी' कहा करते हैं। 'तुम' नहीं...'आप' कहते हैं।

बच्चा-5 : मैं कुछ समझा नहीं, बाबा।

वृद्ध : तुम समझ कर...**(एक दम घुटने लगता है)** मुझे...मुझे यहां से ले चलो, बच्चे। जल्दी ले चलो। यहां मेरा दम घुट रहा है। मुंह सूख रहा है। शायद यहां की हवा बहुत बदल गई है।

बच्चा-5 : (बस्ते के साथ बंधी पानी की बोतल जल्दी-जल्दी खोल कर देता हुआ) मेरे पास पानी है। पानी पियो, बाबा!

वृद्ध : नहीं, बच्चे नहीं। मुझे इस पानी की नहीं...इख़लाक की ज़रूरत है। इख़लाक जो यहां नहीं रहा। देर न करो। मुझे इस रेगिस्तान से ले चलो।

बच्चा-5 : ले चलो? कहां ले चलो? तुम कहां जाओगे, बाबा?

वृद्ध : (हाथ से संकेत करता हुआ) ले चलो। उस ओर ले चलो। देखो...वो देखो। अभी किसी कुटिया में दीया जल रहा है। रोशनी चमक रही है। वो...वो...वो देखो सामने।

(वृद्ध की बाँह पकड़ कर, बस्ता घसीटता हुआ-सा बच्चा-5 आगे-आगे चलता है। और वृद्ध पीछे-पीछे। ऐसा लगता है जैसे बच्चा-5 को बहुत ज़ोर लगाना पड़ रहा है। बीच में एक बार वह बस्ते की 'साइड' बदलता है और वृद्ध के साथ अपना हाथ। ऐसे में प्रस्थान। तदोपरांत प्रारम्भिक पात्र 1 से 12 एक केंद्र पर मिलने वाली तीन ओर से पक्तियों में टार्चों का प्रकाश नीचे करते हैं। अपने-अपने संवाद दोहराते हुए प्रस्थान करते हैं।)

दायीं पंक्ति : न किसी ने कुछ कहा।

सामनी पंक्ति : न किसी ने कुछ सुना।

बायीं पंक्ति : न किसी ने कुछ देखा।

(4)

बच्चा-5 अपने घर के कमरे में

(क) टेपरिकार्डर द्वारा संगीत की धुन पर कुछ देर नाचता है।

(ख) संगीत की धुन पर गति करता हुआ कमरे के एक कोने से गेंद (बाल) उठाता और कुछ देर उसके साथ अकेला ही खेलता है। बहुत हलका अनुभव

करता है और गेंद को फिर अपनी जगह पहुंचा देता है।

(ग) टेप रिकार्डर बंद करता है और अलमारी बगैरा से कुछ पुस्तकें टटोलने के बाद एक पुस्तक लेकर मस्ती में टहलता हुआ पढ़ने लगता है। बताया जा सकता है कि वह क्या पढ़ रहा है।

अचानक बिजली चली जाती है और अंधेरे में बच्चा-5 खीझ उठता है।

बच्चा-5 : 'बैड लक'। इस बिजली को भी अभी जाना था। अब क्या किया जाए? मेरा होम टास्क...? (अंधेरे में प्रस्थान)

(अंधेरे कमरे में एक नवयुवक जो कि बच्चा-5 का बड़ा हुआ रूप है टार्च ले कर माचिस तलाश करता हुआ आता है। उस जगह देखता है जहां मोमबत्ती टिकी है। मोमबत्ती सीधी करता है। टार्च बुझाता है। अंधेरे में तीली निकाल कर जलाता और मोमबत्ती जगाता है। कमरा तनिक प्रकाशित होता है। कलाई घड़ी देखता है। और ट्रांजिस्टर या कुछ और ऑन करता है। समाचार चल रहे हैं।

'खेल समाचार-क्रिकेट'- सुन कर एक जोश-सा अनुभव करता है और बैटिंग का या दौड़ कर कैच करने का अभिनय करता है।

अचानक बिजली आ जाती है।)

बच्चा-5 (किशोर): थैंक गॉड!

(ट्रांजिस्टर बगैरा बंद करता है और टहलता हुआ एक पुस्तक उठा कर पढ़ने लगता है। सहसा किसी ओर से विस्फोट की ध्वनि सुनकर त्रस्त-सा अस्त-व्यस्त हो जाता है। पृष्ठभूमि से लोगों की भगदड़, मार-धाड़ चीख-पुकार आदि के मिलेजुले स्वर : मारो, पकड़ो, हाय, आह, चल साले, उल्लू के पट्ठे इत्यादि सुनाई देने लगते हैं।

कुछ समय में ये स्वर विलीन हो जाते हैं और सन्नाटा-सा छा जाता है। तभी अपने आप को सम्भाल कर)

क्यों ?

आखिर क्यों ?

क्यों किसी ने कुछ नहीं देखा ?

क्यों किसी ने कुछ नहीं सुना ?

क्यों किसी ने कुछ नहीं कहा ?

क्यों ?

आखिर क्यों ?

(यवनिका)

आहत स्वर

लेखन : दिसंबर 1981

प्रथम प्रसारण : श्री विष्णु भारद्वाज द्वारा मार्च 1982 को रेडियो कश्मीर जम्मू से

पात्र

करतार

रहमान

अशोक

बेरा

गंगानाथ

नयना

रूपा

शर्मीली

(कार्यालय का वातावरण)

रहमान : [फुसफुसा कर] करतार! अरे ओ करतार!

करतार : [काम में व्यस्त] हूं!

रहमान : 'हूं' को छोड़, यार! वो देख! उस नए चेहरे को देख। अरे देख भी तो! वल्लाह क्या हुस्न है! क्या जमाल है? (दीर्घश्वास) नज़र हटाए नहीं हट रही। बेमिसाल! बे-मि-साल! खुदा कस-म, हुस्न की परस्तिश जिस का शगुल हो ...उसने आज तक ...। करतार ?

करतार : (खीझ कर) रहमा-न?

रहमान : क्या है मेरे सरकार!

करतार : यार, मुझे काम करने दे!

रहमान : अरे काम भी हो जाएगा। कर लेना। एक बार देख तो ले उसकी तरफ! वल्लाह...! एक तो यह हुस्न, यह अदा, दूसरे चुस्त लिबास और ऊपर से तन कर यों बैठी है जैसे... जैसे (एक दम) कुछ न पूछ यार! एक बार देख ले। मेरी इतनी ही आरजू है। बस।

करतार : (खीझ कर) उफ हो कल से मैं तुम्हारी मेज़ दूसरी जगह लगवा दूंगा।

रहमान : इस तरह से तो यार उसे कहा जाता है जो बदमाश हो। फिर तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं एक शरीफ आदमी हूं।

करतार : हूं...!

रहमान : और अगर मैंने, अपनी मेज़...दूसरी जगह न लगने दी तो?

करतार : तो मैं ही अपनी मेज़ यहां से हटा लूंगा। समझा!

रहमान : ओ, जा जा। बहुत देखे हैं तेरे जैसे मेज़ हटवाने और हटाने वाले। (लघु विराम) अरे थूक दे गुस्सा। फिर तुझे मालूम ही है कि मैं हुस्न की परस्तिश को जिन्दगी का फलसफा समझता हूं। कभी-कभी मुझे कोयल की कू-कू से कहीं बेहतर लगती है कौए की कांय-कांय। क्यों कि जब वो मुंडेर पर बैठ कर अपना राग अलापे तो परदेसी प्रीतम के घर आने का तसवुर होने लगता है। कोयल कोयल तो बस, आम की बहार के नगमे गाती है - लेकिन प्रीतम के बगैर आम भी कहां मज़ा देते हैं। इसलिये कौआ, भला।

करतार : अरे यार यह चिट्ठी तो ड्राफ्ट करने दे मुझे?

रहमान : हां, हां! कर ले ड्राफ्ट किसने रोका हैं?

करतार : **(खीझ कर)** सब गलत हो गया फिर से लिखना होगा। **(कागज़ फाड़ता है)**

रहमान : **(हंसी भरा तरस)** त-त-त-त-त...। कोई बात नहीं। कहते भी हैं - देर आयत, दुरुस्त आयत।

करतार : ओफ्फो यार कम से कम चुप तो रहो। थोड़ी देर के लिये।

रहमान : कम से कम चुप रहूं ?

करतार : हां, पलीज़।

रहमान : इसीलिए तो लगातार बोल रहा हूं। देख लो! हूं न कम से कम चुप ?

करतार : **(कागज़ फाड़ कर)** ऊं हूं। फिर ग़लत हो गया।

रहमान : ...वैसे मैं जानता हूं करतार! तुझे हुस्न में पूरी दिलचस्पी है लेकिन लड़कियों में नहीं। बल्कि तुम्हें उनसे खास चिढ़-सी है। मुझे भी कोई दिलचस्पी नहीं लड़कियों में। इसी लिये हमारी दोस्ती है। मगर एक बार उसे माहे जबीन को देख तो ले। अरे सवाल यह नहीं कि वह लड़की है। बल्कि- सवाल हुस्न का है। बाकी तेरी मरज़ी। **(लघु विराम)** तू तो चुप ही हो गया। पहले भी कहां बोल रहा था। चल! एक बात बता दे। पहले से ही जब दो फुलझड़ियां यहां हैं तो इस तीसरी की क्या ज़रूरत थी ? बता सकते हो?

करतार : रहमान! तू एक काम कर ?

रहमान : शुक्र है। बोला तो! हां, क्या काम?

करतार : अगर तू यही सवाल अपने डायरेक्टर साहेब से पूछे तो तुझे अपने सवाल का जवाब मिल जाएगा।

रहमान : **(खुश)** अं-हां! यह ठीक कहा तुमने। **(चौंक कर)** क्या कहा? तू मेरी नौकरी का दुश्मन है क्या? अरे ...इस नौकरी से तो मुझे छोकरी मिलेगी। शरी-के हया-त।

करतार : मैंने कोई ऐसी वैसी बात तो नहीं की है, रहमान! इस सवाल का जवाब तो वही दे सकते हैं जिनका मैं रखा हुआ हूं।

रहमान : तेरे साथ तो बात करना भी गुनाह हो गया। हं। (दीर्घ श्वास) यों लगता है जैसे कोई उजली घटा यहां दम लेने के लिये रुक गई है। इसके बाद न जाने कहां जा कर बरसेगी।

करतार : तेरे गंजे सिर पर।

रहमान : क्यों ? यह सिर चरापूंजी का मैदान है क्या ?

(कार्यालय का वातावरण)

नयना : **(एकालाप-आलोचक स्वर)** मर्दों की जात ही ऐसी देखी, मैंने। जहां कहीं किसी लड़की को बन ठन कर संवरी हुई देख लें ...पहले तो उल्लू की तरह आंखें गाड़ देते हैं ... फिर चमगादड़ की तरह पंजे गाड़ने की सोचते हैं। देखो, कैसे देख रहा है। कोई 'मैनर' नहीं है। यह शिष्टता है भला? 'इडियाट! स्टूपिड'। खैर! अभी कुछ ही दिन में सब का परिचय मिल जाएगा। तभी कहा जा सकता है - किसके साथ कैसे 'बिहेव' करना है।

रहमान : **(कुछ समय बाद नम्रता से)** मैंने कहा, माफ कीजिएगा। आपने आज ही जायन किया है ?

नयना : जी, हां!

रहमान : मुझ नाची...ज़ को रह-मान कहते हैं। टाइपिस्ट हूं। आपका इसमेगरामी ?

नयना : क्या...?

रहमान : इसमें-गरा-मी?

नयना : मैं समझी नहीं!

रहमान : इसमेगरामी से मेरा मतलब है - आप का तारुफ ...आपका शुभ नाम ?

नयना : ओ...! मुझे नयना कहते हैं।

रहमान : शुक्रि-या! सुनिए!

नयना : जी!

रहमान : आप नई नई आई हैं। किसी शै की ज़रूरत होगी तो कह दीजिएगा।

नयना : (हैरान) शै की? क्या?

रहमान : जी मेरा मतलब है ...चीज़! कोई चीज़!

नयना : (दबी हंसी से) ठीक है।

रहमान : (प्रस्थान करता हुआ) शुक्रिया! शुक्रिया! शुक्रिया! **(मन में)** क्या नाम बताया ? हां! न-य-ना!

(अंतराल)

रहमान : तुम तो खुशनसीब निकले यार! एक हफते में इतनी प्राग्रैस!

करतार : कैसे ?

रहमान : अच्छा ? यह भी हमीं को बताना होगा? खुदा के करम से (स्टाइल से) नयना के टेबल का, तुम्हारे टेबल के साथ, सीधा राबता कायम हो गया है। तुम हो 'सीनियर एस्टाबलिशमेंट असिस्टेंट' और वो ...वो बन गई 'जूनियर एस्टाबलिशमेंट असिस्टेंट' मतलब यह - कि - तुम्हारी हैल्-पर नयना।

करतार : अमां यार, यह दफतर की रोटीन है। व्यक्तिगत - मेरा मतलब है ...ज़ाती नहीं। समझे।

रहमान : इसी तरह ज़ाती रोटीन भी तो बन सकती है!

करतार : काम में मन लगाओ रहमान, काम में!

रहमान : क्या कहूं यार! आज तो उसको देखने से बने है। **(दीर्घश्वास)** करतार! तूं ने नीली-नीली झील-सी गहरी आंखें, आसमानी, बिलौरी, हिरणी-सीं और न जाने कैसी-कैसी आंखें तो कई बार देखी होंगी ...मग-र हाय यार! यह गंदुमी रंग में डूबी हुईं काली-काली, मोटी-मोटी, विस्की में नहाई हुईं आंखें कभी न देखी होंगी। हां, करतार।

करतार : रह-मान?

रहमान : एक बात और भी है करतार। मैंने शायद ही कभी, इसे काम के अलावा कोई बात करते सुना या देखा हो। दूसरी दो लड़कियां हैं - बात-बात में दांत निकालती हैं। **(नकल)** खी-खी-खी ...। एक तो ऐसी है जो बातों में किसी एक्सप्रैस की तेज़ी को भी मात दे जाती है।

करतार : तुम्हारा कोई न कोई इलाज करना ही पड़ेगा।

रहमान : मगर यह नयना है ...इसे अगर गौर से देखा जाए, बारीकी से परखां जाए तो अन्दर ही अन्दर उदास लगेगी।

करतार : तो पूछ ले न जा कर।

रहमान : सच पूछो तो देखने में तुम्हारी ही कोई रिश्तेदार लगती है।

करतार : रहमां...।

रहमान : (टोक कर) बस, बस! मैंने यह इसलिए कहा कि उसकी तरह, तुम भी खामोशी को ज़्यादा पसंद करते हो। इतनी खोमोशी सेहत पर बुरा असर डालती है। समझे। खामोशी में दबी हुई उदासी के जो ...तुम्हारी ज़बान में अगर कहूं तो ... लक्षण मैंने नयना में देखे हैं ...वो उसकी विस्की में नहाई हुई आंखों के साथ हिलमिल कर काक-टेल का काम कर रहे हैं। (दीर्घश्वास) किसी ने सच ही कहा है। सोहबत का असर ज़रूर होता है। (लघु विराम) अरे, तुम कुछ बोलते ही नहीं, यार। मैं भी शाअर हो रहा हूं।

करतार : क्या लिखा है ?

रहमान : अभी कोई खास नहीं। फिर भी कुछ-कुछ। सुनोगे?

करतार : क्यों बोर करोगे।

रहमान : बोर नहीं, अरशाद करूंगा। सुनाऊं।

करतार : सुनाओ।

रहमान : अभी-अभी एक ख्याल आया है। सुनो :-

तेरी सुरमयी आंखों में डूब जाने को जी चाहता है।
तेरी काली घटाओं में खो जाने को जी चाहता है।
ऐ उदास चेहरे पर नशीली आंखों वाली,
तेरे बहुत ही करीब हो जाने को जी चाहता है।

(लघु विराम) करतार यार! तुमने कोई दाद वाद ही नहीं दी। कोई वाह-वाही नहीं की। कोई...

करतार : तुम एक काम क्यों नहीं करते!

रहमान : ...शेअर पसन्द नहीं आया क्या ?

करतार : नहीं! यह बात नहीं। शेअर तो बहुत ही पसन्द आया। "तेरे बहुत ही करीब हो जाने को जी चाहता है।" इस का ढंग भी बता देता हूं। यों निराश होने की ज़रूरत नहीं।

रहमान : (उत्सुक) जल्दी बता यार। देर न कर।

करतार : तू इतना कर ...कि ...अपनी मेज़ उठा कर या उठवा कर, नयना की मेज़ के पास लगा ले। करीब से करीब-तर हो जाएगा।

रहमान : मुझे ऐसी कुरबत की नहीं ...हकीकी कुर्बत की तलाश है मेरे यार। तुम नहीं समझोगे।

[अंतराल]

नयना : [**संगीत की तरंगें उभर कर पृष्ठभूमि में चलती रहती हैं। साश्चर्य स्वर**] इसका मतलब यह हुआ कि करतार एक कवि है। मैं भी यही समझती थी कि इस कार्यालय में यदि कोई व्यक्ति गम्भीर स्वभाव का है तो ...वह करतार बाबू है। किन्तु यह अब मालूम हुआ कि वह कवि भी है।

काव्य क्षणिका-एक

भोर की आस में
कितनी ही रातें
इस भांत टाल दीं
जैसे कोई
अंधी गुहा को
कैक्टसी साया समझ ले।

(**चिन्तनशील स्वर**) रात को अंधी गुहा कह कर उसे कैक्टसी साया समझ लेना-एक आशावादी का लक्षण है। अच्छी रचना है।

काव्य क्षणिका-दो

नारी!
एक मुकद्दमा है ऐसा
जिसका कोई समाधान नहीं।
इसका पांसा
सीधा तो सीधा,
उल्टा हो
तो भी सीधा!

(**चिन्तनशील स्वर**) किन्तु नारी के बारे में यह अनुभव, करतार ने कहां से किया। यह तो अभी अविवाहित है। क्या मज़ाक़ है। जैसे नारी नारी न हुई, अजगर हुई। हुं।

काव्य क्षणिका-तीन

नारी!
तू श्रद्धा थी
पर
तू श्रद्धा नहीं।
तू ने बांधे अनेक
बांध रखे
किन्तु
मैं नहीं बंध पाया।
तू श्रद्धा थी
पर
तू श्रद्धा नहीं।

(प्रतिक्रिया की खीझ के साथ) हं! यह भी कोई बात हुई? पुरुषों की यही एक बात है जिससे मुझे खीझ होती है। घृणा होती है। मुझे मर्दों से घृणा है। ...अरे पहले खुद भी तो श्रद्धा का पात्र बनो। श्रद्धा के योग्य चरित्र बनाओ। तब कहीं तुम नारी को उलाहना दे सकते हो। **(मेज़ पर मुक्का मार कर)** हुं। क्या बात है? ...तू श्रद्धा थी, पर तू श्रद्धा नहीं। ...कवि 'कर-तार' ...बिना कारण बताए ही तुम ने यह सब कह दिया ? क्यों कि तुम अपना कारण छिपाना चाहते हो। तुझे कोई पूछे ...जब नारी ने बांधे अनेक, तो तूं क्यों नहीं बंध पाया? अपनी दुर्बलता छिपाने के लिए पुरुष ने सदा सदा ही नारी को दोषी ठहराया है। कैसी बिडम्बना है।

[लघु संगीत लहरियां]

(दर्दीला स्वर) एक मर्द मेरा भी है। कहने भर के लिए मेरा। सामाजिक दृष्टि में मेरा। कहता है - मैं तुझ से प्यार करता हूं नयना। तुझे पा कर मैं धन्य हुआ 'आई एम लक्की टु हैव वन यू!' हं, मुझे 'वन' किया है। जीता है। जैसे मैं किसी जुए में दाव पर लगी हुई थी। **(लघु विराम)** मैं उसे क्या करूं? सिर्फ फेरे लेने से ही क्या कोई किसी का हो जाता है। ऐसे भी तो होते हैं

जो न अग्नि के फेरे लेते हैं, न किसी मन्दिर मस्जिद या गुरुद्वारे जाते हैं, ...फिर भी एक दूसरे पर मन प्राण से न्योछावर हो जाते हैं। (दीर्घश्वास) एक मर्द मेरा भी है जो सिर्फ दोष देना जानता है। उसने कभी अवसर नहीं दिया ...जब मैं उसको अपना समझ सकूं। ''मैं तुमसे प्यार करता हूं।'' कह देने से तो बात नहीं बनती।

(फ्लैश बैक घर का वातावरण)

नयना : **[कप प्लेटें रख कर मोहक स्वर में]** लीजिए! चाए पीजिए!

अशोक : [चुप]

नयना : आपके लिए चाए लाई हूं। पी लीजिए न।

अशोक : [चुप]

नयना : **(धीमीं हंसी)** लगता है, आप नाराज़ हैं।

अशोक : **(उपेक्षा से)** देख रहा हूं। तुम चाय रखो और जाओ।

नयना : आज कुछ ज्यादा ही नाराज़ लगते हैं, आप ? देर से आई हूं इसलिए ? 'प्लीज़'!

अशोक : कहा, सुना नहीं ? तुम जा सकती हो।

नयना : ठीक है। जैसी आपकी इच्छा।
(कुछ देर के बाद) आपने अभी तक चाय नहीं पी? देखिए! ठंडी हो चुकी है।

अशोक : [तीखा स्वर] ठंडी हो चुकी है तो ...नई नहीं बन सकती क्या ?

नयना : ज़रूर बन सकती है। अभी लाती हूं। **[प्याले उठाने का स्वर तथा द्वार खोल कर बन्द करने का स्वर]**

अशोक : [खीझ के साथ] हुं! दासी का अभिनय अच्छा कर लेती है।

[लघु संगीत लहर]

नयना : लीजिए! गर्म-गर्म चाए हाज़िर है।

अशोक : रख दो!

नयना : [रखने का स्वर] पहले चाय पी लें। समाचार बाद में पढ़िएगा। [अखबार छीनने का स्वर] फिर से ठंडी हो जाएगी।

अशोक : ये दूसरा कप किस लिए है?

नयना : अपने लिए।

अशोक : तुमने अभी कुछ देर पहले जो पी थी।

नयना : आपके साथ बैठने का अवसर नहीं मिला, नहीं पी।

अशोक : अगर मैं न पियूं तो?

नयना : मैं भी नहीं पियूंगी।

अशोक : **[तनिक मौन के बाद]** आफिस में चाय नहीं पीती?

नयना : एक आध बार!

अशोक : मैं तो साथ नहीं होता। किसके साथ पीती हो?

नयना : **(धक्-सी)** आफिस की बात और होती है।

अशोक : **[व्यंग्यात्मक हल्की हंसी के साथ]** बिलकुल और!

नयना : आ-प कहना क्या चाहते हैं?

अशोक : कुछ नहीं! यों ही पूछ लिया। लो चाय पियो।
[कुछ पल कप प्लेटों तथा चाय पीने के स्वर। फिर इन्हीं स्वरों के बीच]

नयना : सच-सच बताइये! आप नाराज़ है क्या?

अशोक : **[चुप]**

नयना : अफिस से लौटने में देर हो गई - इसलिए?

अशोक : **[चुप]**

नयना : आफिस, आख़िर आफिस है। कभी-कभी देर हो जाना कोई बड़ी बात नहीं। फिर जब 'प्राइवेट आफिस' हो।

अशोक : **[चुप]**

नयना : कभी-कभी आपको भी तो देर हो जाया करती है। घंटों देर।

अशोक : नयना! मेरे काम से तुम्हें कोई सरोकार नहीं होना चाहिये। घर का मर्द हूं आखिर। जल्दी आऊं या देर से।

नयना : यू आपको तो मेरे काम से सरोकार रहता है न?
[कुछ पल मौन। चाय के कप रखते हुए] चाय कैसी बनी थी? **(पाज़)** अच्छी थी न?

अशोक : **(कप रखता हुआ उपेक्षा से)** अच्छी थी। **(पाज़)** देखो! इस मेज़ पर खाली कप अच्छे नहीं लगते। इन्हें उठा दो।

नयना : कहें तो फिर से भर दूं?

अशोक : अपनी सीमा में रहो नयना।

नयना : चलो ठीक है। यह बताइये, इतने नाराज़ क्यों हैं?

अशोक : जो कहा है, करो। ऊल-जुलूल बातें मुझे अच्छी नहीं लगतीं।

नयना : **(बर्तन समेट कर जाती हुई मन ही मन)** आज तक न समझ सकी मैं। एक अवधि बीत गई इनका चढ़ाव देखते-देखते किन्तु उतार कभी नहीं देखा। मेरे लिए जीवन दूभर हुआ जाता है। क्या करूं?

(अंतराल संगीत लहर)

अशोक : नयना!

नयना : जी!

अशोक : कई दिनों से देख रहा हूं। तुझ में काफी तबदीली आ गई है।

नयना : तबदीली? मुझ में? **(हंसती है)** मैं भी सुनूं क्या तबदीली आई है मुझमें

अशोक : **(तनिक संकोच से)** देखो! तुम नाराज़ न होना। अगर ग़लत कहूं तो सुनी अनसुनी कर देना। हैं?

नयना : **[भ्रमित स्वर]** प-प-पहले आप कहें तो।

अशोक : **[मन में]** घबरा गई है। अच्छी तरह बोल भी नहीं सकी। मुझे बे झिझक कह देना चाहिये।

नयना : **(भ्रमित स्वर)** कहिये न। कहिये न क्या बात है?

अशोक : **(स्पष्ट)** आजकल तुम आफिस जाती हो तो खूब बन संवर कर जाती हो। अविवाहित बाला-सी। किन्तु जब तुम वापिस आती हो तो ...ऽ... तुम्हारी लिपस्टिक, तुम्हारे चेहरे का पौडर, गालों की लाली ...सब पोंछी हुई -सी होती है।

नयना : **[धक्-सी]** आप कहना क्या चाहते हैं?

अशोक : बच्ची न बनो नयना! तुम अभी तक नहीं समझी क्या? और आज लौटी तो काफी देर हो चुकी थी। तुम्हारे कपड़े भी कुछ अस्त व्यस्त से थे। बाल भी बिखरे हुए-से थे।

नयना : **(क्रोध)** चुप रहिए! **(विचलित)** इसके आगे कुछ न कहिये। भगवान् की सौगंध कुछ कहा तो।

अशोक : **(मन में)** सौगंध डाल कर चुप कराना चाहती है। **[स्पष्ट]** नयना! मुझे मेरे प्रश्न का उत्तर चाहिये।

नयना : **(घायल स्वर)** देती हूं। मैं उत्तर दूंगी। आपके प्रश्नों का उत्तर देना ...मेरा धर्म है। **(मन में)** अब इन्हें कैसे विश्वास दिलाऊं कि दिन भर इतनी गर्मी पड़ती है कि पसीने से लथपथ हो ...सारा पाऊडर, लिपस्टिक बगैरा घुल मिल कर बह जाती है। गाड़ी में आते जाते इतनी भीड़ होती है कि मानसिक तनावों में डूबे हुए सारी यात्रा करनी पड़ती है।

अशोक : तुम्हारे इतने लम्बे मौन का अर्थ है ...तुम निरुत्तर हो। मेरे प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं!

नयना : **(रुआंसी)** है! मेरे पास उत्तर है। ...आपके लगाए आरोप गलत हैं। आपका स्वभाव संदेह करना है। आप हर एक तथ्य को संदेह की दृष्टि से देखते हैं।

अशोक : **(जाते हुए)** नहीं! तुम्हारे पास कोई उत्तर नहीं। आंसू ही तुम्हारा उत्तर हैं। आंसू। केवल आंसू। और वह भी झू-ठे आंसू। **(रुक कर)** अच्छा हो नयना! तुम यदि अपना सुधार कर लो।

(फ्लैश बैक समाप्त। कार्यालय में)

नयना : अब कोई करे भी तो क्या? वाह रे, मेरे मर्द! **(दीर्घश्वास)** करतार जी! यह फाइल आपने मुझे शायद भूल से दे दी है। इसमें आपकी कविताएं हैं।

करतार : **(अचानक खोया-खोया-सा)** अं, हां! न जाने यह भूल कैसे हो गई? आपने ये कविताएं पढ़ीं, नयना जी!

नयना : जी, हां! पहली दो तीन कविताओं ने ही इतना प्रभावित किया कि सारी फाइल पढ़ जाना चाहती थी।

करतार : धन्यवाद!

नयना : **(व्यंग्य)** बहुत कटु अनुभूतियां हैं, आपकी। वैसे ...यदि आप क्षमा करें तो एक भूल मुझ से भी हो गई है।

करतार : क्या ?

नयना : आपकी तीसरी कविता ने इतना प्रभावित किया कि आपकी ही फाइल में प्रतिक्रिया लिखी गई।

करतार : **(पन्ने पलटता हुआ)** यह आपने अच्छा नहीं किया। अलग कागज़ पर लिख देतीं। यह पाण्डुलिपि तो मैंने आज प्रैस में देने के लिए तैयार की थी।

नयना : मुझे बहुत खेद है। क्षमा चाहती हूं। **(लघु विराम)** अच्छा मुझे 'सिनिआरिटी लिस्ट' की फाइल दे दें।

करतार : हूं...! हां! यह रही। लीजिए।

नयना : (जाती हुई) कहें तो वे पन्ने जिन्हें मैंने खराब कर दिया है, उन्हें नया लिख दूं।

करतार : रहने दीजिए मैं खुद ही देख लूंगा।

नयना : (मन में) मालूम नहीं यह मर्द ज़ात अपने आपको क्या समझती है ?

करतार : (मन में) मालूम नहीं ...क्या अंट शंट लिख गई है। कल की शोकरी ...प्रतिक्रिया बता रही है। हुं। **(पन्ने पलट कर मुनमुनाने के बाद)** हूं...! जब किसी के दम्भ को चोट लगती है तब ऐसी ही प्रतिक्रिया होती है। और फिर ...नारी तो कभी सहन ही नहीं कर सकती कि कोई दूसरा उस पर कोई आरोप लगाए। ऐसे में नयना का तिलमिलाना स्वाभाविक ही है। नयना भी नारी है। और नारी की ऐसी ही प्रकृति है। किंतु मैं ...मैं जिसने अन्दर की तहों तक झांक कर देखा है ...भोगा है कैसे मान लूं कि नारी श्रद्धा है। होगी कभी! कभी ...जब मैंने नहीं देखी। मैंने तो नारी का जो रूप और गुण देखा ...उसका ही मूल्यांकन करना था। सो कर लिया। अभी कल ही की बात है।

(फ्लैश बैक शुरू रुपा रेडियो पर गीत सुन रही है।)

गंगानाथ : [द्वार खटखटाता है]

रूपा : [रेडियो-गीत जारी]

गंगानाथ : [द्वार खटखटाता है]

रूपा : [रेडियो-गीत जारी]

गंगानाथ : [द्वार खटखटाता है] रूपा...? रू...पा?

रूपा : [रेडियो-गीत जारी]

गंगानाथ : क्या लापरवाही है? अन्दर रेडियो की मस्ती है और बाहिर मैं हूं। कड़कती धूप में पसीना-पसीना हुआ घर पहुंचा हूं। **(द्वार खटखटाता है)** रूपा...? रूपा...? रूपा...?

रूपा : [द्वार खोलती है]

गंगानाथ : कितनी देर हो गई तुम्हारे इस गंगानाथ को द्वार खटखटाते, पुकारते। क्या कर रही थी तुम ?

रूपा : (उपेक्षा का स्वर) खोल तो दिया है द्वार!

गंगानाथ : [भीतर आ कर] उफ्...! बहुत गर्मी है बाहिर!

रूपा : कितने सुख की नींद आ रही थी।

गंगानाथ : (मन में) और मैंने आ कर खराब कर दी। रेडियो जो इतना ऊंचा चल रहा है, उसने तुम्हारी नींद को कुछ नहीं कहा। (स्पष्ट) पंखे की हवा लगी तो जान में जान आई। करतार का क्या हाल है ?

रूपा : अन्दर सो रहा है।

गंगानाथ : क्या हाल है उसका ?

रूपा : आपको क्या? सुबह गए थे, अब आए हो।

गंगानाथ : मैं कौन-सा मुगल गार्डन घूमने गया था। नौकरी पर तो जाना ही होता है।

रूपा : कौन-सा एहसान करते हो ?

गंगानाथ : रूपा! (लघु विराम) तुम चाहती क्या हो? यह मैं आज तक नहीं समझ पाया।

रूपा : समझने की ज़रूरत ही क्या है?

गंगानाथ : तुम हमेशा इधर, उधर की हांकती हो जिसका न सिर होता है न पैर।

रूपा : अब आपको मेरी बातें बे सिर पैर ही दिखाई देंगी। आप नौकरी पर जाते हैं तो मैं घर में बेकार बैठी रहती हूं क्या ?

गंगानाथ : [टालने के लिए हंसता हुआ] अच्छा भाई! मान लिया कि मैं तुम पर ज़्यादती करता हूं। तू तो सुख की पिटारी है। तुम न होती तो मैं न जाने किस नर्क में होता।

रूपा : तो मैं कौन-सा कहर ढाती हूं।

गंगानाथ : [मन में] दम ही कहां लेगी अब ?

रूपा : अब मालूम नहीं और कौन आएगी जो आपको आराम देगी। सोचना ही था तो पहले सोचा होता। अब क्या लाभ? उस समय तो सेहरा बांध कर और कंधें पर तलवार उठा कर आ गए थे।

गंगानाथ : (मन में) तब कौन जानता था कि सेहरा और तलवार बजाए मर्यादा की लाज रखने के ...अपने ही गले पर चलेगी।

रूपा : अगर दहलीज़ लांघ ही ली है तो पिछला द्वार क्या देखना। क्या ठाठ थे जब हवन कुण्ड के सामने अपने हाथों में मेरा हाथ ले कर फुल्लियों का अर्घ्य दे रहे थे।

गंगानाथ : (हंसकर) चलो इतना तो याद है तुम्हें। सचमुच कितने सुहाने पल थे। अच्छा अब जाने दो झगड़े की बातें कुछ नाश्ता-वाशता ही दे दो। सात घंटे बात लौटा हूं। बहुत भूख लगी है।

रूपा : सुबह! खा कर तो गए थे।

गंगानाथ : **(मन में)** हमारे आपसी व्यवहार का असर अब करतार पर भी पड़ रहा है। वह गुम सुम-सा रहने लगा है। उसकी बीमारी का कारण भी यही है। रूपा इतना नहीं समझती कि अन्दर लेटा लेटा हमारी बातें सुन कर वह मन ही मन कुढ़ रहा होगा।

रूपा : **(बड़बड़ाती है)** अब मैं सारा-सारा दिन चूल्हा ही देखती रहा करूं। मुश्किल से अभी काम खत्म किया था।

गंगानाथ : पर, आफिस से लौटने पर कुछ मिलना तो चाहिये।

रूपा : अभी दो तीन घंटों बाद खाना खाना है। चाए बना देती हूं। **(प्रस्थान)**

गंगानाथ : अब गई चाय बनाने। खाली पेट चाय पिला कर यह मेरा रहा सहा खून भी जलाएगी। कब अक्ल आएगी इसको ?

रूपा : **(कुछ पल बाद)** चूल्हे पर चाय धरी है। तनिक हाथ पांव हिलाएं और डाल कर पी लें।

गंगानाथ : तुम कहां चलीं ?

रूपा : **(जा़ती हुई)** साथ वाली चम्पा जी को एक बात कहनी है। याद आ गई । जल्दी ही आ जाऊंगी। **(प्रस्थान)**

गंगानाथ : यह जीना भी कोई जीना हुआ, गंगानाथ। कम से कम चाय पीनी थी। अब वह भी खुद ही बनाऊंगा। आदमी से गधा बना दिया है मुझे इस रूपा ने।

(फ्लैश बैक समाप्त)

करतार : [भावुक] अब कैसे मान लूं कि ''नारी तू श्रद्धा है।'' पुरुष क्यों श्रद्धेय नहीं। मेरे पिता...समाज के एक आदरणीय वर्ग से सम्बन्ध रखते थे। वे गुणी थे, सच्चे और ईमानदार थे। कमाई का एक-एक पैसा घर में दे दिया करते थे ...किन्तु मुझे देखने की लालसा ही रही कि मां उनके साथ स्नेह तथा आदर का व्यवहार करे। यहां तक कि मेरी मां की सगी बहनें भी देवता जैसे मेरे पिता की खिल्ली उड़ाया करती थीं। (व्यंग्य के साथ हंसता हुआ) नारी तू श्रद्धा है। श्रद्धा...। (हंसी)

[केफटेरिया में पाश्चात्य संगीत चल रहा है।]

नयना : **[प्रवेश]** आज इतनी भीड़ कहां से आ गई। एक भी टेबल खाली नहीं। लेकिन चाय तो पीनी है।

बेरा : मैडम! टेबल नम्बर सात की एक चेयर खाली है।

नयना : ओ! धन्यवाद! **(कुछ पल बाद)** क्षमा कीजिए! मैं यहां बैठ सकती हूं क्या ?

करतार : शौक से!

नयना करतार : **(एक साथ हैरान)** आप, आप?

नयना : हूं! **(बैठ कर मन में)** तो करतार बाबू यहां आते हैं चाय पीने? **(स्पष्ट)** चाय पियेंगे क्या?

करतार : **(शिष्टाचार की हंसी)** जी हां! मैंने कह दिया है। आप क्या पियेंगी?

नयना : मैं यों ही चली आई। **(मन में)** हूं! कवि बनता है। पाण्डुलिपी प्रैस में देनी है।

करतार : **(मन में)** सारा मज़ा किरकिरा हो गया। चाय का एक कप जो चैन से पीना था अब शिष्टता दिखाते हुए संकोच के साथ घूंट भर-भर कर पीना होगा। **(स्पष्ट)** कुछ सोच रही हैं क्या ?

नयना : अं ? कुछ नहीं **(मन में)** सीनियर के साथ जूनियर को चाय पीनी हो तो यों बैठना पड़ता है जैसे शेर के साथ गीदड़ भी दावत में शामिल हो। **(लघु विराम)** तुम 'काम्पलैक्स' का शिकार क्यों होती हो? आराम से चाय पियो। बी 'काम्फ़ार्टेबल', नयना!

करतार : (**मन में**) तुम पहले से यहां आए हो, करतार। यह बाद में आई है। और फिर केफटेरिया में सभी इसी तरह आते हैं। 'डोंट गैट कानफ्यूज़ड'!

नयना : (**मन में**) अब चाय नहीं पियूंगी। यदि ...(**बर्तनों के स्वर**) पीनी ही है तो पहले...

बेरा : क्या लाऊं मैडम ?

नयना : एक 'कोल्ड ड्रिंग'। (**सहसा**) सुनो!

बेरा : जी ?

नयना : पाइन एपल जूस लाओ।

बेरा : जी, मैडम!

नयना : (**मन में**) यह ठीक रहेगा। पहले पाइन एपल जूस पियूंगी फिर चाय। तभी धाक बैठेगी और यह कुछ सोचेगा।

बेरा : मैडम! ...जूस!

नयना : अं? हां! रख दो! और हां! देखो! ठीक पंदरह बीस मिनट बाद एक चाए लाना!

बेरा : (**मन में**) जी!

करतार : (**मन में**) यह तुम्हारी समस्या नहीं है, करतार। पीने दो जो इसका जी चाहे। यह औरतें भी ... (**याद आने पर**) मेरे पिता की मृत्यु के बाद कितना रोई थी मेरी मां ? घोर पश्चात्ताप की आग में जलती रही थी। (**मौन**) यों चुपचाप बैठे रहना भी कोई बैठना हुआ? कोई बात तो करनी ही चाहिये। पर क्या बात करूं ?

नयना : (**मन में**) महाशय क्या दार्शनिक मुद्रा में विराजमान हैं। दम्भी मालूम होते हैं। क्या संयोग हुआ। बोल भी नहीं सकती। बोलूंगी तो सिर चढ़ सकता है। और फिर सीनियर भी तो है। कहावत भी है - "आफिसर की अगाड़ी और घोड़े की पिछाड़ी - दोनों से बच कर रहना चाहिए।"

बेरा : मैडम...! चाय! (**बर्तनों का स्वर**)

नयना : (**तुरंत**) यह चाय वहां टेबल नम्बर नौ पर रख दो। वह खाली हो चुका है।

बेरा	:	जी!
करतार	:	(एक दम) आप वहां बैठेंगी।
नयना	:	जी हां! मैं देख रही हूं आप कुछ बिखरे-बिखरे से हैं - शायद मेरे कारण।
करतार	:	कृपया यहीं बैठें।
नयना	:	क्यों ? (मन में) कहा था न-बोलूँगी तो सिर चढ़ जाएगा।
करतार	:	कहा न! प्लीज़!
नयना	:	जी नहीं! मैं जा रही हूं।
करतार	:	सुनें! यदि आपने टेबल चेंज किया तों बाकी लोग मुझे बुरा आदमी समझ सकते हैं। संदेह से देख सकते हैं।
नयना	:	इससे क्या होता है। मेरे यहां बैठे हुए भी हो सकता है कइयों ने कुछ उलटा पुलटा सोचा हो। कई प्रकार के 'रिमार्कस' दिए हों।
करतार	:	ठीक है। आप यहीं बैठें। मैं ही दूसरे टेबल पर चला जाता हूं।
नयना	:	(मन में) मान जाओ न-यना। आखिर यह तुम्हारे आफिस का कोलीग है बे-चारा। (स्पष्ट-बेरा से) ठीक है, बेरा। चाय यहीं रहने दो।
बेरा	:	जी! ...चाय और लाऊं मैडम!
नयना	:	औ-र! (अनमनी-सी) हां, हां! हां! ले आओ।
करतार	:	अ-आप ने इन्कार कर दिया होता।
नयना	:	इसमें बुरा क्या है?
करतार	:	आपने देखा जो, मैंने चाय अभी-अभी पी है। अब जाने को ही था। मना कर दें।
नयना	:	बड़ा अजीब लगेगा।
करतार	:	मैं खुद जा कर मना कर देता हूं।
नयना	:	यह और भी अजीब लगेगा।
करतार	:	क्यों ?
नयना	:	जब आप आर्डर 'कैंसिल' करेंगें-काऊंटर के आस पास जितने भी लोग आपकी बात सुनेंगे, सब हंसेंगे। टेढ़ी मेढ़ी आंखों से

देखेंगे। ऊपर से आप बिना चाय पिए जाएंगे तो और भी बुरी बात होगी। किसी एक के लिये भी और दोनों के लिए भी। ये लोग हैं, लोग।

करतार : (मन में) करतार! आखिर है तो तुम्हारे ही आफिस की। बैठे रहो और चुप-चाप चाय पी लो। (स्पष्ट) ठीक है। अब तो बैठना ही पड़ेगा।

बेरा : **(बर्तनों के स्वर के साथ)** चाय साहब!

[दृश्य परिवर्तन नयना तथा शर्मीली की खिलखिलाती हंसी]

नयना : तब तो तुम्हारी 'मैरीज' एक 'सरपराइज़' ही हुई।

शर्मीली : 'सरपराइज़' हो न हो लेकिन है मज़ेदार।

नयना : कितनी देर हुई।

शर्मीली : यही दो महीने।

नयना : तब तो तुम नई-नई दुल्हन हो।

शर्मीली : तुम कौन-सी पुरानी हो।

नयना : अरी, दो साल तो हो गए ?

शर्मीली : तुम दो साल की बात करती हो ? आजकल तो लोग पांच-पांच साल तक पुराने नहीं होते। क्या परिवार नियोजन का ज़माना आया है। शादी की शादी। कुंवारे के कुंवारे।

नयना : **(तनिक दुख)** हां! शादी की शादी। कुंवारे के कुंवारे। **(मन में)** तुम्हें क्या बताऊं शर्मीली। मुझ पर क्या बीत रही है। नाम तुम्हारा शर्मीली है और शर्म मुझे आ रही है।

शर्मीली : तुम कुछ सोच रही हो नयना ?

नयना : अं? कुछ नहीं।

शर्मीली : कुछ तो सोच रही हो?

नयना : सचमुच कुछ नहीं। अच्छा, तुम्हारे 'हसबैंड' कहां हैं आज कल ?

शर्मीली : यहीं हैं। कहो तो कल शाम को तुम्हारे हां आ जाएं दोनों। चाय एक साथ, पिएंगे।

नयना : ज़रूर! ज़रूर आना। **(असमंजस में)** नहीं! कल शाम को नहीं।

शर्मीली : नहीं ? क्यों?

नयना : कल शाम को हम दोनों कहीं जा रहे हैं - कहीं से 'इनविटेशन' आया है। **(बनावटी गर्व)** देखो न, अपने 'हस्बैंड' की नेचर भी ऐसी है कि मेरे बगैर कहीं जाते ही नहीं।

शर्मीली : अच्छा...?

नयना : यदि कहीं से उनको 'परसनल इनविटेशन' भी आए तो मेरे बगैर नहीं जाते। कहते हैं- नैना! 'आइ डोंट फील पलैयर एनीवेयर विदौट यू'।

शर्मीली : तब तो तुम बहुत लक्की हो।

नयना : सुनो! तम्हारे वाले कैसे हैं ?

शर्मीली : इस मामले में फटीचर। ज़्यादा से ज़्यादा हफते में एक पिक्चर। दो एक बार दोस्तों के साथ।

नयना : **(मन में)** हफ्ते में एक पिक्चर तो देखती हो उनके साथ। यहां उनके साथ बैठ कर एक कप चाय पीना भी मुश्किल से मिलता है। तुम किस्मत वाली हो। **(दीर्घश्वास)**

शर्मीली : बड़ी गहरी आह भरी। कोई याद आ गया।

नयना : अब कौन याद आएगा। स्वास्थ्य ठीक नहीं है। अच्छा मैं चलूं। घर जा कर आराम करूंगी।

शर्मीली : क्या तकलीफ है ?

नयना : कई दिन से है। मालूम नहीं क्या हो गया है। ओ. के.।

शर्मीली : ओ. के.। बाय!

[केफटेरिया का वातावरण पाश्चात्य संगीत की नयी धुन]

नयना : **[प्रवेश]** आज तो यहां इक्का दुक्का ही व्यक्ति है। **(हैरान)** करतार? पहले से यहां है? होने दो। **(लघु विराम)** कितना एकांत है। जब लोगों की भीड़ होती है तब संगीत का रस भी दब जाता है।

बेरा : जी, मैडम!

नयना : **(खोई खोई)** एक चाय!

बेरा : और कुछ!

नयना : सिर्फ चाय! और कुछ नहीं।

बेरा : जी!

(उपरोक्त संगीत)

नयना : **(अकेली मन में)** कागज़ कलम ले कर क्या बैठे हुए मस्त हैं, कवि महोदय! केफटेरिया न हुआ रिसर्च लाइब्रेरी हो गई। अभी चाय पहुंचेगी और कविता की नई कड़ी जुड़ जाएगी। बर्फानी कोई चोटी, चंदन का वन, किन्नरों.का प्रदेश चित्रित हो जाएगा या फिर देखीं-अनदेखीं सामाजिक किसी विकृति को गढ़ कर प्रस्तुत कर दिया जाएगा। हुं! **(देख कर)** जा रहा है। आज सिर्फ पानी का गिलास ही पिया उसने? **(लघु विराम)** क्षमा कीजिए, आप जा रहे हैं।

करतार : **(खोया हुआ)** अं, हां! कुछ याद आ गया।

नयना : **(व्यंग्य से)** कोई नई कविता लिख रहे थे, आप ?

करतार : नहीं!

नयना : क्यों बनाते हैं मुझे। मैं देख रही थी आप कुछ लिखने में तल्लीन थे।

करतार : परसों वेतन मिलेगा। सोचा लेन-देन का हिसाब कर लूं। वही देख रहा था।

नयना : **(विश्वास भंग का स्वर)** मैं तब गलत समझी।

करतार : अच्छा! मैं चलूं। **(प्रस्थान)**

नयना : देखा नयना! तुम्हारे सोचने में और उसके सोचने में कितना अंतर है। वह बेचारा हिसाब-किताब के चक्कर में पिस रहा था और तुम सोच रही थी कि अनुभवहीन कविता लिख रहा है। **(दीर्घश्वास-एहसास का स्वर)** कभी अवसर मिला तो करतार के जीवन के अनुभव सुनूंगी।

(आत्मालोचना) तुम्हें उसके जीवन से क्या काम? तुम्हें अपने पति के अनुभवों को देखना चाहिये, नयना। अपने पति के अनुभवों को देखो।

(दृश्य परिवर्तन संगीत। नयना अपने पति के साथ)

अशोक : **(चाय पीते-पीते)** 'डार्लिंग'!

नयना : **(मन ही मन खुश)** कितने दिनों बाद अपने लिये यह सम्बोधन सुनने को मिला - डार्लिंग।

अशोक : 'डार्लिंग'!

नयना : **(खोई हुई)** अं! हूं...।

अशोक : आज चाय बहुत अच्छी बनाई है, तुमने।

नयना : **(खुश)** आपको अच्छी लगी?

अशोक : बहुत ही अच्छी। बहुत 'फाइन'।

नयना : **(मन में)** आज तो आश्चर्य हो गया। भगवान् का धन्यवाद! कितना सुखद आश्चर्य!

अशोक : **(तनिक मौन के बाद)** नयना ?

नयना : **(खुश)** जी!

अशोक : आज सहसा, तुम्हारे डायरेक्टर से भेंट हो गई।

नयना : अच्छा...!

अशोक : तुम्हारे बारे में बात चलाई तो बहुत खुश हुआ। कहने लगा- 'नयना बहुत अच्छा काम करती है।'

नयना : **(सतर्क)** और कुछ कहा उन्होंने!

अशोक : **(मन में)** स्वर कितना सतर्क हो गया इसका। **(स्पष्ट)** और क्या बात हो सकती थी?

नयना : उन्नति की। 'प्रोमोशन' की बात।

अशोक : **(मन में)** उन्नति का बहाना खूब रहा। वास्तव में बात और ही होगी। **(स्पष्ट)** नहीं! वैसे वह कुछ कहता-कहता रुक गया। जैसे कोई बात दबा दी गई हो।

नयना : आफिस की बात होगी। **(लघु विराम)** आप कुछ सोचते से लग रहे हैं?

अशोक : नहीं! चाय का मज़ा आ रहा है। **(यति)** नयना?

नयना : **(अस्थिर-सी)** जी!

अशोक : किसी-किसी समय मैं सोचता हूं कि तुम नौकरी छोड़ दो। और कभी-कभी चाहता हूं कि तुम नौकरी करती रहो। तुम्हारा क्या विचार है?

नयना : **(विचलित-सी मन में)** पल भर जो खुशी मिली थी उससे कई गुणा तो मेरे मन पर बोझ डाल दिया, आपने। क्या कह सकती हूं।

अशोक : तुम चुप क्यों हो गई नयना ?

नयना : जैसे आप चाहें। मैं क्या कह सकती हूं।

अशोक : कुछ तो तुम भी सोचती होगी।

नयना : **(अनमनी सी)** अच्छा! मैं ज़रा कीचन में जा रही हूं। आ कर बताऊंगी। **(प्रस्थान)**

अशोक : **(एकालाप)** यह खूबसूरत चेहरों वालीं गारी-टोरी छोरियां होती ही ऐसी हैं। इन पर कोई विश्वास करे तो मरे, विश्वास न करे तो भी मरे। **(नकल)** मैं जरा कीचन जा रही हूं। आ कर बताऊंगी।

[दृश्य परिवर्तन संगीत आफिस का वातावरण]

रहमान : **(विस्मित-सा करतार से)** अरे ओ करतार!

करतार : हूं!

रहमान : वह छोकरी है न। नयना। बार-बार तेरी तरफ देखती और मुस्कुराती है।

करतार : मुझे इससे कुछ नहीं लेना देना। काम करने दे।

रहमान : तू भी तो कनखियों से उसकी तरफ देख कर मुस्कुरा रहा है।

करतार : तेरी अक्ल तो ठिकाने है, रहमान ?

रहमान : **(बनता हुआ)** यों ही पूछ लिया। हमाक़त हो गई। जाने दे। **(मन में)** लेकिन मैं भी छानबीन करके दम लूंगा। देखो, कैसे कैसे ...**(सहसा)** यह ठीक है। तरकीब से काम लेना है। अभी कुछ देर में ही चल कर बात करता हूं। **(कुछ पल बाद नयना के पास)** सुनिये!

नयना : कहिये!

रहमान : आपसे एक 'रिक्वैस्ट' है।

नयना : क्या ?

रहमान : कल एतवार भी है और मेरा जन्मदिन भी। मैं चाहता हूं आप दावत कबूल करें।

नयना : बधाई हो!

रहमान : कहिये! आएंगी न?

नयना : मुझे खेद है रहमान! एक ज़रूरी काम के कारण मैं न आ सकूंगी।

रहमान : नहीं आ सकेंगी?

नयना : नहीं!

रहमान : आप भी आ जाती तो मन खुश हो जाता।

नयना : और कौन-कौन आ रहा है?

रहमान : भाई करतार ने आना है। गरीब आदमी हूं। ज़्यादा लोगों को कहां बुला सकता हूं। (**दुखी**) खैर! जैसी आपकी मरज़ी!

नयना : रहमान!

रहमान : जी!

नयना : मेरे कारण तुम दुखी हो गए। ठीक है। मैं आ जाऊंगी।

रहमान : (**खुश**) जी! बहुत, बहुत शुक्रिया। (**प्रस्थान : मन में**) बहुत चालाक बनते हैं, दोनों। (**करतार से**) अरे ओ करतार!

करतार : क्या है ?

रहमान : यार! कल थोड़ी तकलीफ तो कर दे।

करतार : क्या ?

रहमान : कल मेरा जन्म दिन है। सोचता हूं तुम मेरे हां दावत कबूल कर लो। एतवार भी है।

करतार : तुम्हारा जन्म दिन है ? कल?

रहमान : (**मन में सावधान**) कमबख्त को पूरी सर्विस बुक ज़बानी याद रहती है। (**स्पष्ट- जल्दी-जल्दी**) हां! और नयना भी आ रही है।

करतार : नयना भी? (**बनता है**) उसे क्यों बुला लिया, यार ?

रहमान : मैंने कहा, रौनक हो जाएगी। और क्या? तुम भी क्या घसयारी के पीछे पड़ गए हो। सही बात है कि गधे के सिर पर सींग नहीं होते।

रहमान : गलती हो गई यार। बोलो, आओगे न!

करतार : मज़ा तो किरकिरा हो ही जाएगा। खैर! आ जाऊंगा। तुम्हारे लिए। जन्म दिन की बात है आखिर!

(दृश्य परिवर्तन संगीत चाय के बर्तनों के स्वरों के साथ।)

करतार : भाई! चाय बनाना कोई तुम जैसे कश्मीरी भाइयों से सीखे।

रहमान : मसका न लगाओ यार।

नयना : इसमें मसके की कोई बात नहीं, रहमान भाई। सच पूछो- तो बहुत ही स्वादिष्ट चाय बनी है।

रहमान : पसन्द आई आपको।

करतार : पसन्द क्यों नहीं आएगी, यार! वाह! क्या खूब इलायची, दार चीनी और बादाम डाले हैं। मज़ा आ गया।

रहमान : कश्मीर में हम यही चाय पीते हैं। बहुत से लोग मीठा न डाल कर नमक डालते हैं।

नयना : उसका भी कोई स्वाद होता है?

रहमान : स्वाद तो सबका अपनी-अपनी पसन्द का होता है। नमक वाली चाय हाज़िम होती है। मेदा ठीक रखती है।

करतार : महंगाई के इस दौर में सस्ती थी!

नयना : तब तो बहुत लाभदायक होती है। चाय की चाय औषधि की औषधि!

रहमान : **(जैसे कुछ याद आ गया हो)** माफ करना। मैं अभी आया।

नयना : कहां चले?

रहमान : पड़ोस वालों को एक बहुत ही ज़रूरी पैगाम देना भूल गया। बहू- ू -त ही ज़रूरी है। पांच-सात मिनट लग जाएंगे।

(संगीत की लहर)

करतार : आप कुछ चुप-चुप सी सोच रही हैं ?

नयना : सोचना क्या है? यदि हमें यहां कोई यों देख लेगा तो न जाने क्या-क्या समझने लगे।

करतार : कम से कम वह, यह बिल्कुल नहीं मानेगा कि यह दो व्यक्तियों की दोस्ती है। मित्रता है।

नयना : आपके आने के बारे में सुना तो न जाने क्यों तैयार हो गई।

करतार : मैं भी तो आपके बारे में जानकर ही आया हूं।

नयना : मेरे आने के बारे में ?

करतार : और नहीं तो क्या? रहमान ने मुझे बताया कि नयना जी आ रही हैं- सो मुझ से भी आने के लिये 'हां' निकल गई।

रहमान : **(एक दम हंसते हुए प्रवेश)** वरना इस फटीचर के हां कौन आता। और आप दोनों एक दूसरे के बारे में जान कर आए। इस का मतलब जानते हो?

नयना : रहमान ?

रहमान : बताओ इसका मतलब!

करतार : समझ से काम लो, रहमान!

रहमान : घबराते क्यों हो। रहमान ने सब सुन लिया है। **(मित्रता से)** मैं जानता हूं कि आप दोनों का दिल साफ है। आपकी दोस्ती ऐसी ही है जैसे एक इन्सान की दूसरे के साथ या एक हमसाए की दूसरे हमसाए के साथ। बेगुनाह दोस्ती।

करतार : **(तनिक हंस कर)** तुम बहुत बुरे आदमी निकले।

रहमान : माशा अल्लाह, आदमी तो निकला।

(तीनों के कहकहे।)

[दृश्य परिवर्तन संगीत कार्यालय का वातावरण]

नयना : रैडक्रास वालों की केस-फाइल तो देना, करतार।

करतार : फाइल नम्बर 607-आर-सी/82 देख लो। यहीं इन फाइलों में।

नयना : **(फाइलें पलटती हुई)** यहां तो नहीं है।

करतार : ध्यान से देखो नयना। मिल जाएगी।

नयना : **(फाइलें टटोलती हुई पढ़ती है)** हूं... ऊं... ऽ... 'सैंकशंड अण्डर रूलज़'। यह किसकी है? तुम्हारी?

करतार : हां! कल मैं अपने गांव जा रहा हूं।

नयना : किसलिए ?

करतार : वहां मेरी ज़मीन है। गंदुम कटाई का समय है।

नयना : **(पढ़ती हुई)** 'फिफटीन डेज़'! पंदरह दिन।

करतार : बहुत ज़रूरी है। यदि न गया तो एक दाना नहीं मिलेगा। मार्च में वर्षा का जो लाभ सोचा था- व्यर्थ हो जाएगा।

नयना : कौन-सा गांव है ?

करतार : जीवन पुर। बहुत प्यारा गांव है। छोटा-सा गांव! सरल-सा गांव। यहां से बीस किलो-मीटर दूर।

नयना : तब तो पास ही है।

करतार : चलोगी मेरे गांव ?

नयना : नौकरी भी तो करनी है।

करतार : वह मैं भी तो करता हूं।

नयना : किन्तु घर तो नहीं सम्भालते, तुम।

करतार : (हंस कर) बाज़ आए घर सम्भालने से। हम यों ही भले।

नयना : **(हंसती है फिर सहसा मन में)** मेरा मर्द भी ऐसा है कि बात-बात में संदेह करता है। यह तुम क्या जानो करतार!

रहमान : (प्रवेश) नयना जी! आपको डायरेक्टर साहब याद कर रहे हैं।

नयना : (चौंक कर) ओह! मैं तो भूल ही गई थी। फाइल जल्दी दो करतार। साहिब मांग रहे हैं। **(दोनों की फाइल ढूंढने की मुनमुन)**

करतार : यह लो! यह रही।

नयना : **(जाती हुई) 'थैंक्स' (प्रस्थान)**

रहमान : दोस्ती काफी जम गई है। खुदा खैर करे।

करतार : तुम नादान ही रहे दोस्त!

रहमान : **(हंसता है)**

(आफिस का वातावरण रहमान की हंसी के साथ-साथ फेड आऊट। अंतराल संगीत के साथ आफिस का वातावरण फिर उभरता है।)

नयना : (मन में) कुछ भी ठीक नहीं हो पा रहा। किसी काम में मन नहीं लग रहा आज दो दिन बीत गए करतार को अवकाश पर गए हुए। आफिस का एक-एक पल जैसे खोखला हो गया हो। रह-रह कर एक घरेलू ललक होती है। मेरे लिए वहां भी घुटन के अतिरिक्त कुछ नहीं। जाऊं तो कहां जाऊं? करतार! करतार! करता-ऽर!

नयना का मन : **(आत्मालोचन के स्वर की अनुगूंज)** करतार के लिए तुम इतनी उचाट क्यों होने लगी नयना ? वह तुम्हारा मित्र है। अवकाश पर गया है। आ तो जाएगा।

नयना : यही तो मैं समझ नहीं पा रही। मेरा मन करतार की कमी क्यों महसूस कर रहा है।

नयना का मनः **(आत्मालोचन के स्वर की अनुगूंज)** यह न भूलो नयना! तुम विवाहिता हो। युवती नहीं हो, स्त्री हो। हां, नयना!

नयना : (मन में) मैंने ऐसा किया ही क्या है जो एक विवाहिता को शोभा

नहीं देता। मैं अपने कर्त्तव्य को अच्छी प्रकार समझती हूं। मर्यादा का पालन करना भी जानती हूं। अच्छी तरह जानती हूं।

[आफिस का वातावरण फेड आऊट। नयना के घर का वातावरण]

अशोक : नयना डार्लिंग! आफिस से आ गई तुम?

नयना : **(चौंक कर)** ज-ज-जी!

अशोक : बहुत देर कर आईं! सवा छः बजने लगे!

नयना : अ-आज काम बहुत था।

अशोक : कल परसों भी तुम देर से आईं थी। **(पहलू बदल कर)** आफिस का मामला ठहरा। देर हो ही जाती है। कभी-कभी बस भी नहीं मिलती। देर सवेर का ध्यान रखना हो तो अच्छा है ...नौकरी ही न की जाए। क्यों? **(यति)** मेरा मुंह क्या देख रही हो। जाओ। अपनी साड़ी ठीक करो।

नयना : **(साड़ी ठीक करने की प्रतिक्रिया)** चु...प रहें। इससे अधिक कुछ न कहिएगा। वरना...। **(तेज़ गति से प्रस्थान की पगध्वनी)**

अशोक : **(घुटती हंसी)** व-र-ना...! बहुत खूब नयना देवी जी। बहुत खूब कही, आपने। वर-ना! **(हंसी के बिना)** वैसे भी मैं कौन-सी ज़्यादती कर रहा था आपके साथ? मैं तो हमेशा चुप ही रहा हूं। उस दिन जब आपको करतार के साथ चाय पीते देखा था मैं तब भी चुप ही रहा था। फिर एक अजनबी के घर से आपको उसी करतार के साथ निकलते देखा था - तब भी मैं चुप रहा था। लेकिन अब सोचता हूं कि मुझे चुप नहीं रहना चाहिये था। **(अपने आप से)** मेरा चुप रहना ही मेरा अपराध है। **(सम्बोधन)** और आप हैं कि चुप इनसान को चुप रहने के लिए कह रही हैं। कई दिनों से देख रहा हूं श्रीमती जी, आप के व्यवहार में काफी तबदीली आ चुकी है। मैं मालूम कर चुका हूं, कि इन दिनों करतार, छुट्टी ले कर गांव गया हुआ है। **(झकझोर के साथ)** गांव! हां, गांव! कहीं ... कहीं ऐसी तो नहीं कि नयना देवी जी आफिस के बहाने करतार से मिलने जाया करती हैं। हां, ऐसा भी हो सकता है।

(काल्पनिक लोक का संगीत प्रभाव)

नयना : (ईको में ऊंचे स्वर में दूर से) कर...ता...र...।

करतार : (प्रतीक्षारत उत्सुकता से) न-य-ना...!

नयना : कर...ता...र

करतार : न...य...ना...!

अशोक : (आत्मा अनुगूंज) क्या देख रहे हो अशोक? नयना विश्वासघातिन निकली। वही निकली आखिर ...जो तुम सोचा करते थे? अब क्या सोच रहे हो ? यही कि तुम कितने भाग्यहीन हो। और यह सब नहीं देखा जाता तुम से? लेकिन यह न भूलो, अशोक! कि जीवन जीने के लिए है। साहस करो। जीने का साहस करो। त्याज्य वस्तु को त्याग दो। नयना तुम्हारे लिए नहीं है। वह सराय में रुके हुए उस व्यक्ति की तरह है जिसे एक न एक दिन जाना ही होता है। वह करतार को चाहती है। देखा नहीं? किस प्रकार दोनों एक दूसरे को पुकार रहे हैं।

नयना : (ईको में ऊंचे स्वर में दूर से) कर...ता...र...!

करतार : (प्रतीक्षारत उत्सुकता से) न...य...ना...!

नयना : कर...ता...र...!

करतार : न...य...ना...!

(काल्पनिक लोक से वापिसी का संगीत प्रभाव)

अशोक : (आघात) नहीं...! नहीं नहीं।

अशोक : (नशे में) पंछी काहे होत उदास!

छोड़ न मन की आस पंछी!

(रुआंसा हो उठता है)

काहे होत उदास पंछी

काहे होत उदास।

काहे होत उदा-उदा-उदा-उदास.........

(रुआंसी हिचकियां)

नयना : (प्रवेश) आप आ गये?

अशोक : हां! (यति) नहीं आना था क्या? अपने घर में नहीं आना चाहिये, मुझे।

नयना : कहां गए थे?

अशोक : कहां-कहां गया था क्या इस सब का भी ब्योरा देना पड़ेगा तुम्हें?

नयना : (मौन के बाद) आज फिर से पीने लगे आप?

अशोक : हां...! सोचा! पीना भी एक सपना हो गया है। आज पी क्यों न लूं। अच्छा है न?

नयना : [चुप]

अशोक : क्यों? तुम्हें अच्छा नहीं लगता तो नहीं पियूंगा। क्यों डार्लिंग?

नयना : इससे आपका स्वास्थ्य बिगड़ता है।

अशोक : (हंसकर) हां! तुम ठीक कहती हो। (**गिलास और बोतल फैंक कर**) लो! हमने फिर तौबा कर दी। (यति) अरे रे रे यह क्या शीशे चुनने लगी तुम? कोमल-कोमल हाथों को कांच लग गया तो?

नयना : आपके पांव में भी तो लग सकता है।

अशोक : [हंस कर] बहुत भोली हो तुम नयना! देखती नहीं। हमने जूते पहन रखे हैं।

अशोक : (श्वास) आज मुझे यों लग रहा है डार्लिंग कि जैसे तुम अनारकली हो और मैं शहज़ादा सलीम।

नयना : (मन में) न पीने से पीना ही अच्छा इनका। कम से कम बात तो प्यार से करते हैं।

अशोक : तुमने कुछ नहीं कहा नयना?

नयना : क्या बात है? आज काफी रोमांटिक हैं आप!

अशोक : फर्क सिरफ इतना है नयना डार्लिंग ...कि मैं वह शहज़ादा सलीम हूं जिसे अनारकली ने खुद अपने हाथों...दीवार में चिन दिया हो। (हंसता है)

नयना : यह कैसी बातें करने लगे आप?

अशोक : 'ओह! सॉरी डार्लिंग!' मैंने सचमुच गलत बात कह दी।

नयना : और नहीं तो क्या ?

अशोक : तुम्हें बुरा लगा। चलो, मैं क्षमा मांग लेता हूं। फिर कभी ऐसा नहीं कहूंगा। ठीक है न ?

नयना : (चुप)

अशोक : अच्छा! अब तुम अन्दर जाओ। आराम करो। कितनी देर से यों ही खड़ी हो। जाओ! जाओ आराम करो।

नयना : **(प्रस्थान की पग ध्वनि के दौरान)** यह कैसा परिवर्तन है? एकाएक यह सब हुआ कैसे? यह एकाएक इन्होंने फिर से पीना कैसे शुरू कर दिया? क्यों? आखिर क्यों? **(सहसा)** यह पत्र? देखूं तो कहां से आया है? **(लिफाफा फाड़ कर खोलने के स्वर। हैरान)** यह तो इन्हीं का पत्र है। मेरे नाम! भला, एक ही घर में रहते पत्र क्यों लिखना पड़ा? **(पढ़ने की कुछ पल मुन मुन स्पष्ट स्वर में बदल जाती है)** नैना! मैंने निर्णय ले लिया है कि तुम्हारे और करतार के मध्य दीवार न बनूं। तुम पूरी स्वतंत्रता से, पूरी खुशी से करतार के पास जा सकती हो। मेरी ओर से बधाई। **(बधाई शब्द तक पहुंचते पहुंचते चीख निकल जाती है। और रोती बिलखती अशोक के पास भाग जाती है।)** नहीं...। नहीं...। नहीं। यह सब ठीक नहीं है। यह असम्भव है। ऐसा नहीं हो सकता। यह अन्याय है। मैं नहीं होने दूंगी। मैं ऐसा नहीं होने दूंगी। नहीं... नहीं! नहीं, नहीं।

अशोक : **(हंसता हुआ)** तुम्हें तो खुश होना चाहिए, नयना। मैंने तो तुम्हारी खुशी की बात की है।

नयना : नहीं! **(अशोक की हंसी के साथ-साथ)** यह झूठ है। यह गलत है। इसमें मेरी खुशी नहीं है। मेरी खुशी इसमें बिलकुल नहीं है। मेरी खुशी आपके साथ है। इस घर में मात्र संदेह के वश आपके पत्र लिखने से क्या होता? मैं आपकी हूं। आपकी। आऽप की।

संगीत प्रभाव

अशोक : **(गम्भीर एहसास)** आज तुम नौकरी पर नहीं गई, नयना? साढ़े दस बजने लगे।

नयना : **(आहत)** मैं नहीं जाऊंगीं।

अशोक : क्यों ?

नयना : **(आहत)** मैंने अपना त्यागपत्र भेज दिया है।

अशोक : (हैरान) त्याग-पत्र? इसकी क्या ज़रूरत थी।

नयना : (आहत) बुत ज़रूरत थी! क्यों कि मुझे आपकी ज़रूरत है। आपकी। नहीं चाहिए मुझे नौकरी।

अशोक : **(हक्का बक्का)** नयना!

नयना : (आहत) हां, नहीं चाहिए मुझे नौकरी।

अशोक : (एहसास) आई एम सॉरी नयना। दोष सारा मेरा है। में बेकार तुम पर संदेह करता रहा। अगर रहमान ने मेरी आंखें न खोल दी होती, तो मैंने तुम्हें खो दिया था। चलो! जल्दी तैयार हो जाओ। मैं तुम्हें आफिस छोड़ दूंगा।

नयना : (संतुष्ट) अशोक, अशोक! अशोक!!

(समाप्त)

सुतीक्ष्ण कुमार शर्मा 'आनन्दम'
की कृतियां

हिंदी कृतियां

तिनके और तिनके (हास्य व्यंग्य) सितम्बर
देखतीं आकाश आंखें (कविता संग्रह) दीपावली
हम हैं बालक भारती (बाल कविताएं) दिसम्बर
काम्प-काम्प रहा चक्रबन्धु (पद्य नाटक) अक्तूबर
नौका का इतिहास (पुरस्कृत कविता संग्रह) जनवरी 1
सांझे मंच पर (रंग नाटक) जनवरी 1
एलबेट्रास की हत्या (कालरिज के 'राइम आफ एंशिएंट मेरिनर' का रेडियो नाट्य रूपांतर) जनवरी 1
आखरी पन्ने (पुरस्कृत नाटक संग्रह) जुलाई 19
कमल-पत्र पर डोलता जल-कण (कविता संग्रह) मार्च 198
कि वे बोलें (कविता संग्रह) जून 1991
बाम के झरोखे से (1964 तक की प्रारम्भिक कविताएं) अगस्त 19
ताकन लागे काग (छः नाटक) मार्च 199
समर्पित आलाप (एक लिपि कविता) अप्रैल 19
गीत हो कोई (कविता संग्रह) दिसम्बर 1
सबरस दोहे (दोहा संग्रह) जनवरी 2
सबरस हाइकु (हाइकु संग्रह) जनवरी 2
नहूष (चार नाटक) दिसंबर 2

डोगरी कृतियां

परसे दी खुशबू (नाटक) अगस्त 19
पनछान (पुरस्कृत नाटक 'सच्चा दे सरिस्ते' समेत दो नाटक) अप्रैल
ग़ज़ल : नमें छन्द (अनुसंधान पत्र-1 : सार) मेई 1990
ग़ज़ल : नमें छन्द (अनुसंधान पत्र-2 : सार) दिसंबर 19
लैह्‌रें दे जाल (व्यंगी लघु कत्थां ते क्हानियां) जुलाई 19
ग़ज़ल : नमें छन्द (पुरस्कृत : भाग 1-2 समेत पूरा अनुसंधान) मार्च 1993
सबरंग दोहे (दोहा संग्रह) दिसंबर 19
सबरंग हाइकु (हाइकु संग्रह) सितंबर 2

साक्षर प्रकाशन

402, अम्बफला, जम्मू (तवी) – 180 005

नहुष

(चार नाटक)

